तत्त्वार्थसूत्र—
जैनागमसमन्वय

समन्वयकर्ता

साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर
उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज
(पञ्जाबी)

प्रकाशिका
श्रीमती रत्नदेवी जैन
लुधियाना

द्वितीयावृत्ति ५००] १९४१ [वीर सम्वत् २४६७

FOREWORD

The Upadhyaya, Sri Atma Ram ji is a well known monk of the Sthanakavasi Sect. Ever since his initiation into the order he has devoted himself to a study of Jaina Philosophy and literature. He has done a useful work by translating the following Sutras into Hindi:—

1 The Anuyogadvara.
2 The Avasyaka.
3 The Dasasrutaskandha.
4 The Dasavaikalika.
5 The Uttaradhyayana.

Besides these he compiled from the Sutras an original treatise entitled *Jaina-tattva-Kalika-vikasa* where the original texts have been translated into Hindi and explained fully.

For use in Jain Schools the Upadhyaya compiled a set of readers wherein he has combined sacred and secular instruction.

Upadhyaya Atma Ram Ji is a thorough scholar of Jaina literature not only on the traditional lines, but on the comparative lines also. Some years ago he published a valuable paper in the Hindi monthly "Saraswati" wherein he compared a number of passages from the Jaina Sutras with similar ones found in the Buddhist literature. The present volume i. e., the *Tattoarthasutra-JainagamaS-amanavaya* is another work of this kind. Here, of course, the material compared comes from the Jaina sources only. The *Tattvartha* or the *Tattvarthadhigama Sutra* (also called the *Moksa-Sastra)* is the

earliest extant Jaina work in Sanskrit and is composed in the Sutra style. It is regarded authoritative both by the Digambaras and the Svetambaras. Its author Umasvati (according to the Digambaras, Umasvami) lived about 2,000years ago. This Sutra was one of the most widely and deeply studied works in the past as the number of commentaries on it (about forty) shows. Leaving aside the question whether the *Agamas* are older or later than the *Tattvartha Sutra,* Upadhyaya Atma Ram ji has been able to find out from the *Agamas* passages corresponding to all the individual sutras of the *Tattvartha.* For his comparison he has chosen the Digambara recension of the *Tattvartha*, perhaps to indicate that, so far as the fundamental

principles are concerned, there is not much difference of opinion between the Digambaras and the Svetambaras. The passages quoted from the *Agamas* often have a striking similarity with the sutras of the *Tattvartha* both in words and meaning.

It hardly needs to be added that the present work of Upadhyaya Atma Ram ji is a highly valuable apparatus for Research connected with Jaina philosophy and literature, and as such it will be fully appreciated by scholars working in that direction.

Oriental College,
LAHORE.

BANARSI DAS JAIN

प्रस्तावना

इस अनादि संसार-चक्र में परिभ्रमण करते हुए आत्मा को मनुष्य जन्म और आर्यत्व भाव की प्राप्ति हो जाने पर भी श्रुतिधर्म की प्राप्ति दुर्लभ ही है। इस के अतिरिक्त सम्यग्दर्शन भी सम्यक् श्रुत पर ही निर्भर है। अतएव उक्त सर्व साधन मिल जाने पर भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिये सम्यक्श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि उक्त प्राप्ति के लिये अध्ययन करने योग्य कौन २ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनको सम्यक्श्रुत का प्रतिपादक कहा जाए। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि जिन ग्रंथों के प्रणेता सर्वज्ञ अथवा सर्वज्ञसदृश महानुभाव हैं वे आगम ही

अध्ययन करने योग्य हैं। क्योंकि जिसका वक्ता आप्त होता है वही आगम सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण होता है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति क्षायिक, क्षायोपशमिक अथवा औपशमिक भाव पर निर्भर है तथापि सम्यक् श्रुत को उसकी उत्पत्ति में कारण माना गया है। अतएव सिद्ध हुआ कि सम्यक् श्रुत का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

श्वेताम्बर—स्थानकवासी सम्प्रदाय के अनुसार सम्यक्श्रुत का प्रतिपादन करने वाले ३२ आगम ही प्रमाणकोटि में माने जाते हैं। वे निम्न प्रकार हैं:—

११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ४ मूल, ४ छेद और ३२वां आवश्यकसूत्र।

इनके अतिरिक्त इन आगमों के आधार से एवं इनके अविरुद्ध बने हुए ग्रन्थों को न मानने में भी उक्त सम्प्रदाय आग्रहशील नहीं है।

उक्त शास्त्रों के विषय में विशेष परिचय प्राप्त करने के लिये इस विषय के जैन ऐतिहासिक ग्रंथ देखने चाहियें।

अनेक महानुभावों ने उक्त आगमों के आधार पर अनेक प्रकार के ग्रंथों की रचना की है, जिनका अध्ययन जैन समाज में अत्यन्त आदर और पूज्य भाव से किया जा रहा है। इन लेखकों में से भी जिन महानुभावों ने आगमों में से आवश्यक विषयों का संग्रह कर जनता का परमोपकार किया है उन को अत्यन्त पूज्य दृष्टि से देखा जाता है और उनके ग्रन्थ जैन समाज में अत्यन्त आदरणीय समझे जाते हैं। वर्तमान ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र (मोक्ष शास्त्र) की गणना उन्हीं आदरणीय ग्रंथों में है। इस ग्रन्थ में इस के रचयिता ने आगमों में से आवश्यक विषयों का संग्रह कर जनता का परमोपकार किया है। इसमें तत्त्वों का संग्रह समयोपयोगी तथा सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है

इसके कर्ता ने आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी से विषयों का संग्रह कर उनको संस्कृत भाषा के सूत्रों में प्रकट किया है। सूत्रकार ने अपने ग्रंथ में जैन तत्त्वों का दिग्दर्शन विद्वानों के भावानुसार संस्कृत भाषा में किया। प्रायः विद्वानों का मत है कि तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता का समय विक्रम की प्रथम शताब्दी है। संस्कृत भाषा उस समय विकसित हो रही थी। जिस प्रकार इस ग्रंथ के कर्ता ने इस संग्रह में अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है उसी प्रकार अनेक विद्वानों ने इसके ऊपर भिन्न२ टीकाओं की रचना करके जैन तत्त्वों का महत्व प्रगट किया है। और इस ग्रंथ को आगम के समान ही प्रमाण कोटि में स्थान देकर इसके महत्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया है।

पूज्यपाद उमास्वातिजी महाराज ने जैन तत्त्वों को आगमों से संग्रह कर जैन और जैनेतर जनता का बड़ा भारी उपकार किया है।

इस सूत्र को संग्रह ही माना गया है । यह ग्रन्थ सूत्रकार की काल्पनिक रचना नहीं है । कारण कि इस ग्रन्थ में जिन२ विषयों का संग्रह किया गया है, उन सब का आगमों में स्पष्ट रूप से वर्णन है । अतः स्वाध्याय प्रेमियों को योग्य है कि वे भक्ति और श्रद्धापूर्वक जैन आगम तथा तत्त्वार्थसूत्र दोनों का ही स्वाध्याय करें, जिससे भेद भाव मिट कर जैन समाज उन्नति के शिखर पर पहुँच जावे ।

अब रहा यह प्रश्न कि क्या यह ग्रन्थ वास्तव में संग्रह ग्रन्थ है ? सो आगमों का स्वाध्याय करने वाले तो इस ग्रंथ को आगमों से संग्रह किया हुआ मानते ही हैं । इसके अतिरिक्त आचार्यवर्य हेमचन्द्रसूरि ने अपने बनाये हुए 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' नाम के व्याकरण में पूज्यपाद उमास्वाति जी महाराज को संग्रह कर्ताओं में उत्कृष्ट संग्रहकर्ता माना है । जैसा कि उन्होंने उक्त ग्रन्थ की स्वोपज्ञवृत्ति में कहा है ।

उत्कृष्टोऽनूपेन २ । २ । ३६

उत्कृष्टार्थादनूपाभ्यां युक्ताद्द्वितीया स्यात् । अनु-सिद्धसेनं कवयः । उपोमास्वातिं संग्रहीतारः ॥३६॥

स्वोपज्ञ बृहद्वृत्ति में भी उक्त आचार्यवर्य ने उक्त सूत्र की व्याख्या में कहा है :—

"उत्कृष्टेऽर्थे वर्तमानात् अनूपाभ्यां युक्ताद् गौणा-न्नाम्नो द्वितीया भवति । अनुसिद्धसेनं कवयः । अनु-मल्लवादिनं तार्किकाः । उपोमास्वातिं संग्रहीतारः । उप-जिनभद्रक्षमाश्रमणं व्याख्यातारः तस्मादन्ये हीना इत्यर्थः ॥ ३६ ॥"

आचार्य हेमचन्द्र का समय विक्रम की १२ वीं शताब्दी सभी विद्वानों को मान्य है । आपके कथन से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि पूज्यपाद उमा-स्वाति संग्रह करने वालों में सबसे बढ़कर संग्रह करने वाले माने गये हैं । आगमों से संग्रह किये जाने से यह ग्रन्थ भी संग्रह ग्रंथ माना गया है ।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि भगवान् उमास्वाति ने संग्रह किस रूप में किया है ? इसका उत्तर यह है कि इस ग्रन्थ में दो प्रकार से संग्रह किया गया है। कहीं पर तो शब्दशः संग्रह है अर्थात् आगम के शब्दों को संस्कृत रूप दे दिया गया है और कहीं पर अर्थ संग्रह है अर्थात् आगम के अर्थ को लक्ष्य में रखकर सूत्र की रचना की गई है। कहीं २ पर आगम में आये हुए विस्तृत विषयों को संक्षेप रूप से वर्णन किया गया है।

आगमों से किस प्रकार इस शास्त्र का उद्धार किया गया है ? इस विषय को स्पष्ट करने के लिये ही वर्तमान ग्रन्थ विद्वत्समाज के सन्मुख रखा जा रहा है। इसका यह भी उद्देश्य है कि विद्वान् लोग आगमों के स्वाध्याय का लाभ उठा सकें।

इस ग्रंथ में सूत्रों का आगमों से समन्वय किया गया है। इसमें पहले तत्त्वार्थसूत्र का सूत्र, दिया है

फिर आगम प्रमाण, जिससे पाठकवर्ग आगम और सूत्र के शब्द और अर्थों का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त कर सकें।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस ग्रन्थ में दिये हुए आगम प्रमाण आगमोद्धार समिति द्वारा मुद्रित हुए आगमों से दिये गये हैं।

यह ग्रन्थ इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वाध्याय करने योग्य है। वास्तव में यह तत्त्वार्थसूत्र आगम ग्रन्थों की कुञ्जी है। अतः जिन २ विद्यालयों, हाईस्कूलों और कालेजों में तत्त्वार्थसूत्र पाठ्यक्रम से नियत किया हुआ है उन २ संस्थाओं के अध्यक्षों को योग्य है कि वह सूत्रों के साथ ही साथ बालकों को आगम के समन्वय पाठों का भी अध्ययन करावें, जिससे उन बालकों को आगमों का भी भली भांति ज्ञान हो जावे।

कुछ लोग यह शंका भी कर सकते हैं कि 'संभव

है कि श्वेताम्बर आगमों में तत्त्वार्थसूत्र के इन सूत्रों की ही व्याख्या की गई हो। इस विषय में यह बात स्मरण रखने की है कि जैन इतिहास के अन्वेषण से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि आगम ग्रन्थों का अस्तित्व उमास्वाति जी महाराज से भी पहले था इसके अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र और जैन आगमों का अध्ययन करने से यह स्वतः ही प्रगट हो जावेगा कि कौन किस का अनुकरण है। अतएव सिद्ध हुआ है कि आगमों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, जिस से सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की प्राप्ति होने पर निर्वाणपद की प्राप्ति हो सके। अन्त में आगमाभ्यासी सज्जनों से अनुरोध है कि वे कहीं पर यदि कोई त्रुटि देखें या किसी स्थल में आगमपाठों के साथ किये गये समन्वय में कुछ न्यूनता देखें और उन की दृष्टि में कोई ऐसा आगम पाठ हो जिससे कि उस कमी की पूर्ति हो सके तो वे

महानुभाव हमें अवश्य सूचित करें ताकि इस ग्रन्थ की आगामी आवृत्ति में उसका प्रबन्ध किया जावे। आशा है सज्जन पुरुष हमारे इस कथन पर अवश्य ध्यान देंगे।

श्री श्री श्री १००८ आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद मोतीराम जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १००८ गणावच्छेदक तथा स्थविरपदविभूषित श्री गणपतिराय जी महाराज, उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ गणावच्छेदक श्री जयरामदास जी महाराज और उनके शिष्य श्री श्री श्री १०८ प्रवर्त्तकपदविभूषित श्री शालिगराम जी महाराज की ही कृपा से उनका शिष्य मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य को पूर्ण कर सका हूँ।

गुरुचरणरजः सेवी
जैनमुनि उपाध्याय आत्माराम

आवश्यक सूचना

स्वाध्याय के समान दूसरा कोई तप नहीं

स्वाध्याय सर्व दुःखों से विमुक्त करने वाला है

[सज्झाय सव्व दुक्ख विमोक्खणे]

प्रिय विज्ञ पुरुषो! आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हमने, साहित्यरत्न जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय मुनि श्री आत्माराम जी महाराज संगृहीत तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय में से केवल मूल-सूत्रों और मूल आगम-पाठों को, उनसे ही पुनः सम्पादित कराकर, स्वाध्यायप्रेमी महानुभावों के लिये, एक सुन्दर गुटका के आकार में प्रकाशित कर दिया है। इस स्वाध्याय गुटका में पूर्व प्रकाशित

बृहद् ग्रन्थ की अपेक्षा, उपाध्याय जी महाराज ने हमारी प्रार्थना पर इतनी और विशेषता कर दी है कि पहले संस्करण में, जहां आगमों के कहीं उपयोगी मात्र आंशिक पाठ उद्धृत किये थे, अब वहां इस गुटके में उनका सम्पूर्ण पाठ दे दिया है तथा कई एक आवश्यक पाठ अधिक बढ़ा दिये हैं, ताकि स्वाध्याय-प्रेमियों को आगम-पाठों के अधिक परामर्श का पुण्य अवसर प्राप्त हो सके। इसलिये सर्वज्ञ वीतराग प्रणीत धर्म में अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक महानुभाव को, यह लघु पुस्तकरत्न, प्रतिदिन के स्वाध्याय के लिये, अवश्य अपने पास रखना चाहिये।

गुजरमल प्यारेलाल जैन
चौड़ा बाजार,
लुधियाना।

त्रिविध धर्म

तिविहे भगवता धम्मे पण्णत्ता, तंजहा—सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति जया सुज्झातियं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते सुतक्खाते णं भगवता धम्मे पण्णत्ते ।

टीका—'तिविहे' इत्यादि स्पष्टं, केवलं भगवता महावीरेणेत्येवं जगाद सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रतीति, सुष्ठु-कालविनयाराधनेनाधीतं—गुरुसकाशात् सूत्रतः पठितं स्वधीतं, तथा सुष्ठ-वि-

धिना तत एव व्याख्यानेनार्थतः श्रुत्वा ध्यातम्—अनुप्रेक्षितं, श्रुतमिति गम्यं सुध्यातम्, अनुप्रेक्षणाभावे तत्त्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयोः प्रायोऽकृतार्थत्वादिति, अनेन भेदद्वयेन श्रुतधर्म्म उक्तः, तथा सुष्ठु-इह शोकाद्याशंसारहितत्वेन तपस्यितं—तपस्यनुष्ठानं, सुतपस्यितमिति च चारित्रधर्म्म उक्त इति, त्रयाणामप्येषामुत्तरोत्तरतोऽविनाभावं दर्शयति—'जया' इत्यादि व्यक्तं, परं निर्दोषाध्ययनं विना श्रुतार्थाप्रतीतेः सुध्यातं न भवति, तदभावे ज्ञानविकलतया सुतपस्यितं न भवतीति भावः, यदेतत्—स्वधीतादित्रयं भगवता वर्द्धमानस्वामिना धर्म्मः प्रज्ञप्तः 'से'त्ति स व्याख्यातः—सुष्ठूक्तः सम्यग्ज्ञानक्रियारूपत्वात्, तयोश्चैकान्तिकात्यन्तिकसुखावन्ध्योपायत्वेन निरुपचरितधर्म्मत्वात्, सुगतिधारणाद्धि धर्म्म इति उक्तं च—

'नाणं पयासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो।
तिण्हंपि समाओगे मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥'
ज्ञानं प्रकाशकं शोधकं तपः संयमस्तु गुप्तिकरः।
त्रयाणामपि समायोगो मोक्षो जिनशासने भणितः॥
णमितिवाक्यालंकारे। सुतपस्यितमितिचारित्रयुक्तं।

स्वाध्याय का महाफल

सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥

उत्तराध्ययन सू० अध्य० २६

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥

उत्तरा० अ० २६

सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे

उत्तरा० अ० २६ गा० १०

सज्झायं च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं--

उत्तरा० अ० २६ गा० ३७

स्वाध्याय महातप है

बारसविहम्मिवि तवे,
अब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
नवि अत्थि नवि य होही,
सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ १२६ ॥

धन्यवाद्

इस पुस्तक के संशोधन कार्य में पंडित मुनि श्री हेमचन्द्रजी महाराज ने विशेष भाग लिया है। एतदर्थ पण्डितजी महाराज का धन्यवाद् किया जाता है।

निवेदक—

गुजरमल जैन

सम्मति पत्र

सुप्रसिद्ध श्रीमान् पं० हंसराज जी शास्त्री

प्रस्तुत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय स्वनामधन्य उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी की प्रोज्ज्वल प्रतिभा तथा उनके दीर्घकालीन सतत जैनागमाभ्यास का सुचारु फल है। आप श्वेताम्बर जैनधर्म की स्थानकवासी सम्प्रदाय में एक अद्वितीय विद्वान् हैं। यद्यपि आज तक आपने जैनधर्म से संबन्ध रखने वाली कई एक मौलिक पुस्तकें लिखीं तथा कई एक जैन आगमों का सुबोध हिन्दी भाषा में अनुवाद भी किया तथापि प्रस्तुत ग्रंथ के संकलन द्वारा आपने साहित्य-प्रेमी जैन तथा जैनेतर सभ्य संसार की जो अमूल्य सेवा की है उसके लिये आपको जितना भी धन्यवाद दिया जाय उतना ही कम है।

आपका यह संग्रह तत्वज्ञान के जिज्ञासुओं की अभिलाषा-

पूर्ति के लिये तो पर्याप्त है ही, परन्तु भारतीय तत्त्वज्ञान की ऐतिहासिक दृष्टि से गवेषणा करने वाले विद्वानों के लिये भी यह बड़े महत्व की वस्तु है।

जैनतत्वज्ञान के संस्कृत वाङ्मय में तत्वार्थसूत्र का स्थान सबसे ऊंचा है। जैन तत्व ज्ञान विषयक संस्कृत भाषा का यह पहला ही ग्रन्थ है। जनधर्म के प्रत्येक सम्प्रदायका इस के लिये बहुमान है। यही कारण है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर आम्नाय के सभी विद्वानों ने, अपनी २ योग्यता के अनुसार इस पर अनेक भाष्य वार्त्तिक और विशद टीकाएँ लिखकर अपने स्वत्व एवं श्रद्धा का परिचय दिया है।

तत्वार्थसूत्र के प्रणेता वाचकवर्य उमास्वाति भी अपनी कक्षा के एक ही विद्वान् हुए हैं। जैन विद्वानों में तत्त्वज्ञान सम्बन्धी संस्कृत रचना में सबसे अग्रस्थान इन्हीं को ही प्राप्त हुआ है। इन्होंने अपनी उक्त रचना में आगमों में रहे हुए समग्र जैनतत्त्वज्ञान को प्राजल संस्कृत भाषा में जिस खूबी से संग्रहीत किया है वह उनके प्रौढ़ पाण्डित्य, जैनागम

विषयिणी उनकी गम्भीरगवेषणा और लोकोत्तर प्रतिभा चमत्कार के लिये ही आभारी है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में तत्त्वार्थसूत्रान्तर्गत सूत्रों की रचना जिन२ आगम-पाठों के आधार पर की गई है उन सभी आगम-पाठों का उपयोगी अंश उन२ सूत्रों के नीचे उद्धृत कर दिया गया है। कहीं २ पर तो तत्त्वार्थ के मूल सूत्र और आगे के मूलपाठ म अक्षरशः समानता देखने में आती है। केवल भाषा के उच्चारणमात्र में ही अन्तर है तथा शब्दशः और भावश साम्य तो प्रायः है ही। इससे वाचकउमास्वातिजी की उक्त रचना का मूल जैनागमों के साथ कितना गहरा सम्बन्ध है इस बात के निर्णय के लिये किसी प्रमाणान्तर के ढूंढने की आवश्यकता नहीं रहती। मुनिजी के इस समन्वय रूप संकलन को देखकर मेरी तो यह दृढ़ धारणा हो गई है कि तत्वार्थसूत्रों की आधारशिला निस्सन्देह प्राचीन श्वेताम्बर परम्परा में उपलब्ध जैनागम ही है।

मेरे विचार में तत्वार्थ का यह आगमसमन्वयसाम्प्रदायिक

व्यामोह के कारण अन्धकार में रहे हुए बहुत से विवादास्पद उपयोगी विषयों की गुत्थी को सुलझानेमें भी सफल सिद्ध होगा। एवं तत्त्वार्थसूत्र पर विशिष्ट श्रद्धा रखने वाले विद्वानों की उसके (तत्त्वार्थसूत्र के) मूल स्रोतरूप जैनागमों की तरफ़ अभिरुचि बढ़ने की भी इससे पूर्ण आशा है। मेरी दृष्टि में तत्त्वार्थसूत्र ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो जैनधर्म की सभी शाखाओं को बिना किसी हिचकिचाहट के मान्य हो सकता है। इसलिये इस अमूल्य पुस्तक का सुचारु रूप से सम्पादन कर के उसका प्रचार करना चाहिये।

अन्त में मुनि जी के इस उपयोगी और सुचारु समन्वय का अभिनन्दन करता हुआ मैं उनसे साग्रह प्रार्थना करता हूँ कि जिस प्रकार उन्होंने इस कार्य में सब से प्रथम श्रेय प्राप्त किया है उसी प्रकार वे तत्त्वार्थ के सांगोपांग सम्पादन में भी सबसे अग्रसर होने का स्तुत्य प्रयास करें।

PROF. DR. M. WINTERNITZ
XIX, CECHOVA 15,
Prague, Czechoslovakia.
October 26th 1936.

THE SECRETARY,
OFFICE OF JAIN BARADARI,
RAWALPINDI CITY,
India/Punjab.

Dear sir,

I am greatly obliged to you sending me a copy of the Tattvarth-Sutra-Jainagamasamanvaya edited by the Upadhyaya Sri Atma Ram. This famous manual of Jaina Philosophy and ethics by the great Umasvati, in its beautiful new garb will certainly attract many readers who wish to be introduced into the Jainagama.

Yours Faithfully,
M. WINTERNITZ.

WORLD CONFERENCE
For
International Peace Through Religion.
(Formerly Universal Religious
Peace Conference.)
"ECCLEPAX, NEW YORK."
October, 28, 1936.

KEVRA MALL JAIN, SECRETARY
JAIN BARADARI,
Rawalpindi City,
INDIA, PUNJAB.

Dear Sir,

Thank you very much for the book of Tattavartha Sutra, edited by Uphadhaya Atma Ram Ji, Maharaj, which was received a few days ago. We greatly appreciate this courtesy and have placed the book in our library.

Cordially Yours
HENRY A. ATKINSON,
GENERAL SECRETARY.

HAMBURGIFCHE UNIVERFITAT
Senior Fur Kultur Und
CEFCHICHTE INDIENS.

HAMBURG, 9TH NOVEMBER, 1936.

MR. KEVRA MALL JAIN,
Secretary, Jain Baradari,
RAWALPINDI CITY.

Dear Mr. Jain,

I duly received a copy of the Tattavartha Sutra edited by Upadhyaya Shri Atmaram Ji and want to express my best thanks for the same which please convey to the Upadhyaya Maharaj. "His book is not only excellenty printed and can thus serve as a model volume to most printers of your country, but above all shows a great learning and intimate knowledge of the Agamas and is worth of being studied by all those who want to go back to the sources of Jain-

ism. For there cannot be any doubt that Umasvati based his Sutras upon the prakrit texts. The fact that these, though belonging to the Svetambaras, have been selected to illustrate the Digambara recension of the Tattvartha, seems most suitable to promote the harmony between both those creeds."

With best wishes,

I am

Yours Sincerely,
Dr. W. Schubring,
PROFESSOR.

फर्ग्युसन व विलिंग्डन कॉलिज त्रैमासिक पत्रिका

Tattavartha-Sutra. Jainagamasamanvayah Edited by Upadhyaya Jain Muni Atma-

ramaji; published by Chandrapatiji Suputri (daughter) of Lala Sher Sinhji Jain Rohtak; Feb 1936.

Tattvartha Sutra or Tattvarthadhigama Sutra is a very important manual in Sanskrit on Jain philosophy composed in Sutra style by the well-known Jain writer Umasvati. The authoritativeness of the manual is recognised by both the seots, the Svetambaras as well as the Digambaras, although the versions recognised by each of these sects are not without variations in the total number of Sutras as well as in the readings of individual Sutras, Similarly, there seems to be a difference of opinion regarding the authorship of the Bhashya on the Sutras

The special and the most attractive and useful feature of this edition is that the Editor has added after each Sutra the original passages in Ardhamagadhi Prakrit from the Jain Sacred Works— the passages which according to the editor formed as it were the basis for the Sutras composed by Umasvati. The editor has taken care to give references to the editions of the agama works published by "Agamoddhra Samiti". Those who have the experience of editing works which require passages to be traced to the original sources can very well understand and appreciate not only the vast erudition of the learned editor but also the patient and laborious task which the editor must have willingly sub-

mitted himself to. The editor has also given in an appendix a comparative statement of the Sutras admitted by the Digambaras as well as the Svetambaras.

The present edition is printed in a very clear type and is very good, handy, pocket size edition with attractive binding and we have great pleasure in recommending it to students of Jainism. We have no doubt that it will be specially welcomed by all students of Jain Philosophy who desire to go to the original sources.

P. V. BAPAT.

पं० सुखलालजी, प्रो० हिन्दू युनिवर्सिटी, बनारस

आपका तत्त्वार्थ विषयक गुटका मिला, तदर्थ कृतज्ञ हूं। इसकी बाह्य रचना आकर्षक है, पर मैं तो इसके पीछे तो आपका आन्तरिक स्वरूप विषयक प्रयत्न है, उसका विशेष आदर करता हूं। क्योंकि इस प्रयतन से तत्त्वार्थ के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अभ्यासियों को बहुत कुछ मदद मिलेगी।

आपका यह समन्वय मेरे लिए बड़ा ही सन्तोषप्रद है। जिस एक परिशिष्ट में समग्र आगमों और तत्त्वार्थ सूत्रों का समन्वय तोलन करने का स्वप्न चिरकाल से था, वह वस्तु विना प्रयत्न से अन्यसाधित सामने देखकर भला किसे आनन्द न होगा? अतएव मेरी विशाल और माध्यमिक योजना के एक अंश के पूरक रूप से आपके प्रयत्न का सविशेष आदर करना मेरे लिए तो स्वभाव से ही प्राप्त है।

पं० बेचरदास जी दोशी, भू० पू० प्रो० गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद)

आगमों के मूल में तत्वार्थसूत्र सम्बन्धी जो सामग्री पाई, वह सब इस संग्रह में संगृहीत कर दी है। प्राय: अनेक स्थानों में तो तत्वार्थ के मूल सूत्रों और आगमों के मूल पाठ के बीच शब्दशः और अर्थशः साम्य दृष्टिगोचर होता है।……… तुलनात्मक दृष्टि से अभ्यास करने वालों के लिए तो यह संग्रह खास तौर पर उपयोगी सिद्ध होगा।…आगम स्वाध्यायी समन्वयकार श्रीमान् उपाध्याय आत्मारामजी मुनिवर के हृदय को जहां तक मैं समझ सका हूँ, वहां तक मुझ पर उनके समदृष्टि गुण की ही अधिकाधिक छाप है। और इसी दृष्टि से मैं उनके इस संग्रह का प्रयोजन धार्मिक समभाव को उत्पन्न करना एवं अधिकाधिक पुष्ट करना ही समझता हूँ, जो मेरे लिए तो सोलहों आने सन्तोषकारक है।

———

जैन इतिहासिक के प्रखर अभ्यासी विद्वान् पं० नाथूराम जी प्रेमी, बम्बई

यह एक बिल्कुल नई चीज है। तत्वार्थ सूत्र जैनागमों पर से किस प्रकार संगृहीत हुआ है, यह दृष्टि इस से प्राप्त होगी और जैन साहित्य के विकास क्रम को समझने के लिए यह बहुत उपयोगी होगा.........।

कविरत्न उपाध्याय जैन मुनि श्री अमरचन्द्रजी

आपकी इस शोध ने भारतीय साहित्य में जैनागमों का मस्तक ऊंचा कर दिया है। तत्त्वार्थ सूत्र पर आज के इतिहास में इस प्रकार का तुलनात्मक प्रयत्न कभी नहीं हुआ। सुविस्तृत आगम साहित्य में से प्रत्येक सूत्र का उद्गम स्रोत ढूंढ निकालना, वस्तुतः आपका ही काम है। आपकी यह अमर कृति युग युग चिरञ्जीवी रहे ....।

सुप्रसिद्ध जैन विद्वान् मुनि श्री विद्याविजयजी

तत्त्वार्थ सूत्र पर क्या अभिप्राय लिखूं ? ऐसे सर्वमान्य तात्विक ग्रन्थ को जिस सुन्दरता के साथ निकाला है, उसको देखकर हर किसी को प्रसन्नता हुए बिना नहीं रह सकती। खास कर प्रत्येक सूत्र का, आगमों के पाठों के साथ जो समन्वय किया गया है, वह सुवर्ण में सुगन्ध के समान है।

शतावधानी पं० श्री सौभाग्यचन्द्र जी, 'सन्तबाल'

मुझे कहना पड़ेगा कि यह प्रयत्न अत्यन्त सुन्दर है और नूतन है। साहित्यिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से आज जैन साहित्य की खोज जो पाश्चात्य एवं पौर्वात्य विद्वान कर रहे हैं, उनको इस कृति से बहुत सहायता मिलेगी। अतएव जैन इतिहास में यह कृति अमर आधार रूप है।........

जैनशास्त्राचार्य आशुकवि पं०श्री घासीलालजी महाराज

आपका सर्वाङ्ग सुन्दर तत्वार्थ समन्वय नामक ग्रन्थरत्न देखकर अतीव आनन्द प्राप्त हुआ। आगम साहित्य के अथाह समुद्र का आपने बुद्धि रूप मेरुदण्ड से मथन कर यह ग्रन्थरत्न आपने निकाला है। प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के अध्ययन, मनन, एवं तदनुकूल आचरण तथा प्रचार करने से जैनशासन की अतीव उत्कृष्ट प्रभावना होगी ………।

बाबू कीर्तिप्रसादजी जैन भू० पू० अधिष्ठाता जैन गुरुकुल गुजरानवाला (पंजाब)

आपने तत्वार्थ सूत्र के सब सूत्रों के मूल स्थान खूब ढूंढ निकाले हैं। आपका परिश्रम अतीव सराहनीय है। दिगम्बर और श्वेताम्बर मान्यताऽनुसार जो सूत्रों में न्यूनाधिकता है, उसको भी बड़ी खूबी के साथ अन्त में दिखा दिया है। महाराज श्री की आगमसम्बन्धी जानकारी का यह एक अच्छा नमूना है।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८	६	उद्द०	उद्दे०
६	१४	चरित्ताराहण	चरित्ताराहणा
११	५	सू०	सू० ८
,,	१२	मणं०	णं०
,,	१३	श०	श० ८
१६	१५	इयि	इय
१७	५	अत्थ	अत्थु
१८	२	पव्विआ	पुव्विआ
२०	७	२	६
,,	११	७	७१
,,	१३	सपा	समा
,,	१५	खधे	खंधे
२१	८	दीवणेसु	दीवगेसु
,,	१५	त	तं
२२	४	णाण	णाणं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
,,	५	गणा	गुणा
२४	१५	असखि	असंखि
२५	५	निंग्गोए	निग्गोए
,,	१४	खओवसम	खओवसमे
३६	४	लद्धा	लद्धी
४४	१०	गवेसगा	गवेसणा
,,	१२	,,	,,
४७	४	बितए	बितिए
६१	१३	अंतोवट्ठा	अंतोवट्टा
६२	८	अतिखहा	अतिखुहा
६३	३	पढविं	पुढविं
६८	१२	रुप्पिणाम	रुप्पिणामं
७५	११	पंचयएगूण	पंचय एगूण
७६	५	गण	गूण
८७	१	दसहा उभव	दसहा उभव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८८	१	अच्चत्ता	अच्चुत्ता
८९	१२	आणाइ	आणाइं
१००	६	६७	१७
१०१	३	केवज्य	केवइयं
,,	१५	विमणाइं	विमाणाइं
१०२	,,	३३८	३३
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१०७	८	सणकुमारे	सणंकुमारे
११५	१४	१४	४१
११८	३	संजत्ते	संजुत्ते
१३२	५	खड्का	खुड्का
,,	१५	जंतना	जतूना
१३३	,,	स्थानाभ्यमनयर्वा	स्थानाभ्यामनयोर्वा
१३६	८	२५	२४
१४२	६	कम्प	कम्पा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१३	ज्जवयाए	ज्जुययाए
१५६	६	समणे	समणो
१६०	१३	पोसहा	पोसहो
१६२	८	उच्चयं	दुच्चयं
१८१	१	असर	असरणा
१८६	५	वित्त	विवित्त
१६२	१	स ज्झाए	सज्झाए
,,	११	अन्तमुहुत्तं	अंतोमुहुत्तं
२०३	,,	लबु	लाबु
२०४	१६	खल	खलु
२०७	१	संख्या	संखा
२११	११	निदश्य	निर्देश्य
२१२	१०	उववाइअ	उववाइअं
२२७	८	ओरलिय	ओरालिय
२२८	१५	अणादव्वेणं	अणादव्वेर्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२३१	५	२५	२४
२४३	५	वेयरणत्ति	वेयरणित्ति
२४७	१४	४०	४
२४६	१६	दरिण	दुरिण
२५३	५	ठाणंग	ठाणांग
२५८	६	एयं	रायं
२५६	०	५६	२५६
,,	१०	मरणाराणामणुराणुइं	मरणुरणामरणुराणाइं
२६३	१४	अ०	अ० ७

परिशिष्ट नं० ३ का शुद्धि पत्र

पृष्ठ	दि० सू० नं०	अशुद्धि	शुद्धि
२०	४०	ऽयेकयाग	ऽयेकयोग

पृष्ठ	श्वे० सू० नं०	अशुद्धि	शुद्धि
२०	४२	तऽये	ततृऽये

धन्यवाद

इस तत्त्वार्थसूत्र जैनागम समन्वय की द्वितीयावृत्ति को श्रीमती रत्नदेवी जी (धर्मपत्नी स्वर्गीय लाला लब्भूराम सर्राफ फर्म लाला तोतामल तिलकराम जैन सर्राफ लुधियाना) अपने स्वर्गीय पतिजी की स्मृति में निज व्यय से छपवा कर प्रकाशित कर रही हैं।

प्रत्येक महानुभाव को इनका अनुकरण करना चाहिये।

निवेदिका—

देवकीदेवी जैन

मुख्याध्यापिका

जैन गर्ल्स स्कूल

लुधियाना।

स्वर्गीय ला० लब्भूरामजी सर्राफ

आपकी धर्मपत्नी ने आपकी पवित्र स्मृति में
यह पुस्तक प्रकाशित की है।

तत्त्वार्थसूत्र-
जैनागमसमन्वयः ।

प्रथमोऽध्यायः ।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि* मोक्ष-मार्गः ॥१॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विना न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥

उत्त० अ० २८ गा० ३०

***सम्मदंसणे** दुविहे पगणत्ते । तं जहा—णिसग्गसम्म-दंसणेचेव अभिगमसम्मदंसणे चेव । णिसग्गसम्मदंसणे दुविहे पगणत्ते । तं जहा—पडिवाई चेव अपडिवाई चेव । अभिगम सम्मदंसणे दुविहे पगणत्ते । तं जहा—पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७०

तिविहे सम्मे पएणत्ते । तं जहा—नाणसम्मं, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे ।

स्था० स्थान ३ उद्देश ४ सू० १६४

दुविहे णाणे पएणत्ते । तं जहा—पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे णाणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २ । केवलणाणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—भवत्थकेवलणाणे चेव सिद्धकेवलणाणे चेव ३ । भवत्थकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ४ । सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ५ । अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव ६ । एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि-७-८। सिद्धकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा—अणंतरसिद्धकेवलणाणे चेव परंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ९ । अणंतरसिद्ध-

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, णाणदंसणलक्खणं ॥

केवलणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-एक्कार्णंतरसिद्धकेवलणाणे अणेक्कार्णंतरसिद्धकेवलणाणे चेव १० । परंपरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा–एक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणे चेव ११ । णोकेवलणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा–ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव १२ । ओहिणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा–भवपच्चइए चेव खओवसमिए चेव १३। दोएहं भवपच्चइए पएणत्ते। तं जहा-देवाणं चेव नेरइयाणं चेव १४ । दोएहं खओवसमिए पएणत्ते तं जहा–मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव १५। मणपज्जवणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा–उज्जुमति चेव विउलमति चेव १६ । परोक्खे णाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा-आभिणिबोहियणाणे चेव सुयनाणे चेव १७। आभिणिबोहियणाणे दुविहे पएणत्ते। तं जहा–सुयनिस्सिए चेव असुय-

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गु त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं॥

निस्सिए चेव १८। सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-अत्थोग्गहे चेव वंजणोग्गहे चेव १९। असुयनिस्सिते वि एमेव २०। सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरं चेव २१। अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-आवस्सए चेव आवस्सयवइरित्ते चेव २२। आवस्सयवतिरित्ते दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-कालिए चेव उक्कालिए चेव २३॥

स्था० स्थान २ उद्दे०१ सू० ७१.

दुविहे धम्मे पण्णत्ते। तं जहा-सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव। सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-सुत्तसुयधम्मे चेव अत्थसुयधम्मे चेव। **चरित्तधम्मे** दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-आगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्तधम्मे चेव।

दुविहे संजमे पण्णत्ते*। तं जहा-सरागसंजमे चेव वीत-

* 'अणगारचरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते' इत्यपि पाठान्तरम्।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

उत्त० अ० २८ गा० १-३

रागसंजमे चेव । सरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-सुहुम-संपरायसरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव । सुहुम-संपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-पढमसमयसुहुम-संपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु० । अथवा चरम-समयसु० अचरिमसमयसु० । अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव । बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-पढ-मसमयबादर० अपढमसमयबादरसं० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-पडिवाति चेव अपडिवाति चेव । वीयरागसंजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसाय-वीयरायसंजमे चेव । उवसंतकसायवीयरागसंजमे दुविहे पएणत्ते ।

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥

उ० अ० २८ गा० १५

तं जहा-पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव अपढमसमय-उव० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । खीणकसायवीय-रागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा छउमत्थखीणकसायवीय-रागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव । छउ-मत्थखीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-सयं-बुद्धछउमत्थखीणकसाय० बुद्धबोहियछउमत्थ० । सयंबुद्धछ-उमत्थ० दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-पढमसमय० अपढमसमय० अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । केवलिखीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते । तं जहा-सजोगिकेवलिखीण-कसाय० अजोगिकेवलिखीणकसायवीयराग० । सजोगिकेव लिखीणकसायसंजमे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-पढमसमय०

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥

सम्मद्दंसणे दुविहे पएणत्ते । तं जहा–णिसग्गसम्मद्दंसणे चेव अभिगमसम्मद्दंसणे चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७०

अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० । अजोगिकेवलिखीणकसाय० संजमे दुविहे पएणत्ते । तं जहा-पढमसमय० अपढमसमय० । अहवा चरिमसमय० अचरिमसमय० ॥

स्था०स्थान २ उद्द० १ सू० ७२.

कतिविहा णं भंते ! आराहणा पएणत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पएणत्ता । तं जहा-नाणाराहणा दंसणाराहणा चरित्ताराहणा । णाणाराहणा णं भंते ? कतिविहा पएणत्ता ? गोयमा ! तिविहा पएणत्ता । तं जहा-उक्कोसिआ मज्झिमा जहन्ना । दंसणाराहणाणं भंते ? एवं चेव तिविहावि, एवं चरित्ताराहणावि ॥ जस्सणं भंते ? उक्कोसिया णा-

जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥

णाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा, जस्स उक्कोसिआ दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसिया वा अजहन्न उक्कोसिया वा । जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा जहन्ना वा जहन्नमणुक्कोसा वा । जस्स णं भंते ? उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया णाणाराहणा, जहा उक्कोसिया णाणाराहणाय दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणाय य चरित्ताराहणाय भणियव्वा । जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहण

नव सब्भावपयत्था पराणत्ते । तं जहा-जीवा अजीवा पुराणं पावो आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खो ॥ स्था० स्थान ९ सू० ६६५

उक्कोसा वा जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा । उक्कोसियं णं भंते ? णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणे णं सिज्झंति जावअंतं करेंति । अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणे णं सिज्झंति जाव अंतं करेंति । अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जंति । उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेता कतिहिं भवग्गहणेहिं एवं चेव उक्कोसियएणं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता एवं चेव, नवरं अत्थेगतिए कप्पातीय एसु उववज्जंति मज्झिमियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ? अत्थेगतिए

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥

जत्थ य जं जाणेज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं ।
जत्थवि अ न जाणेज्जा चउक्कगं निक्खिवे तत्थ ॥

आवस्सयं चउव्विहं पएणत्ते । तं जहा—नामावस्सयं ठवणावस्सयं दव्वावस्सयं भावावस्सयं ॥अनु०सू०

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥

दोच्चे णं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेंति तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ, मज्झिमियं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता एवं चेव, एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि । जहन्नियन्नं भंते ? नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झंति जाव अंतं करेंति ? गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतं करेइ सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ । एवं दंसणाराहणं पि एवं चरित्ताराहणं पि ॥ भग० श० उद्दे०१० सूत्रं ३५५ ॥

दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहिं नयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

उत्तरा० अ० २८ गाथा २४

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥

१ समग्रपाठस्त्वयम्—

से किं तं उवग्घाय निज्जुत्ति अणुगमे ? इमाहिं दोहिं गाहाहिं अणुगंतव्वो । तं जहा—उद्देसे १ निद्देसे अ २ निग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसेय ६ कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ नए १० समोआरणाणुमए ११ ॥१३३॥ किं १२ कइविहं १३ कस्स १४ कहिं १५ केसु १६ कहं १७ किच्चिरं हवइ कालं १८ कइ १९ संतर २० मविरहियं २१ भवा २२ गरिस २३ फासण २४ निरुत्ति २५ ॥१३४॥ सेतं उवग्घाय निज्जुत्ति अणुगमे । सू० १५१

निद्देसे पुरिसे कारण कहिं केसु कालं कइविहं ॥
अनु० सू० १५१

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभा-वाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥

से किं तं अणुगमे? नवविहे पण्णत्ते । तं जहा-संतपयपरूवणया १ दव्वपमाणं च २ खित्त३ फुसणा य ४ कालो य ५ अंतरं ६ भाग ७ भाव ८ अप्पाबहुं चेव । अनु० सू० ८०

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥

पंचविहे णाणे पण्णत्ते । तं जहा-आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

स्था० स्थान ५ उद्दे० ३ सू० ४६३, अनु० सू० १, नन्दि १
भगवती शतक ८ उद्दे० २ सू० ३१८

तत्प्रमाणे ॥१०॥

आद्ये परोक्षम् ॥१०॥

प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥

से किं तं जीवगुणप्पमाणे? तिविहे पण्णत्ते। तं जहा-णाणगुणप्पमाणे दंसणगुणप्पमाणे-चरित्त गुणप्पमाणे। अनु० सू० १४४.

दुविहे नाणे पण्णत्ते। तं जहा-पच्चक्खे चेव परोक्खे चेव १। पच्चक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-केवलणाणे चेव णोकेवलणाणे चेव २। .... णोकेवलणाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-ओहिणाणे चेव मणपज्जवणाणे चेव।..........परोक्खे णाणे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-आभिणिबोहियणाणे चेव, सुयणाणे चेव।

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनि-बोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥

ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा ।
सन्ना सई मई पन्ना सव्वं आभिणिबोहिअं ॥

नन्दि० प्र० मतिज्ञानगाथा ८०

तदिन्द्रियाऽनिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥

से किं तं पच्चक्खं ? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं ।
तं जहा-इन्दियपच्चक्खं नोइन्दियपच्चक्खं च ।

नन्दि० ३ अनु०१४४.

अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥

से किं तं सुअनिस्सिअं ? चउव्विहं पण्णत्तं ।
तं जहा-१ उग्गहे २ ईहा ३ अवाओ ४ धारणा ।

नन्दि० २७

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥

छव्विहा उग्गहमती पण्णत्ता। तं जहा–खिप्पमोगिण्हइ बहुमोगिण्हइ बहुविधमोगिण्हइ धुवमोगिण्हइ अणिस्सियमोगिण्हइ असंदिद्धमोगिण्हइ। छव्विहा ईहामती पण्णत्ता। तं जहा–खिप्पमीहति बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति। छव्विधा अवायमती पण्णत्ता। तं जहा–खिप्पमवेति जाव असंदिद्धं अवेति। छव्विहा धारणा पण्णत्ता। तं जहा–बहुं धारेति पोराणं धारेति दुद्धरं धारेति अणिस्सियं धारेति असंदिद्धं धारेति।

स्था० स्थान ६, सू० ५१०

जं बहु बहुविह खिप्पा अणिस्सिय निच्छिय धुवेयर विभिन्ना, पुणरोग्गहादओ तो तं छत्तीस त्तिसयभेदं। इयि भासयारेण

अर्थस्य ॥१७॥

से किं तं अत्थुग्गहे ? अत्थुग्गहे छव्विहे पगणत्ते। तं जहा-सोइन्दियअत्थुग्गहे, चक्खिदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिदियअत्थुग्गहे, फासिंदियअत्थुग्गहे, नोइन्दियअत्थग्गहे ॥ नन्दि सू० ३०

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८॥

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥

सुयनिस्सिए दुविहे पगणत्ते । तं जहा-अत्थोग्गहे चेव वंजणोवग्गहे चेव ॥

स्था० स्थान २ उद्दे० १ सू० ७१

से किं तं वंजणुग्गहे ? वंजणुग्गहे चउव्विहे पगणत्ते। तं जहा-सोइन्दियवंजणुग्गहे, घाणिंदियवंजणुग्गहे, जिब्भिदियवंजणुग्गहे, फासिंदियवंजणुग्गहे से तं वंजणुग्गहे ॥ नन्दि सू० २९.

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

मईपुव्वं जेण सुअं न मई सुअपुव्विआ ॥

नन्दि० सू० २४

सुयनाणे दुविहे पगणत्ते। तं जहा—अंगपविट्ठे चेव अंगबाहिरे चेव ॥

स्था० स्थान २, उद्दे० १, सू० ७१.

से किं तं अंगपविट्ठं ? दुवालसविहं पगणत्तं। तं जहा—१ आयारो २ सुयगडे ३ ठाणं ४ समवाओ ५ विवाहपगणत्ती ६ नायाधम्मकहाओ ७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइअदसाओ १० पगहावागरणाइं ११ विवागसुअं १२ दिट्ठिवाओ ॥

नन्दि० सू० ४६

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥

दोगहं भवपच्चइए पगणत्ते। तं जहा—देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ॥ स्था० स्थान २, उ० १, सू० ७१

से किं तं भवपच्चइअं ? दुण्हं । तं जहा–देवाण य नेरइयाण य ॥ नन्दि० सू० ७

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥

से किं तं खाओवसमिअं ? खाओवसमिअं दुण्हं । तं जहा–मणुस्साण य पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खाओवसमिअं ? खाओवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिनाणं समुप्पज्जइ ॥ नन्दि० सू० ८

प्रज्ञापनासूत्रे–अवधिज्ञानस्याष्टौ भेदाःप्रदर्शिताः। यथा—

आणुगामिते अणाणुगामिते,

वड्ढमाणते हीयमाणए पडिवाई

अप्पडिवाई अवट्ठिए अणवट्ठिए ।

पद ३३ सू० ३१६

दोगहं खत्रोवसमिए पगणत्ते । तं जहा–मणुस्साणं चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७१

छव्विहे ओहिनाणे पगणत्ते । तं जहा–अणुगामिए, अणाणुगामिते, वड्ढमाणते, हीयमाणते, पडिवाई, अपडिवाई ॥

स्था० स्थान ६ सू० ५२६

ऋजुविपुलमती मनः पर्ययः ॥२३॥

मणपज्जवणाणे दुविहे पगणत्ते । तं जहा–उज्जुमति चेव विउलमति चेव ॥

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥

तं समासओ च उव्विहं पगणत्तं । तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ तत्थ दव्वओणं उज्जुमई णं अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ पासइ ते

चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसु-द्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ खेत्तओणं उज्जुमई अ जहन्नेण अंगुलस्स असंखे ज्जइभागं उक्कोसेणं अहे जाव ईमीसेरयणप्पभाए पुढवीए उवरिम हेट्ठिल्ले खुड्डग पयरेउड्ढंजाव जोइसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अंतो मणुस्सखित्ते अड्ढा-इज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरस्सकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णए अंतरदीवगेसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ पा-सइ कालओणं उज्जुमइ जहण्णेणं पलिओवमस्स—

असंखिज्जइ भागं उक्कोसेणंवि पलिओवमस्स असंखिज्जइ भागं अतीयमणागय वा कालं जाणइ पासइ त चेव विउलमइ अब्भहियतरागं विसुद्ध-तरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ भावओणं

उज्जुमइ अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तं चेव विउलमइणं अब्भ हियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं जाणइ पास मणपज्जवणाणा पुण जण मण परिचिंतिअत्थ पागडणं माणुसखित्त निबद्धं गणा पच्चइयं चरित्त-वओ सेत मणपज्जवणाणं ॥

नन्दि० सू० १८.

विशुद्धि क्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधि-मनःपर्यययोः ॥२५॥

भेद विसय संठाणे अब्भितर वाहिरेय देसोही ।
उहिस्सय खयवुड्ढी पडिवाई चेव अपडिवाई ॥

प्रज्ञापना सू० पद ३३ गा० १.

इड्ढीपत्त अपमत्तसंजय सम्मदिट्ठि पज्जतग संखेज्जवासाउअकम्मभूमिअ गब्भवक्कंतिअ मणु-स्साणं मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ॥

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥

तत्थ दव्वओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ, खेत्तओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ न पासइ, कालओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वकालं जाणइ न पासइ, भावओणं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ न पासइ ॥

नन्दि० सू० ३७.

से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते। त जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ कालओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ

पासइ, भावओणं सुअणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥

नन्दि सू० ५८

रूपिष्ववधेः ॥२७॥

ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सव्वरूविदव्वेसु न पुण सव्वपज्जवेसु ॥

अनु० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ ओहिनाणी जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ खेत्तओणं ओहिनाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोगलोगपमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ कालओणं ओहिनाणी जहण्णेणं आवलिआए असंखि-

ज्जाइ भागं जाणइ पासइ उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ ओसप्पिणीओ अईयं अणागयं च कालं जाणइ पासइ भावओणं ओहिनाणी जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेणं वि अणंतभावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ ॥

तदनन्तभागे मनः पर्ययस्य ॥२८॥

सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणपज्जवा । ओहिणाण-पज्जवा अनन्तगुणा, सुयणाणपज्जवा अनन्तगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अनंतगणा, केवलनाण-पज्जवा अनंतगुणा ॥ भग० श० ८ उ० २ सू० ३२३

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥

केवलदंसणं केवलदंसणिस्स सव्वदव्वेसु अ, सव्वपज्जवेसु अ ॥ अनु० दर्शनगुणप्रमाण० सू० १४४

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं। तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओणं केवलनाणी सव्व दव्वाइं जाणइ पासइ, खितओणं केवलनाणी सव्वं खित्तं जाणइ पासइ, कालओणं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ, भावओणं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ। अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं। सासयमप्पडिवाई एगविहं केवलं नाणं॥

नं० सू० २२

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥

आभिणिबोहियनाणसाकारो व उत्ताणं भंते ! चत्तारि णाणाइं भयणाए॥

व्या० प्र० श० ८ उ० २ सू० ३२०

जे णाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थेगतिया तिणाणी अत्थेगतिया चउणाणी अत्थेगतिया एग-णाणी। जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहिणाणी य, अहवा आभिणिबोहिय-णाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी य, जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी ओहि-णाणी मणपज्जवणाणी य, जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी॥ जीवाभि० प्रतिपत्ति० १ सू० ४१

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥

सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धे-रुन्मत्तवत् ॥३२॥

१ व्याख्याप्रज्ञप्तौ (८—२) राजप्रश्नीयसूत्रे चापि एतादृश एव पाठः।

अन्नाणे णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ? गोयमा ! तिविहे पराणत्ते । तं जहा-मइअन्नाणे सुयअन्नाणे विभंगन्नाणे ॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० २ सू० ३१८

अणाणपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पराणत्ते ? गोयमा ! तिविहे पराणत्ते । तं जहा--मइअणाणपरिणामे, सुयअणाणपरिणामे, विभंगणाणपरिणामे ॥

प्रज्ञापना पद १३ ज्ञानपरिणामविषय

स्था० स्थान ३ उ० ३ सू० २८७

से किं तं मिच्छासुयं ? जं इमं अएणाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धिमइ विगप्पिअं,इत्यादि।

नन्दि० सू० ४२

अविसेसिआ मई मइनाणं च मइअन्नाणं च इत्यादि ॥

नन्दि० सू० २५

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवम्भूताः नयाः ॥३३॥

सत्त मूलणया पगणत्ता । तं जहा-णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसूए, सद्दे, समभिरूढे, एवंभूए ॥

अनु० १३६

स्था० स्थान ७ सू० ५५२

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्मागम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रे जैनागमसमन्वय
प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ।

द्वितीयोऽध्यायः ।

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥

छव्विहे भावे पएणत्ते । तं जहा-ओदइए उवसमिते खत्तिते खओवसमिते पारिणामिते सन्निवाइए ॥ स्था० स्थान ६ सू०५३७

द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥२॥

सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवी-
र्याणि च ॥४॥

ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिप-
ञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमाऽसंय-
माश्च ॥५॥

गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाज्ञाना-
संयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकै-
कषड्भेदाः ॥६॥

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥७॥

से किं तं उदइए ? दुविहे पराणत्ते । तं जहा-
उदइए अ उदयनिप्फराणे अ । से किं तं उदइए ?

अट्ठएहं कम्मपयडीणं उदएणं, से तं उदइए। से किं तं उदयनिप्फन्ने ? दुविहे पण्णत्ते। तं जहा--जीवोदयनिप्फन्ने अ अजीवोदयनिप्फन्ने अ। से किं तं जीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा-णेरइए तिरिक्खजोणिए मणुस्से देवे पुढविकाइए जाव तसकाइए कोहकसाई जाव लोहकसाई इत्थी वेदए पुरिसवेदए णपुंसगवेदए कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे मिच्छादिट्ठी अविरए असण्णी अण्णाणी आहारए छउमत्थे सजोगी संसारत्थे असिद्धे, से तं जीवोदयनिप्फन्ने। से किं तं अजीवोदयनिप्फन्ने ? अणेगविहे पण्णत्ते। तं जहा—उरालिअं वा सरीरं उरालिअसरीरपओगपरिणामिअं वा दव्वं, वेउव्विअं वा सरीरं वेउव्वियसरीरपओगपरिणामिअं वा दव्वं, एवं आहारगं सरीरं तेअगं सरीरं कम्मगसरीरं च भाणिअव्वं, पओगपरिणामिए वण्णे गंधे

रसे फासे, से तं अजीवोदयनिप्फरणे । सेतं उदय-
निप्फरणे, से तं उदइए ।

से किं तं उवसमिए ? दुविहे परणत्ते, तं जहा-
उवसमे अ उवसमनिप्फरणे अ । से किं तं उवसमे ?
मोहणिज्जस्स कम्मस्स उवसमेणं, से तं उवसमे ।
से किं तं उवसमनिप्फरणे ? अणेगविहे परणत्ते,
तं जहा--उवसंतकोहे जाव उवसंतलोभे उवसं-
तपेज्जे उवसंतदोसे उवसंतदंसणमोहणिज्जे उवसं-
तमोहणिज्जे उवसमिआ सम्मत्तलद्धी उवसमिआ
चरित्तलद्धी उवसंतकसायछउमत्थवीयरागे, से तं
उवसमनिप्फरणे । से तं उवसमिए ।

से किं तं खइए ? दुविहे परणत्ते । तं जहा—
खइए अ खयनिप्फरणे अ । से किं तं खइए ?
अट्ठएहं कम्मपयडीणं खए णं, से तं खइए । से किं
तं खयनिप्फरणे ? अणेगविहे परणत्ते, तं जहा—
उप्परणणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली खीण-

आभिणिबोहियणाणावरणे खीणसुअणाणावरणे खीणओहिणाणावरणे खीणमणपज्जवणाणावरणे खीणकेवलणाणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे णाणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के; केवलदंसी सव्वदंसी खीणनिद्दे खीणनिद्दानिद्दे खीणपयले खीणपयलापयले खीणथीणगिद्धी खीणचक्खुदंसणावरणे खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणओहिदंसणावरणे खीणकेवलदंसणावरणे अणावरणे निरावरणे खीणावरणे दरिसणावरणिज्जकम्मविप्पमुक्के; खीणसायावेअणिज्जे खीणअसायावेअणिज्जे अवेअणे निव्वेअणे खीणवेअणे सुभासुभवेअणिज्जकम्मविप्पमुक्के; खीणकोहे जाव खीणलोहे खीणपेज्जे खीणदोसे खीणदंसणमोहणिज्जे खीणचरित्तमोहणिज्जे अमोहे निम्मोहे खीणमोहे मोहणिज्जकम्मविप्पमुक्के; खीणणेरइआउए खीणतिरक्खजोणिआउए खीणमणुस्साउए खीणदेवाउए अणाउए निराउए खीणा-

उए आउकम्मविप्पमुक्के: गइजाइसरीरंगोवंगबंधण-संघयण संठाणअणेगवोंदिविंदसंघायविप्पमुक्के खीण-सुभनामे खीणअसुभणामे अणामे निण्णामे खीण नामे सुभासुभणामकम्मविप्पमुक्के: खीणउच्चागोए खीणणीआगोए अगोए निग्गोए खीणगोए उच्च-णीयगोत्तकम्मविप्पमुक्के: खीणदाणंतराए खीण-लाभंतराए खीणभोगंतराए खीणउवभोगंतराए खीणविरियंतराए अणंतराए णिरंतराए खीणंतराए अंतरायकम्मविप्पमुक्के: सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे, से तं खयनिप्फणणे, से तं खइए।

से किं तं खओवसमिए? दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-खओवसमिए य खओवसमनिप्फण्णे य। से किं तं खओवसमे? चउण्हं घाइकम्माणं खओव-समेणं, तं जहा-णाणावरणिज्जस्स दंसणावरणि-ज्जस्स मोहणिज्जस्स अंतरायस्स खओवसमेणं, से

तं खओवसमे। से किं तं खओवसमनिप्फरणे ? अणेगविहे पराणत्ते, तं जहा—खओवसमिआ आभिणिबोहिअ-णाणलद्धी जाव खओवसमिआ मण-पज्जवणाणलद्धी खओवसमिआ मइअराणाणलद्धा खओवसमिआ सुअ-अराणाणलद्धी खओवसमिआ विभंगणाणलद्धी खओवसमिआ चक्खुदंसणलद्धी अचक्खुदंसणलद्धी ओहिदंसणलद्धी एवं सम्म-दंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्ममिच्छादंसण-लद्धी खओवसमिआ सामाइअचरित्तलद्धी एवं छेदोवट्ठावणलद्धी परिहारविसुद्धिअलद्धी सुहुमसं-परायचरित्तलद्धीएवं चरित्ताचरित्तलद्धी खओव-समिआ दाणलद्धी एवं लाभ० भोग० उवभोगलद्धी खओवसमिअ वीरिअलद्धी एवं पंडिअवीरिअलद्धी बालवीरिअलद्धी बालपंडिअवीरिअलद्धी खओव-समिआ सोइन्दियलद्धी जाव खओवसमिआ फा-सिंदियलद्धी खओवसमिए आयारंगधरे एवं सु

अगडंगधरे ठाणंगधरे समवायंगधरे विवाहपएणत्ति-धरे नायाधम्मकहा० उवासगदसा० अंतगडदसा० अनुत्तरोववाइअ दसा० पण्हावागरणधरे विवागसुअधरे खओवसमिए दिट्ठिवायधरे खओवसमिए णवपुव्वी खओवसमिए जाव चउद्दसपुव्वी खओवसमिए गणी खओवसमिए वायए, सेतं खओवसमनिप्फण्णे। से तं खओवसमिए।

से किं तं पारिणामिए ? दुविहे पएणत्ते, तं जहा—साइपारिणामिए अ अणाइपारिणामिए अ। से किं तं साइपारिणामिए ? अणेगविहे पएणत्ते, तं जहा—

जुएणसुरा जुएणगुलो जुएणघयं जुएणतंदुला चेव।
अब्भा य अब्भरुक्खा संभा गंधव्वणगरा य ॥२४॥

उक्कावाया दिसादाहा गज्जियं विज्जूणिग्घाया जूवया जक्खादित्ता धूमिआ महिआ रयुग्घाया चंदोव राागा सूरोवरागा चंदपरिवेसा सूरपरिवेसा पडिचंदा

पडिसूगा इन्दधणू उदगमच्छाकविहसिया अमोहा वासा वासधरा गामा णगरा घरा पव्वता पायाला भवणा निरया रयणप्पहा सक्करप्पहा वालुअप्पहा पंकप्पहा धूमप्पहा तमप्पहा तमतमप्पहा सोहम्मे जाव अच्चुए गेवेज्जे अणुत्तरे ईसिप्पभाए परमाणु-पोग्गले दुपएसिए जाव अणंतपएसिए, से तं साइ-परिणामिए। से किं तं अणाइपरिणामिए? धम्मत्थि-काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पुग्गलत्थिकाए अद्धासमए लोए अलोए भवसिद्धि आ अभवसिद्धिआ, से तं अणाइपरिणामिए। से तं परिणामिए।

अनु० षड्नामाधिकार०

उपयोगो लक्षणम् ॥८॥

उवओगलक्खणे जीवे।

भ० सू० श० २ उ० १०

जीवो उवओगलक्खणो ।

उत्त० सू० अ० २८ गा० १०

सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥

कतिविहे णं भंते ! उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, तं जहा—सागारोवओगे, अणागारोवओगे य ॥ १ ॥ सागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते । प्रज्ञा० सू० पद २९

अणागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते ।

प्रज्ञा० सू० पद २९

संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥

दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धा चेव असिद्धा चेव ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० १०१

संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ॥ स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५१

समनस्काऽमनस्काः ॥११॥

दुविहा नेरइया पगणत्ता, तं जहा—सन्नी चेव असन्नी चेव. एवं पंचेंदिया सव्वे विगलिंदियवज्जा जाव वाणमंतरा वेमाणिया ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ७६

संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥

संसारसमावन्नगा तसे चेव थावरा चेव ।

स्था० स्थान २ उ० १ सू० ५७

पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥

पंचथावरा काया पगणत्ता, तं जहा—इंदे

थावरकाए (पुढवीथावरकाए) बंभेथावरकाए (आऊथावरकाए) सिप्पे थावरकाए (तेऊथावरकाए) संमती थावरकाए (वाऊथावरकाए) पजावच्चेथावरकाए (वणस्सइथावरकाए)।

स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३६४

द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥

से किं तं ओराला तसा पाणा? चउव्विहा पराणत्ता, तं जहा-बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया।

जीवा० प्रतिपत्ति० १ सू० २७

पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥

कति णं भंते! इंदिया पराणत्ता? गोयमा! पंचेंदिया पराणत्ता।

प्रज्ञा० सू० १५ इन्द्रियपद० उ० १ सू० १६१

द्विविधानि ॥१६॥

कइविहा णं भंते ! इन्दिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–दव्विंदिया य भाविंदिया य ।
प्रज्ञा० पद १५ उ० १

निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥

कइविहे णं भंते ! इंदियउवचए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इन्दियउवचए पण्णत्ते ।

कइविहे णं भंते ! इन्दियणिव्वत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियणिव्वत्तणा पण्णत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ पद १५

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥

कतिविहा णं भंते ! इन्दियलद्धी पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियलद्धी पण्णत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

कतिविहा णं भंते ! इन्दिय उवउगद्धा पराण-त्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियउवउगद्धा पराणत्ता ।

प्रज्ञा० उ० २ इन्द्रियपद० १५

स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥१९॥

स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥

सोइन्दिए चक्खिन्दिए घाणिंदिए जिब्भिंदिए फासिंदिए ।

प्रज्ञा० इन्द्रियपद १५

पंच इन्दियत्था पराणत्ता, तं जहा—सोइन्दि-यत्थे जाव फासिंदियत्थे ।

स्था० स्थान ५ उ० ३ सू० ४४३

श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥

सुणेइत्ति सुअं ।

नन्दि सू० २४

वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥

से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपराण-

वणा ? एगिंदियसंसारसमावरणजीवपरणवणा पंचविहा पराणत्ता, तं जहा-पुढवीकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया।

प्रज्ञा० प्रथम पद

कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥

किमिया-पिपीलिया-भमरा-मणुस्स इत्यादि।

प्रज्ञा० प्रथम पद

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जस्स णं अत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं सरणीति लब्भइ। जस्स णं नत्थि ईहा अवोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असरणीति लब्भइ।

नन्दिसू० ४०

विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥

कम्मासरीरकायप्पओगे। प्रज्ञा० पद १६

अनुश्रेणि: गतिः ॥२६॥

परमाणुपोग्गलाणं भंते! किं अणुसेढीं गती पवत्तति विसेढिंगती पवत्तति? गोयमा! अणुसेढीं गती पवत्तति नो विसेढिं गती पवत्तति? दुपएसियाणं भंते! खंधाणं अणुसेढीं गती पवत्तति विसेढीं गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं। नेरइयाणं भंते! किं अणुसेढीं गती पवत्तति एवं विसेढीं गती पवत्तति एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक २५ उ० ३ सू० ७३०

अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥

उज्जूसेढीपडिवन्ने अफुसमाणगई उड्ढं एक-

समएणं अविग्गहेणं गंता सागारोवउत्ते सिज्झि-
हिइ ।

औपपातिक सू० सिद्धाधिकार सू० ४३

विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥

णेरइयाणं उक्कोसेणं तिसमतीतेणं विग्गहेणं उववज्जंति एगिंदिवज्जं जाव वेमाणियाणं ।

स्था० स्थान ३ उ० ४ सू० २२५

कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जन्ति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ उ० १ सू०८५१

एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥

एगसमइयो विग्गहो नत्थि ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ३४ सू० ८५१

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥३०॥

जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए—चउत्थे समए नियमा आहारए एवंदंडओ, जीवा य एगिंदियाय चउत्थे समए सेसा ततिए समए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६०

सम्मूर्च्छनगर्भोपपादाज्जन्म ॥३१॥

से बेमि संति मे तसापाणा । तं जहा-अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया उववाइया एस संसारेत्ति पवुच्चई ।

आचारांग सू० अ० १ उ० ६ सू० ४८

गब्भवक्कन्तिया........

उत्तराध्ययन ३६ गाथा १७०

अंडया पोयया जराउया....समुच्छिमा....उववाइया। दशवै० अ० ४ त्रसाधिकार

सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥

कइविहा णं भंते ! जोणी पएणत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पएणत्ता, तं जहा-सीया जोणी उसिणा जोणी सीओसिणा जोणी। तिविहा जोणी पएणत्ता, तं जहा—सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी। तिविहा जोणी पएणत्ता, तं जहा—संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी।

प्रज्ञापना योनिपद ६

जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः ॥३३॥

अंडया पोयया जराउया। दशवैकालिक अ० ४

[illegible]क्कंतियाय। प्रज्ञापना १ पद

देवनारकाणामुपपादः ॥३४॥

दोण्हं उववाए पण्णत्ते देवाणं चेव नेरइयाणं चेव ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८५

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥३५॥

संमुच्छिमाय ..... प्रज्ञापना पद १

सूत्रकृताङ्ग श्रु० २ अ० ३

औदारिकवैक्रियिकाऽऽहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥३६॥

कति णं भंते ! सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ।

प्रज्ञापना शरीरपद २१

परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात्॥३८॥

अनन्तगुणे परे ॥३९॥

सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेयाकम्मगसरीरा दोवि तुल्ला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, पदेसट्ठाए सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पदेसट्ठाए वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा पदेसट्ठाए असंखेज्जगुणा तेयगसरीरा पदेसट्ठाए अणंतगुणा कम्मगसरीरा पदेसट्ठाए अणंतगुणा इत्यादि ।

प्रज्ञापना शरीर पद २१

अप्रतीघाते ॥४०॥

अप्पडिहयगई । राजप्रश्नीयसूत्र, सू० ६६

अनादिसम्बन्धे च ॥४१॥

सर्वस्य ॥४२॥

तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भन्ते! कालओ कंविचिरं होई? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ३५०

कम्मासरीरप्पयोगबंधे...अणाइए अपज्जवसिए अणाइए अपज्जवसिए वा एवं जहा तेयगस्स।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श०८ उ० ६ सू० ३५१

तेयगसरीरी दुविहे-अणादीए वा अपज्जवसिए अणादीए वा पज्जवसिए एवं कम्मसरीरी वि इत्यादि।

जीवाभिगमसूत्र-सर्वजीवाभिगम प्रतिपत्ति ६ अ०४ सू० २६४

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्या-

ऽऽचतुर्भ्यः ॥४३॥

जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं ? गोयमा !
जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय
अत्थि सिय णत्थि, जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स
ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि । जस्स
णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं
जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ?
गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारग-
सरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स आहारग-
सरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि ।
जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं,
जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा !
जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमा
अत्थि, जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालिय-
सरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि । एवं कम्मसरीरे

वि। जस्स णं भंते! वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं, जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं? गोयमा! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्थि, जस्स पुण आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं णत्थि। तेयाकम्माइं जहा ओरालिएणं सम्मं तहेव, आहारगसरीरेण वि सम्मं तेयाकम्माइं तहेव उच्चारियव्वा। जस्स णं भंते! तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं जस्स कम्मगसरीरं तस्स तेयगसरीरं? गोयमा! जस्स तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं णियमा अत्थि, जस्स वि कम्मगसरीरं तस्स वि तेयगसरीरं णियमा अत्थि।

प्रज्ञा० प० २१

निरुपभोगमन्त्यम् ॥४४॥

विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दोसरीरा

पराणत्ता; तं जहा–तेयए चेव कम्मए चेव। निरंतर जाव वेमाणियाणं।

स्था० स्थान उद्दे० १ सू० ७६

जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ? गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ सिय असरीरी वक्कमइ। से केणट्ठेणं? गोयमा ! ओरालियवेउव्विय-आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कमइ। तेयाकम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ।

भगवती० श० १ उद्दे० ७

गर्भसम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥४५॥

उरालिअसरीरे णं भंते ! कतिविहे पराणत्ते? गोयमा ! दुविहे पराणत्ते, तं जहा–समुच्छिम... ....गब्भवक्कंतिय।

प्रज्ञा० पद २१

औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥

णेरइयाणं दो सरीरगा पराणत्ता, तं जहा–

अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरए कम्मए बाहिरए वेउव्विए, एवं देवाणं।

स्था० स्थान २, उद्दे० १ सू० ७५

लब्धिप्रत्ययश्च ॥४७॥

वेउव्वियलद्धीए।

औप० सू० ४०

तैजसमपि ॥४८॥

तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संखित्तविउलते-उलेस्से भवति, तं जहा—आयावणताते १ खंतिखमाते २ अपाणगेणं तवो कम्मेणं ३।

स्था० स्थान ३ उद्दे० ३ सू० १८२

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥

आहारगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ...... पमत्तसंजय सम्मदिट्ठि ...... समचउरंस संठाण संठिए पण्णत्ते ।

प्रज्ञा० पद २१, सू० २७३

नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥

तिविहा नपुंसगा पण्णत्ता, तं जहा—णेरतिय-नपुंसगा तिरिक्खजोणियनपुंसगा मणुस्सनपुंसगा ।

स्था० स्थान ३ उद्दे० १ सू० १२१

न देवाः ॥५१॥

शेषास्त्रिवेदाः ॥५२॥

कइविहे णं भंते ! वेए पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, तं जहा—इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसकवेए । नेरइयाणं भंते ! किं इत्थीवेया पुरि-

मवेया णपुंसगवेया पण्णत्ता ? गोयमा ! णो इत्थी वेया णो पुंवेए णपुंसगवेया पण्णत्ता। असुरकुमारा णं भंते ! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया ? गोयमा ! इत्थीवेया पुरिसवेया जाव णो णपुंसगवेया थणियकुमारा। पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई बितिचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खसंमुच्छिममणुस्सा णपुंसगवेया। गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया। जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतरा जोइसियवेमाणियावि।

समवा० सू० १५६

औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

दोअहाउयं पालेंति देवाणं चेव णेरइयाणं चेव।

स्था० स्थान२ उ० ३ सू० ८५

देवा नेरइयावि य असंखवासाउया य तिरमणुआ ।
उत्तमपुरिसा य तहा चरमसरीरा य निरुवकम्मा ॥

इति ठाणांगवित्तीए

इति जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ।

तृतीयोऽध्यायः

रत्नशर्कराबालुकापंक धूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः ॥१॥

कहि णं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढविसु, तं जहा-रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, बालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमप्पभाए, तमतमप्पभाए ।

प्रज्ञा० नरका० पद २

अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, अहे घणोदधीति वा घणवातेति वा तणुवातेति

वा श्रोवासंतरेति वा । हंता अत्थि एवं जाव अहे सत्तमाए ।
जीवाभि० प्रतिप० २ सू० ७०-७१

तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदश-त्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥

तीसा य पन्नवीसा पण्णरस दसेव तिण्णि य हवंति ।
पंचूणसहसहस्सं पंचेव अणुत्तरा णरगा ।
जीवा० प्रति० ३ सू० ६६
प्रज्ञा० पद० २ नरकाधिकार
व्या० प्र० श० १ उ० ५ सू० ४३

नारका: नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया: ॥३॥

परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥

.........अण्णमण्णस्स कायं अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति इत्यादि।

जीवाभिगम० प्रति० ३ उद्दे० २ सू० ८६

इमेहिं विविहेहिं आउहेहिं किं ते मोग्गरमुसंढिकरकय सत्तिहलगय मुसल चक्ककुन्त तोमर सूल लउड भिंडिमालि सब्बल पट्टिस चम्मिट्ठ दुहण मुट्ठिय असिखेडग खग्ग चाव नाराय कणगकप्पिणि वासि परसु टंक तिक्ख निम्मल अण्णेहिं एवमादिहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुबन्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरन्ति।

प्रश्न० अ० १ नरकाधिकार

ते णं णरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसप्पहा, मेदवसापूयपडलरु-

हिरमंसचिक्कललित्ताणुलेवणतला, असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा। असुभा णरगा असुभाओ णरगेसु वेयणाओ इत्यादि। प्रज्ञा० पद २ नरकाधिकार

नेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सा नीललेस्सा काऊलेस्सा।

स्था० स्थान ३ उ० १ सूत्र १३२

अतिसीतं, अतिउण्हं, अतितण्हा, अतिखुहा, अतिभयं वा, णिरए णेरइयाणं दुक्खसयाइं अविस्सामं।

जीवा० प्रतिपत्ति ३ उ० १ सू० १३२

संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥५॥

प्रश्न-किं पत्तियं णं भंते! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य?

उत्तर—गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरण-याए, पुव्वसंगइस्स वा वेदणउवसामणयाए, एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य, गमि-स्संति य ।

व्याख्या० श० ३ उ० २ सू० १४२

तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः ॥६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥ १६० ॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६१ ॥
सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६२ ॥

दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव सागरोवमा ॥१६३॥
सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव सागरोवमा ॥१६४॥
बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥१६५॥
तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥१६६॥

उत्तरा० अ० ३६

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीप समुद्राः ॥७॥

असंखेज्जा जंबुद्दीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, केवतिया णं भंते ! लवणसमुद्दा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता, एवं धायतिसंडावि, एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधे-

ओहि य । एगे देवे दीवे पराणत्ते, एगे देवोदे समुद्दे पराणत्ते, एवं णागे जक्खे भूते जाव एगे सयंभूरमणे दीवे एगे सयंभूरमण समुद्दे णामधेज्जेणं पराणत्ते ।

जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६ द्वीप०

जावतिया लोगे सुभा णामा सुभा वराणा जाव सुभा फासा एवतिया दीव समुद्दा णामधेज्जेहिं पराणत्ता ।

जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १८६

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥

जंबुद्दीवं णाम दीवं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठति । जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १५४

जंबुद्दीवाइया दीवा लवणादिया समुद्दा संठाणतो एकविहविधाणा वित्थारतो अणेगविधविधाणा

दुगुणादुगुणे पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभास-माणवीचीया। जीवा० प्रति० ३ उ० २ सू० १२३

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशत-सहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥६॥

जंबुद्दीवे सव्वद्दीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्व-खुड्डाए वट्टे......एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं इत्यादि। जम्बू० सू० ३

जंबुद्दीवस्स बहुमज्भदेसभाए एत्थणं जम्बुद्दीवे मन्दरे णाममं पव्वए पण्णत्ते। णवणउतिजोअणसह-स्साइं उद्धं उच्चतेणं एगं जोअणसहस्सं उव्वेहेणं।

जम्बू० सू० १०३

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्य-वतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥

जम्बुद्दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा-भरहे

एरवते हेमवते हेरन्नवते हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे ।
स्था० स्थान ७ सू० ५५५

तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥

विभयमाणे । जम्बूद्वीप० सू० १५

पाईण पडीणायए । जम्बूद्वीप० सू० ७२

जम्बुद्दीवे छ वासहरपव्वता पण्णत्ता, तं जहा–चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पि सिहरी ।

स्था० स्थान ६ सू० ५२४

हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥

मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः॥ १३॥

चुल्लहिमवंते जंबुद्दीवे........सव्वकणगामए अच्छे सण्हे तहेव जाव पडिरूवे। इत्यादि।

जम्बू० वक्षस्कार ४ सू० ७२

महाहिमवंते णामं......सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० ७६

निसहे णामं........सव्वतवणिज्जमए।

जम्बू० सू० ८३

णीलवंते णामं.......सव्ववेरुलिश्रामए।

जम्बू० सू० ११०

रूप्पिणाम........सव्वरूप्पामए।

जम्बू० सू० १११

सिहरी णामं........सव्वरयणामए।

जम्बू० सू० १११

बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णा-
तिवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं ।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८७

उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइआहिं दोहि अ
वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते । जम्बू० प्र० सू० ७२

**पद्ममहापद्मतिगिंछकेसरीमहापुण्ड-
रीकपुण्डरीकाह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥**

जंबुद्दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता, तं जहा-पउमद्दहे
महापउमद्दहे तिगिच्छद्दहे केसरीद्दहे पोंडरीयद्दहे
महापोंडरीयद्दहे । स्था० स्थान० ६ सू० ५२४

**प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धवि-
ष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥**

दशयोजनावगाहः ॥१६॥

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए इत्थ णं इक्के महे पउमद्दहे णामं दहे पएणत्ते पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छि-एणे इक्कं जोयणसहस्सं आयामेणं पंच जोअण-सयाइं विक्खंभेणं दस जोअनाइं उव्वेहेणं अच्छे ।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति पद्महृदाधिकार

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥

तस्स पउमद्दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ महं एगे पउमे पएणत्ते, जोअणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोअणं बाहल्लेणं दसजोअणाइं उव्वेहेणं दोकोसे ऊसिए जलंताओ साइरेगाइं दसजोअणाइं सव्व-ग्गेणं पएणत्ता ।

जम्बू० पद्महृदाधिकार सू० ७३

तद्द्विगुणद्विगुणाहृदाः पुष्कराणि च ॥१८॥

महाहिमवंतस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महापउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते; दोजोअण सहस्साइं आयामेणं एगं जोअणसहस्सं विक्खंभेणं दस जोअणाइं उव्वेहेणं अच्छे रययामयकूले एवं आयामविक्खंभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव णेअव्वा, पउमप्पमाणं दो जोअणाइं अट्ठो जाव महापउमद्दहवण्णाभाइं हिरी अ इत्थ देवी जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० महा० सू० ८०

तिगिंछिद्दहे णामं दहे पण्णत्ते…….चत्तारि जोअणसहस्साइं आयामेणं दोजोअणसहस्साइं विक्खंभेणं दसजोअणणाइं उव्वेहेणं……धिई अ इत्थ देवी पलिओवमट्ठिइया परिवसइ ।

जम्बू० सू० ८३ से ११०, षड्हदाधिकार

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृति-

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥

तत्थ णं छ देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठितीताओ परिवसंति। तं जहा-सिरि हिरि धिति कित्ति बुद्धि लच्छी।

स्थानांग स्थान ६ सू० ५२४

गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥

शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥

जंबुद्दीवे सत्त महानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, तं जहा—गंगा रोहिता हिरी सीता णरकंता सुवण्णकूला रत्ता । जंबुद्दीवे सत्त महानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समुप्पेंति, तं जहा—सिंधू रोहितंसा हरिकंता सीतोदा णारीकंता रुप्पकूला रत्तवती ।

स्थानांग स्थान ७ सू० ५५५

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥२३॥

जंबुद्दीवे भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ । गोअमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गंगा सिंधू रत्ता रत्तवई । तत्थ णं एगमेगा महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समुप्पेइ ।

जम्बू० प्र० वक्षस्कार ६ सू० १२५

भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशत विस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥

जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे....जंबुद्दीवदीवणउयसयभागे पंचछव्वीसे जोअणसए छच्च एगूणवीसइ भाए जोअणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बू० सू० १२

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ॥२५॥

जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहेमवन्त णामं वासहरपव्वए पएणत्ते पाईण पडीणायए उदीण दाहिण विच्छिएणे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्च-

त्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे एगं जोयणसयं उड्ढं उच्च-त्तेणं पणवीसं जोयणाइं उव्वेहणं-एगं जोयण-सहस्सं बावन्नं जोयणाइं दुवालसय एगूण वीसई भाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति चूलवंताधिकार

जंबूद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते-पाईण पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठाण—संठिए दुहालवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे-पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल लवणसमुद्दं पुट्ठे-दोण्णि जोयण-सहस्साइं एगं च पंचुत्तरं जोयणसयपंचयए गूण-वीसईभाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति हेमवर्षाधिकार

जम्बूद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे

दुहा लवणसमुद्दे पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुर-
त्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे
दोजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणासं जोयण उव्वे
हणं-चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णिय दसुत्तरं जो-
यणसए दसयएगणवीसई भाए जोयणस्स विक्खं-
भेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति महाहिमवंताधिकार

जंबुद्दीवे दीवे हरिवासं णामं वासे पण्णत्ते-एवं
जाव पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे-अट्ठजोयणस-
हस्साइं चत्तारि एगवीसे जोयणसए एगं च एगूण-
वीसइभागं जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप हरिवर्षाधिकार-

जंबुद्दीवे दीवे णिसहणामं वासहरपव्वए पण्णत्ते
पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा-
लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे चत्तारि
जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं

उव्वेहणं--सोलसजोयणसहस्साइं अट्ठयवयाले जोयणसए दोण्णि य एगणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति निषधाधिकार २

जंबुद्दीवे दीवे-महाविदेहवासे पएणत्ते-पाईण पडिणायए उदीणदाहिणविच्छिएणे पलियंकसंठाण संठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे पुरत्थ जाव पुट्ठे पच्च-त्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमत्था जाव पुट्ठे ।

तित्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चुलसीए-जोय-णसए चत्तारिय एगूणवीसइ भाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।

जम्बू० महाविदेहाधिकार

उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥

जंबुमंदरस्स पव्वयस्स य उत्तरदाहिणे णं दो वासहरपव्वया बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्न-

मध्वं णातिवट्टंति आयामविकखंभुच्चतोव्वेहसंठाण-
परिणाहेणं, तं जहा-चुल्लहिमवंते चेव सिहरिच्चेव,
एवं महाहिमवंते चेव रुप्पिच्चेव, एवं निसढे चेव
णीलवंते चेव इत्यादि ।

स्था० स्थान २ उद्देश्य ३ सूत्र ८७

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समया-भ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥२७॥

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥२८॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुआसया सुस-
मसुसममुत्तमिड्ढिपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति,
तं जहा--देवकुराए चेव, उत्तरकुराए चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुस-
ममुत्तमिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति,
तं जहा--हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुयासया सुस-मदुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विह-रंति, तं जहा--हेमवए चेव एरन्नवए चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुयासया दुस-मसुसममुत्तममिड्ढि पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विह-रंति, तं जहा--पुव्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव ॥

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा-भरहे चेव एरवए चेव ॥

स्थानांग स्थान २ सूत्र ८६

जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमे-णवि, णेवत्थि ओसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते ॥

व्या० प्र० श० ५ उद्देश्य १ सू० १७८

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवत-

कहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥

तथोत्तराः ॥३०॥

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पण्णत्ता........हिमवए चेव हेरण्णवते चेव हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव........देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव........एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। ....दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

जम्बूद्वीप० वक्षस्कार ४

विदेहेषु संख्येयकालाः ॥ ३१॥

महाविदेहे......मणुआणं केविइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण पुव्वकोडी आउअं पालेंति।

जम्बू० वक्षस्कार ४ सूत्र ८५

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥३२॥

जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहप्पमाणमेत्तेहिं खंडेहिं केवइयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! णउअं खंडसयं खंडगणिएणं पण्णत्ते।

जम्बू० खंडयोजनाधिकार सू० १२५

द्विर्धातकीखण्डे ॥३३॥

धायइखंडे दीवे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव .... धातकीखंडदीवे पञ्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव। इच्चाइ।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ९२

पुष्करार्द्धे च ॥३४॥

पुक्खरवरदीवड्ढे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं दो वासा पण्णत्ता, बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरावए चेव तहेव जाव दो कुडाओ पण्णत्ता।

स्था० स्थान २ उद्दे० ३ सू० ६२

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥३५॥

माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स अंतो मणुआ।

जीवा० प्रति० ३ मानुषोत्तरा० उद्दे० २ सू० १७८

आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आरिआ य मिलक्खू य।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधिकार

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥

से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पराणरस-विहा पराणत्ता, तं जहा--पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरावएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ।

से किं तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसइ विहा पराणत्ता, तं जहा--पंचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पंचहिं एरराण-वएहिं,पंचहिं देवकुरुहिं, पंचहिं उत्तरकुरुहिं । सेतं अकम्मभूमगा ।

प्रज्ञा० पद १ मनुष्याधि० सूत्र ३२

नृस्थिती पराऽवरे त्रिपल्योपमान्त-र्मुहूर्ते ॥३८॥

पलिओवमाउ तिन्नि य, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १९८

मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोस्सेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

प्रज्ञा० पद ४ मनुष्याधिकार

तिर्यग्योनिजानाञ्च ॥३९॥

असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पन्नत्ता ।

समवा० सू० समवाय ३

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराणं अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तरा० अध्याय ३६ गाथा १८३

गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ति-

रिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण पलिओवमाइं ।

प्रज्ञापना स्थितिपद ४ तिर्यगधिकार

इति श्री जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीत तत्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वये
तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ।

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥

चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा-भवणवई वाणमंतर जोइस वेमाणिया।

व्याख्या० श० २ उ० ७

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ॥२॥

भवणवइ वाणमंतर... ...चत्तारि लेस्साओ.... ....जोतिसियाणं एगा तेउलेसा.......वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेसाओ। स्था० स्थान १ सू० ५१

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥३॥

दसहा उभवणवासी अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०३॥
वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया।
कप्पोवगायबोधव्वा कप्पाईया तहेव य ॥२०७॥
कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा।
सणंकुमारमाहिंदा बम्भलोगा य लंतगा ॥२०८॥
महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा।
आरणा अच्चुया चेव इह कप्पोवगासुरा ॥२०९॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

भवणवइ दसविहा पण्णत्ता......वाणमन्तरा अट्ठविहा पण्णत्ता,....जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता ....वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा–कप्पोववण्णगा य कप्पाइया य। से किं तं कप्पोववण्णगा? बारसविहा पण्णत्ता, तं जहा–सोहम्मा, ईसाणा, सणंकुमारा, माहिंदा, बंभलोगा, लंतया, महासुक्का,

सहस्सारा, आणया, पाणया, आरणा, अच्चुत्ता।

प्रज्ञा० प्रथमपद देवाधिकार

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः॥ ४॥

देविंदा.......एवं सामाणिया.......तायत्तीसगा लोगपाला परिसोववन्नगा........अणियाहिवई........ आयरक्खा। स्था० स्थान ३ उ० १ सू० १३४

देवकिब्बिसिए........आभिजोगिए।

औपपा० जीवोप० सू० ४१

चउव्विहा देवाणं ठिती पण्णत्ता, तं जहा–देवे णाममेगे देवसिणाते णाममेगे देवपुरोहिते णाममेगे देवपज्जलणे णाममेगे।

स्था० स्थान ४ उ० १ सू० २४८

...अवसेसाय देवा देवीओ.......

जम्बू० प्र० सू० ११७ (आगमोदय समिति)

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतर-ज्योतिष्काः ॥५॥

कहि णं भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! वाणवंतरा देवा परिवसंति ?..........साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिस्सीणं साणं २ सपरिसाणं साण २ अणियाणं साणं २ अणि आहिवईणं साणं २ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तग्गत्तं आणाइसरसेणावच्चं....
....

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ३७

जोसियाणं देवाणं...........तत्थ साणं २ विमाण

वास सहस्साणं साणं २ सामाणिय साहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्ख देव साहस्सीणं अएणे सिं च-बहूणं जोइसियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति।

प्रज्ञापना सूत्र पद २ सू० ४२

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥

दो असुरकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-चमरे चेव बली चेव। दो णागकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-धरणे चेव भूयाणंदे चेव। दो सुवन्नकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव। दो विज्जुकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-हरिच्चेव हरिसहे चेव। दो अग्गिकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा-अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव। दो दीवकुमारिंदा

पएणत्ता, तं जहा–पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव दो उद-
हिकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा–जलकंते चेव जल-
प्पभे चेव । दो दिसाकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा–
अमियगती चेव अमियवाहणे चेव । दो वातकुमा-
रिंदा पएणत्ता, तं जहा–वेलंबे चेव पभंजणे चेव ।
दो थणियकुमारिंदा पएणत्ता, तं जहा–घोसे चेव
महाघोसे चेव । दो पिसाइंदा पएणत्ता, तं जहा–काले
चेव महाकाले चेव । दो भूइंदा पएणत्ता, तं जहा–
सुरूवे चेव पडिरूवे चेव । दो जक्खिंदा पएणत्ता, तं
जहा–पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव । दो रक्खसिंदा
पएणत्ता, तं जहा–भीमे चेव महाभीमे चेव । दो
किन्नरिंदा पएणत्ता, तं जहा–किन्नरे चेव किंपुरिसे
चेव । दो किंपुरिसिंदा पएणत्ता, तं जहा–सप्पुरिसे
चेव महापुरिसे चेव । दो महोरगिंदा पएणत्ता, तं
जहा–अतिकाए चेव महाकाए चेव । दो गंधव्विंदा

पएणत्ता, तं जहा--गीनरती चेव गीयजसे चेव।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ९४

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥

शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥८॥

परेऽप्रवीचाराः ॥९॥

कतिविहा णं भंते! परियारणा पएणत्ता? गोयमा! पञ्चविहा पएणत्ता, तं जहा--कायपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा.......भवणवासि वाणमंतरजोतिसि सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारणा, सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारणा, बंभलोयलंतगेसु कप्पेसु देवा रूवपरियारणा, महासुक्कसहस्सारेसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारणा, आण-

यपाणयआरणअच्चुएसु देवा मणपरियारगा, गवे-ज्जग अणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा।

प्रज्ञापना पद ३४ प्रचारणा विषय

स्था० स्थान २ उ० ४ सू० ११६

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥

भवणवई दसविहा पगणत्ता, तं जहा--असुर-कुमारा, नागकुमारा, सुवरणकुमारा, विज्जुकुमारा अग्गीकुमारा, दीवकुमारा, उदहिकुमारा, दिसा-कुमारा, वाउकुमारा, थणियकुमारा।

प्रज्ञापना प्रथम पद देवाधिकार

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥

वाणमंतरा अट्ठविहा पगणत्ता, तं जहा--किगगा

रा, किम्पुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, जक्खा, रक्खसा, भूया, पिसाया। प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥

जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा–चंदा-सूरा, गहा, णक्खत्ता, तारा।

प्रज्ञापना प्रथमपद देवाधिकार

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥

ते मेरु परियडंता पयाहिणावत्तमंडला सव्वे।
अणवट्ठियजोगेहिं चंदा सूरा गहगणा य ॥१०॥

जीवाभि० तृतीय प्रति० उद्दे० २ सू० १७७

तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—"सूरे आइच्चे सूरे", गोयमा ! सूरादिया णं समयाइ वा आवलयाइ वा जाव उस्सप्पिणीइ वा अवसप्पिणीइ वा से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे ।

व्या० प्रज्ञप्ति शत० १२ उ० ६

से किं तं पमाणकाले ? दुविहे पएणत्ते, तं जहा--दिवसप्पमाणकाले राइप्पमाणकाले इच्चाइ ।

व्या० प्र० श० ११ उ० ११ सू० ४२४

जम्बू० प्र० सूर्यप्र० चन्द्रप्र०

बहिरवस्थिताः ॥१५॥

अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोवगा य उववएणा ।
पञ्चविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य ॥२१॥
तेण परं जे सेसा चंदाइच्चगहतारणक्खत्ता ।
नत्थि गई नवि चारो अवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥२२॥

जीवाभिगम तृतीय प्रतिपत्ति उद्दे० २ सूत्र १७७

वैमानिका ॥१६॥

वेमाणिया ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति० शतक २० सूत्र ६७५–६८२

कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥

वेमाणिया दुविहा पगणत्ता, तं जहा--कप्पोव-वगणगा य कप्पाईया य ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ५०

उपर्युपरि ॥१८॥

ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं इत्यादि ।

प्रज्ञापना पद २ वैमानिक देवाधिकार

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्यु-

तयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तज-यन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१६॥

सोहम्म ईसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोय लंतग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय हेट्ठिमगेवेज्जग मज्झिमगेवेज्जग उवरिम-गेवेज्जग विजय वेजयंत जयंत अपराजिय सव्वट्ठ-सिद्धदेवा य ।

प्रज्ञा० पद ६ अनुयोग० सू० १०३ औप० सिद्धाधिकार

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धी-न्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ॥२०॥

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः॥

.......महिड्ढीया महज्जुइया जाव महाणुभागा

इड्ढीए पण्णत्ते, जाव अच्चुओ. गेवेज्जणुत्तरा य सव्वे महिड्ढीया... ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ सूत्र २१७ वैमानिकाधिकार

सोहम्मीसाणेसु देवा केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एवं जाव गेवेज्जा अणुत्तरोववातिया णं अणुत्तरा सद्दा एवं जाव अणुत्तरा फासा ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० २ सूत्र २१९
प्रज्ञापना पद २ देवाधिकार

असुरकुमार भवणवासि देव० पंचि० वेउव्विय सरीरस्स णं भंते ! के महा० ? गो० ? असुरकुमाराणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पं०, तं०—भवधारणिज्जा य उत्तर वेउव्विया य तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा ज० अंगुल० असं० उक्को० सत्तरयणीओ, तत्थ णं जासा उत्तर वेउव्विता सा, जह० अंगुल० संखे० उक्को० जोयणसतसहस्सं, एवं जाव

थणिय कुमाराणं, एवं ओहियाणं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणवि, सोहम्मीसाण देवाणं एवं चेव उत्तरावेउव्विता जाव अच्चुओ कप्पो, नवरं सणं-कुमारे भवधारणिज्जा जह० अंगु० असं० उक्को० छरयणीओ, एवं माहिंदेवि, बंभलोयलंतगेसु पंच-रयणीओ, महासुक्कसहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ, आणय पाणय आरणच्चुएसु तिणिण रयणीओ गेवि-ज्जगकप्पातीत वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउ० सरी० के महा० ? गो० ! गेवेज्जगदेवाणं एगा भवधारणिज्जा सरीरोगाहणा पं० सा जह० अंगुल० असं० उक्को० दो० रयणी, एवं अणुत्तरोववाइयदेवाणवि णवरं एक्का रयणी ।

प्रज्ञापना सूत्र शरीर पद २१ सूत्र २७२

तओ विसुद्धाओ ।

प्रज्ञापना १७ लेश्यापद उद्देश ३

देवाणं पुच्छा--गो० ! छ एयाओ चेव देवीणं

पुच्छा, गो० ! चत्तारि कराह० जाव तेउलेस्सा, भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा, गोयमा ! एवं चेव एवं भवणवासिणीणवि वाणमंतरा देवाणं पुच्छा, गो० ! एवं चेव, वाणमंतरीणवि जोइसियाण पुच्छा, गो० ! एगा तेउलेस्सा, एवं जोइसिणीणवि ।

वेमाणियाणं, पुच्छा, गो० ? तिन्नि तं०—तेउ० पम्ह० सुक्कलेस्सा वेमाणिणीणं पुच्छा, गो० ? एगा-तेउलेस्सा ।

प्रज्ञापना ६७ लेश्या पद उद्देश २ सूत्र २१६

असुरकुमाराणं पुच्छा, गो० ! पल्लगसंठिते, एवं जाव थणियकुमाराणं..............., वाणमंतराणं पुच्छा, गो० ! पडहग सं० जोतिसियाणं पुच्छा ? गो० ! झल्लरिसंठाण सं० पं० सोहम्मगदेवाणं पुच्छा ! गो० ! उड्ढमुयंगागारसंठिए पं० एवं जाव अच्चुयदेवाणं गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा गो० ! पुप्फचंगेरि संठिए पं० अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा ?

गो० ! जवनालिया संठिते ओही पं० ।

प्रज्ञापना सूत्र पद ३३ (सूत्र ३१६)

असुरकुमाराणं भंते ! ओहिणा केवज्य खेत्तं जा० पा० ? गोयमा ! जह० पणवीसं जोयणाइं उक्को० असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० नागकुमाराणं–जह० पणवीसं जोयणाइं उ० संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जा० पा० एवं जाव थणिय-कुमारा।......वाणमंतराणं जहा नाकुमारा, जोइ-सियाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो० ! ज० संखेज्जे दीवसमुद्दे उक्कोसेण वि संखेज्जे दीवसमुद्दे, सोहम्मगदेवाणं भंते ! केव० खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्को० अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए हिट्ठिले चर-मंते तिरियं जाव असंखिज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सगाइं विमणाइं ओहिणा जाणंति पासंति, एवं ईसाणगदेवावि सणंकुमारदेवावि एवं चेव, नवरं

जाव अहे दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए हिट्ठिल्ले चरमंते, एवं माहिंददेवावि, बंभलोयलंतगदेवा तच्चाए पुढवीय हिट्ठिल्ले चरमंते महासुक्कसहस्सारगदेवा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते आणय पाणय आरणच्चुयदेवा अहे जाव पंचमाए धूमप्पभाए हेट्ठिल्ले चरमंते हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवा अधे जाव छट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले जाव चरमंते उवरिमगेविज्जगदेवाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जा० पा० ? गो० ! ज० अंगुलस्स असंखेज्जतिभागे उ० अधे सत्तमाए हे० च० तिरियं जाव असंखेज्जे दीवसमुद्दे उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ओ० जा० पा० अणुत्तरोववाइयदेवाणं भन्ते के० खेत्तं ओ० जा० पा० ? गो० संभिन्नं लोगनालिं ओ० जा० पा०

प्रज्ञापना अवधिपद ३३८ सू० ३१८

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥

सोहम्मीसाणदेवाणं कति लेस्साओ पन्नताओ ? गोयमा ! एगा तेऊलेस्सा पण्णत्ता । सणंकुमारमाहिंदेसु एगा पम्हलेस्सा एवं बंभलोगे वि पम्हा । सेसेसु एक्का सुक्कलेस्सा अणुत्तरोववातियाणं एक्का परमसुक्कलेस्सा ।

जीवाभिगम० प्रतिपत्ति ३ उद्दे० १ सूत्र २१४

प्रज्ञापना पद १७ उद्दे० १ लेश्याधिकार

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥

कप्पोपवण्णगा बारसविहा पण्णत्ता ।

प्रज्ञापना प्रथम पद सूत्र ५६

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥२४॥

बंभलोए कप्पे........लोगंतिता देवा पण्णत्ता ।

स्थानांग स्थान ८ सूत्र ६२३

सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥

सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥

स्थानांग स्थान ६ सूत्र ६८४

एएसु णं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतीया देवा परिवसंति, तं जहा--

सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठाए ॥२८॥

भगवती सूत्र ६ शतक ५ उद्देश

विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥

विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पराणत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा इत्यादि ।

प्रज्ञापना पद १५ इन्द्रियपद

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥

उववाइया....मणुश्रा (सेसा)तिरिक्खजोणिया ।

दशवैका० अध्याय षट्कायाधिकार

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिता ॥२८॥

असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालट्ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं.......।

नागकुमाराणं देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नता ? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओवमाइं देसुणाइं........सुवराणकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नता? गोयमा ! उक्कोसेणं दोपलिओव-

माइं देसूणाइं । एवं एएणं अभिलावेण.......जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं ।

प्रज्ञापना० पद ४ भवनपत्यधिकार, स्थिति विषय

सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२६॥

सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ॥३१॥

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥

अपरा पल्योपममधिकम् ॥३३॥

परतःपरतःपूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥३४॥

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिआ।
सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥ २२० ॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया।
ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥ २२१ ॥
सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेणं ठिई भवे।
सणकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥२२२॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं,साहिया दुन्नि सागरा ॥२२३॥
दस चेव सागराइं, उक्कोसेणं ठिई भवे।
बम्भलोए जहन्नेणं, सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२४ ॥
चउद्दस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे।
लन्तगम्मि जहन्नेणं, दस ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥

सत्तरस्स सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं, चोद्दस सागरोवमा ॥ २२६ ॥
अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारम्मि जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥२२७॥
सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥२२८॥
वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयम्मि जहन्नेणं, सागराअउणवीसई ॥२२९ ॥
सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणम्मि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥२३०॥
बावीसं सागराइं, उक्कोसेणं ठिईभवे ।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई ॥ २३१ ॥
तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमम्मि जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ २३२ ॥
चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बइयम्मि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥ २३३ ॥

पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥ २३४ ॥
छवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणुवीसई ॥ २३५ ॥
सागर सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पञ्चमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छव्वीसइ ॥ २३६ ॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसइ ॥ २३७ ॥
सागरा अउणतीसं , उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसइ ॥ २३८ ॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउण तीसई ॥ २३६ ॥
सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥ २४० ॥
तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुवि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कत्तीसई ॥ २४१ ॥

अजहन्नमणुक्कोसा, तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४२॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥

दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥१६०॥
तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६१॥

उत्तराध्ययन सूत्र अध्या० ३६

एवं जा जा पुव्वस्स उक्कोसठिई अत्थि ताओ ताओ परओ परओ जहण्णठिई णेअव्वा ।

(समन्वयकार)

भवनेषु च ॥३७॥

भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ।

उत्तरा० अध्य० ३६ गाथा २१७

व्यन्तराणाञ्च ॥३८॥

परा पल्योपमाधिकम् ॥३९॥

वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं ।

प्रज्ञापना० स्थितिपद ४

ज्योतिष्काणाञ्च ॥४०॥

तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥

पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २१९ ॥

उत्तरा० अध्य० ३६

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४२॥

लोगंतिकदेवाणं जहएणमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिती पएणत्ता ।

स्था० स्थान ८ सू० ६२३

व्याख्या० श० ६ उ० ५

इति श्री–जैनमुनि–उपाध्याय–श्रीमदात्माराम–महाराज–
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ।

पञ्चमोऽध्यायः

**अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्ग-
लाः ॥१॥**

चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पएणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ।

स्थानांग स्थान ४ उद्दे० १ सूत्र २५१
व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १० सूत्र ३०५

द्रव्याणि ॥२॥

जीवाश्च ॥३॥

कइविहाणं भंते ! दव्वा पएणत्ता ? गोयमा !

दुविहा परगणत्ता, तं जहा--"जीवदव्वा य अजीवदव्वा य।"

अनुयोग० सूत्र १४१

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥

रूपिणः पुद्गलाः ॥५॥

पंचत्थिकाए न कयाइ नासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ भुविं च भवइ अ भविस्सइ अ धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए, निच्चे अरूवी।

नंदि सूत्र० सूत्र ५८

पोग्गलत्थिकायं रूविकायं।

स्थानांगसूत्र स्थान ५ उद्दे० ३ सू०१

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्देश्य १०

आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥

निष्क्रियाणि च ॥७॥

धम्मो अधम्मो आगासं दव्वं इक्किकमाहियं ।
अणंताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजंतवो ॥

उत्तराध्ययन अध्य० २८ गाथा ८

अवट्ठिए निच्चे ।

नन्दि० द्वादशाङ्गी अधिकार सूत्र ५८

असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥८॥

चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला असंखेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगजीवे ।

स्थानांग० स्थान ४ उद्देश्य ३ सूत्र ३३४

आकाशस्याऽनन्ताः ॥ ९ ॥

आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ।

प्रज्ञापना पद ३ सूत्र १४

संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥ १० ॥ नाणोः ॥११॥

रूवी अजीवदव्वाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—"खंधा, खंधदेसा, खंधप्पएसा, परमाणुपोग्गला,....अणंता परमाणुपुग्गला, अणंता दुप्पएसिया खंधा जाव अणंता दसपएसिया खंधा अणंता संखिज्जपएसिया खंधा, अणंता असंखिज्जपएसिया खंधा, अणंता अणंतपएसिया खंधा।

प्रज्ञापना ५ वां पद

लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२॥

कतिविहेणं भंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प०, तं जहा—लोयागासे य अलोयागासे य। लोयागासे णं भंते ? किं जीवा जीवदेसा

जीवपदेसा अजीवा अजीवदेसा अजीवपएसा? गोयमा! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा, जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा--रूवीय अरूवी य जे रूवि ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा--खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला--जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा--धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा अधम्मत्थिकाए-नोधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा अद्धा समए॥

व्याख्या० श० २ उ० १० सूत्र १२१

अलोगागासे णं भंते! किं जीवा? पुच्छा तह

चेव गोयमा ! नो जीवा जाव नो अजीवप्पएसा एगं अजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुय-गुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ।

व्याख्या० श० २ उ० १० सू० १२२

धम्मो अधम्मो आगासं कालो पुग्गलजंतवो ।
एस लोगोत्ति पण्णत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

उत्तराध्ययन अध्य० २८ गाथा ७

धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥१३॥

धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ७

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गला-नाम् ॥१४॥

एगपएसो गाढा.......संखिज्जपएसो गाढा.... असंखिज्जपएसो गाढा।

प्रज्ञा० पञ्चम पर्यायपद अजीवपर्यवाधिकार

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥१५॥

लोअस्स असंखेज्जइभागे।

प्रज्ञापना पद २ जीवस्थानाधिकार

प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६॥

दीवं व......जीवेवि जं जारिसयं पुव्वकम्म-निबद्धं बोंदिं णिवत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा।

राजप्रश्नीयसूत्र सूत्र ७४

गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुप-कारः ॥१७॥

आकाशस्यावगाहः ॥१८॥

शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ॥१९॥

सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥२१॥

धम्मत्थिकाए णं जीवाणं आगमणगमणभासुम्मेसमणजोगा वइजोगा कायजोगा जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति । गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए ।

अहम्मत्थिकाए णं जीवाणं किं पवत्तति ? गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाणनिसीयण तुयट्टणमणस्स य एगत्तीभावकरणता जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाये

पवत्तंति। ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए।

आगासत्थिकाए णं भंते! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तति? गोयमा! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए एगेण वि से पुन्ने दोहिवि पुन्ने सयंपि माएज्जा। कोडिसएणवि पुन्ने कोडिसहस्संपि माएज्जा ॥१॥ अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए।

जीवत्थिकाएणं भंते! जीवाणं किं पवत्तति? गोयमा! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं, एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे णं जीवे।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

जीवे णं अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणप० केवलनाणप० मइअन्नाणप० सुयअण्णा-

णप० विभंगणाणप० चक्खुदंसणप० अचक्खुदंसणप० ओहिदंसणप० केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छइ० ।

व्या० प्र० शतक २ उ० १० सू० १२०

जीवो उवओगलक्खणो । नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य । उत्त० अध्य० २८ गाथा १०

पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा ? गोयमा ! पोग्गलत्थिकाए णं जीवाणं ओरालियवेउव्विय आहारए तेयाकम्मए सोइंदियचक्खिदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियमणजोगवयजोगकायजोगआणापाणाणं च गहणं पवत्तति । गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।

व्या० प्र० शतक १३ उ० ४ सू० ४८१

वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥

वत्तना लक्खणो कालो० ।

उत्तरा० अध्य० २८ गाथा १०

स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥

पोग्गले पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे पण्णत्ते । व्या० प्र० शतक १२ उ० ५ सू० ४५०

शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥

सद्दन्धयार-उज्जोओ पभा छाया तवो इ वा ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥
एगत्तं च पुहत्तं च संखा संठाणमेव च ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

उत्तरा० अध्य० २८

अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—परमाणु-पोग्गला नोपरमाणुपोग्गला चेव।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

भेदसङ्घातेभ्यः उत्पद्यन्ते ॥२६॥

भेदादणुः ॥२७॥

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति, तं जहा-सइं वा पोग्गला साहन्नंति परेण वा पोग्गला साहन्नंति। सइं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति।

स्था० स्थान २ उ० ३ सू० ८२

एगत्तेण पुहत्तेण खंधाय परमाणु य।

उत्तरा० अध्य० ३६ गा० ११

भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥

चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घड पड कड रहाइएसु दव्वेसु।

अनुयोग० दर्शन गुणप्रमाण सू० १४६

सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२६॥

सद्दव्वं वा ।

व्या० प्र० शत० ८ उ० ६ सत्पदद्वार

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥

माउयाणुओगे (उपन्ने वा विगए वा धुवे वा)।

स्थानांग स्थान १०

तद्भावाऽव्ययं नित्यम् ॥३१॥

परमाणुपोग्गलेणं भंते ! किं सासए असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए वन्नपज्जवेहिं जाव फास-पज्जवेहिं असासए ।

व्या० प्र० शतक १४ उ० ४ सू० ५१२

जीवा० प्र० ३ उ० १ सूत्र ७७

जीवाणं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा !

जीवा सियसासया सियअसासया से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जीवा सियसासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया भावट्ठयाए असासया से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सियसासया सियअसासया ! नेरइयाणं भंते ! किं सासया असासया ? एवं जहा जीवा तहा नेरइयावि एवं जाव वेमाणिया जाव सियसासया सियअसासया । से वं भंते ! से वं भंते ! व्या० श० ७ उ० २ सू० २७४

अर्पिताऽनर्पित सिद्धेः ॥३२॥

अप्पितणप्पिते । स्था० स्थान० १० सूत्र ७२७

स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः॥३३॥

न जघन्यगुणानाम् ॥३४॥

गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३५॥

द्व्यधिकादिगुणानान्तु ॥३६॥

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥३७॥

बंधणपरिणामे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-णिद्धबंधणपरिणामे लुक्खबंधणपरिणामे य—

समणिद्धयाए बंधो न होति समलुक्खयाए वि ण होति
वेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ॥१॥

णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएणं,
लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएणं।
णिद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो,
जहण्णवज्जो विसमो समो वा ॥२॥

प्रज्ञा० परि० पद १३ सूत्र १८५

गुणपर्यायवद्द्रव्यम् ॥३८॥

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ॥

उत्तरा० सूत्र अध्य० २८ गाथा ६

कालश्च ॥३९॥

छव्विहे दव्वे पण्णत्ते, तं जहा--धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमये अ, सेतं दव्वणामे ।

अनुयोग० द्रव्यगुण० सू० १२४

सोऽनन्तसमयः ॥४०॥

अणंता समया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत २५ उ० ५ सू० ७४७

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥

दव्वस्सिया गुणा ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २८ गाथा ६

तद्भावः परिणामः ॥४२॥

दुविहे परिणामे पराणत्ते, तं जहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य ।

प्रज्ञापना परिणाम पद १३ सू० १८१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-

संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ।

षष्ठोऽध्यायः

कायवाङ्मनःकर्मयोगः ॥१॥

तिविहे जोए पराणत्ते, तंजहा—मणजोए, वइजोए कायजोए ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक १६ उद्दे० १ सूत्र ५६४

स आस्रवः ॥२॥

पंच आसवदारा पराणत्ता, तं जहा—मिच्छत्तं, अविरई, पमाया, कसाया, जोगा ।

समवायांग समवाय ५

शुभः पुरायस्याऽशुभः पापस्य ॥३॥

पुराणं पावासवो तहा ।

उत्तराध्ययन २८ गाथा १४

सकषायाऽकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः ॥४॥

जस्स णं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं ईरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं संपरायकिरिया कज्जइ नो ईरियावहिया ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ७ उद्दे० १ सूत्र २६७

इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥५॥

पंचिंदिया पएणत्ता....चत्तारि कसाया पएणत्ता ....पंच अविरय पएणत्ता........पंचवीसा किरिया पएणत्ता........ स्थानांग स्थान २ उद्देश्य १ सूत्र ६०

इन्दिय १ कसाय २ अव्वय ३ जोगा ६ पंच १

चउ २ पंच ३ तिन्निकसाया किरियाओ पणवीस इमाओ अणुक्कमसो । नव तत्व प्रकरण गा० १४

तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥

जे केइ खुद्दका पाणा अदु वा संति महालया ।
सरिसं तेहिं वेरंति असरिसं ती व णोवदे ॥६॥
एएहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो ण विज्जई ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारं तु जाणए* ॥७॥

सूत्रकृताग श्रुतस्कन्ध २ अ० ५ गाथा ६-७

* व्याख्या—ये केचन क्षुद्रकाः सत्त्वाः प्राणिनः एकेन्द्रियद्वीन्द्रियादयोऽल्पकाया वा पञ्चेन्द्रिया अथवा महालया महाकायाः संति विद्यन्ते, तेषां च क्षुद्रकाणामल्पकायानां कुन्थ्वादीनां महानालयाः शरीरं येषां ते महालयाः हस्त्यादयस्तेषां च व्यापादने, सदृशं, वैरमिति, वज्रं कर्मविरोधलक्षणं वा वैरं तत्सदृशं समानम्, अल्पप्रदेशत्वात्सर्वजंतना-

अधिकरणं जीवाऽजीवाः ॥७॥

जीवे अधिकरणं ।

व्या० प्रज्ञ० श० १६ उ० १

एवं अजीवमवि ।

स्थानांग स्थान २ उ० १ सू० ६०

मित्येवमेकान्तेन नो वदेत्। तथा विसदृशम् असदृशं तद्व्यापत्तौ वैरं कर्मबन्धो विरोधो वा इन्द्रियविज्ञानकायानां विसदृशत्वात् सत्यपि प्रदेश अल्पत्वेन सदृशं वैरमित्येवमपि नो वदेत्। यदि हि वध्यापेक्ष एव कर्मबन्धः स्यात्तदा तद्वशात्कर्मणोऽपि सादृश्यमसादृश्यं वा वक्तुं युज्यते। न च तद्वशादेव बंधः, अपित्वध्यवसायवशादपि। ततश्च तीव्राध्यवसायिनोऽल्पकाय-सत्त्वव्यापादनेऽपि महद्वैरम। अकामस्य तु महाकायसत्त्वव्या-पादनेऽपि स्वल्पमिति ॥६॥

एतदेव सूत्रेणैव दर्शयितुमाह आभ्यामनन्तरोक्ताभ्यां स्थानाभ्यामनयर्वा स्थानयोरल्पकायमहाकायव्यापादनापादित-

आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोग-कृतकारिताऽनुमतकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥

कर्मबन्धसदृशत्वयोर्व्यवहरणं व्यवहारो निर्युक्तिकत्वान्नयुज्यते। तथाहि—न वध्यस्य सदृशत्वमसदृशत्वं चैकमेव। कर्मबन्धस्य कारणम्। अपि तु वधकस्य **तीव्रभावो मन्दभावो ज्ञात-भावोऽज्ञातभावो** महावीर्यत्वमल्प**वीर्य**त्वं चेत्येतदपि। तदेवं वध्यवधकयोर्विशेषात्कर्मबन्धविशेष इत्येवं व्यवस्थिते वध्यमेवाश्रित्य, सदृशत्वासदृशत्वव्यवहारो न विद्यत इति। तथाऽनयोरेव स्थानयोः प्रवृत्तस्यानाचारं, विजानीयादिति। तथाहि—यज्जीवसाम्यात्कर्मबन्धसदृशत्वमुच्यते, तदयुक्तम्। यतो न हि जीवव्यापत्त्या हिंसोच्यते, तस्य शाश्वतत्वेन व्यापादयितु-मशक्यत्वात्। अपि त्विन्द्रियादिव्यापत्त्या तथाचोक्तम्—पञ्चेन्द्रि-याणि, त्रिविधं बलं च उच्छ्वासनिःश्वासमथान्यदायुः। प्राणाः

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।

उ० अध्य० २४ गाथा २१

तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कायणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।

दशवैकालिक अ० ४

दर्शने भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥१॥ इत्यादि । अपि च भावमव्यपेक्षस्यैव, कर्मबन्धोऽभ्युपेतु युक्तः । तथाहि—वैद्यस्यागममव्यपेक्षस्य, सम्यक् क्रिया कुर्वतो, यद्यप्यातुरविपत्तिर्भवति, तथापि न वैरानुषङ्गो भावदोषाभावाद् । अपरस्य तु सर्पबुद्ध्या रज्जुमपि घ्नतो भावदोषात्कर्मबन्धः । तद्रहितस्य तु न बन्ध इति । उक्तं चागमे, उच्चालयम्मिपाए । इत्यादि तण्डुलमत्स्याख्यानकं तु सुप्रसिद्धमेव । तदेवंविधवध्यवधकभावापेक्षया स्यात् । सदृशं स्यादसदृशत्वमिति । अन्यथाऽनाचार इति ॥७॥

वृत्ति शीलाङ्काचार्य कृत

जस्स णं कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सूत्र १८

निवर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥६॥

णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव संजोयणाधिकरणिया चेव। स्था० स्थान २ सू० ६०

आइये निक्खिवेज्जा। उत्तरा० अ० २५ गाथा १४

पवत्तमाणं। उत्तरा० अ० २४ गाथा २१-२३

तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः॥१०॥

णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? गोयमा! नाणपडिणीययाए णाणनिण्हवणयाए णाणंतराएणं णाणप्पदोसेणं

णाणच्चासायणाए णाणविसंवादणाजोगेणं,............
एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं।

व्या० प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६ सू० ७५-७६

दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवना-न्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेदस्य ॥११॥

परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरियावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं अस्साया-वेयणिज्जा कम्मा किज्जन्ते।

व्याख्या० श० ७ उ० ६ सू० २८६

भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमादि-योगःक्षान्तिःशौचमिति सद्वेद्स्य ॥१२॥

पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एवं खलु गोयमा! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा किज्जंति।

व्या० प्रज्ञप्ति शतक ७ उ० ६ सू० २८६

केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥

पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोधियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा–अरहंताणं अवन्नं वदमाणे १, अरहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे २, आयरियउवज्झायाणं अवन्नं वदमाणे ३, चउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वदमाणे ४, विवक्कतवंभचेराणं देवाणं अवन्न वदमाणे।

स्था० स्थान ५ उ० २ सू० ४२६

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥

मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोगपुच्छा, गोयमा ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वलोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचारित्तमोहणिज्जाए। व्या० प्र० शतक ८ उ० ९ सू० ३५१

बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा–महारम्भताते महापरिग्गहयाते पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा–माइल्लताते णियडिल्लताते अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥

स्वभावमार्दवञ्च ॥१८॥

अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया।

औपपातिक सूत्र संख्या १२४

चउहिं ठाणेहिं जीवामणुस्सत्ताते कम्मं पगरेंति: तं जहा–पगतिभद्दताते पगतिविणीययाए साणुक्कोसयाते अमच्छरिताते।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सू० ३७३

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेंति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो॥

उत्तरा० सू० अध्य० ७ गाथा २०

निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१६॥

एगंतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरियाउयंपि पकरेइ मणुस्साउयंपि पकरेइ देवाउयंपि पकरेइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० १ उ० ८ सूत्र ६३

सरागसंयमसंयमाऽसंयमाऽकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा–सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए ।

स्था० स्थान ४ उ० ४ सूत्र ३७३

सम्यक्त्वं च ॥२१॥

वेमाणियावि····जइ सम्मद्दिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उवव-

ज्जंति किं संजतसम्मदिट्ठीहिंतो असंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्ज० हिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! तीहिंतोवि उववज्जंति एवं जाव अच्चुगो कप्पो ।

प्रज्ञापना पद ६

योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥

तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥

सुभनामकम्म सरीरपुच्छा ? गोयमा ! कायउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणजोगेणं सुभनामकम्मा सरीरजावप्पयोगबन्धे, असुभनामकम्मा सरीरपुच्छा ? गोयमा ! कायअणुज्जुवयाए जाव विसंवायणाजोगेणं असुभनामकम्मा जाव पयोगबन्धे ।   व्या० श० ८ उ० ६

दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शील-
व्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसं-
वेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमा-
धिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रव-
चनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभा-
वना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकर-
त्वस्य ॥२४॥

अरहंतसिद्धपवयणगुरुथेरबहुस्सुए तवस्सीसुं ।
वच्छलया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ॥१॥

दंसण विणए आवास्सए य सीलव्वए निरइयारं ।
खणलव तव च्चियाए वेयावच्चे समाहीय ॥२॥

अप्पुव्वणाणगहणे सुयभत्ती पवयणे पभावणया ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥३॥

ज्ञाताधर्म कथांग अ० ८ सू० ६४

परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥

जातिमदेणं कुलमदेणं बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीरजावपयोगबन्धे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सूत्र ३५१

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥

जातिअमदेणं कुलअमदेणं बलअमदेणं रूवअमदेणं तवअमदेणं सुयअमदेणं लाभअमदेणं इस्सरियंअमदेणं उच्चागोयकम्मासरीरजावपयोगबंधे ।

व्या० शतक ८ उ० ६ सू० ३५१

विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥ २७ ॥

दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगंतराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मा सरीरप्पयोगबन्धे । व्या० प्र० श० ८ उ० ६ सू० ३५१

इति श्री–जैनमुनि–उपाध्याय–श्रीमदात्माराम–महाराज–संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ।

सप्तमोऽध्यायः

हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥

देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥

पंच महव्वया पगणत्ता, तं जहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं। जाव सव्वातो परिग्गहातो वेरमणं। पंचाणुव्वता पगणत्ता, तं जहा–थूलातो पाणाइवायातो वेरमणं थूलातो मुसावायातो वेरमणं थूलातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सदारसंतोसे इच्छापरिमाणे। स्था० स्थान ५ उ० १ सू० ३८९

तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥

पंचजामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ता ।

समवायांग समवाय २५

(१) तस्स इमा पंच भावणातो पढमस्स वयस्स होंति पाणानिवाय वेरमण परिरक्खणट्ठयाए ।

प्रश्न व्या० १ संवर० सू० २३

(२) तस्स इमा पंच भावणा तो बितियस्स वयस्स अलिय वयणस्स वेरमण परिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० २ संवर० सू० २५

(३) तस्स इमा पंच भावणातो ततियस्स होंति परदव्वहरण वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ३ संवर० सू० २६

(४) तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थयस्स होंति अबंभचेर वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्र० व्या० ४ संवर० सू० २७

(५) तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स

वयस्स होंति परिग्गह वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए ।

प्रश्न व्या० ५ संवरद्वार सू० २६

वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ॥४॥

ईरिया समिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयभायणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ।

समवायांग, समवाय २५

क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च ॥५॥

अणुवीति भासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे । समवायांग, समवाय २५

शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माऽविसंवादाः पञ्च ॥६॥

उग्गह अणुराणवणया उग्गहसीमजाणणया सयमेव उग्गहं अणुगिरहणया साहम्मियउग्गहं अणुराणविय परिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुराणविय पडिभुंजणया । सम० समय २५

स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च ॥७॥

इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्जणया इत्थीकहवज्जणया इत्थीणं इंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरयपुव्वकीलिआणं अणणुसरणया पणीताहारवज्जणया । सम० समवाय २५

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥८॥

सोइन्दियरागोवरई चक्खिदियरागोवरई घाणिं-दियरागोवरई जिब्भिदियरागोवरई फासिंदियरागो-वरई ।

सम० समवाय २५

हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥

संवेगिणी कहा चउव्विहा पराणत्ता, तं जहा-इहलोगसंवेगणी परलोगसंवेगणी आतसरीरसंवे-गणी परसरीरसंवेगणी । णिव्वेयणी कहा चउव्विहा पराणत्ता, तं जहा-इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥१॥ इहलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥२॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसं-जुत्ता भवंति ॥३॥ परलोगे दुच्चिन्ना कम्मा परलोये दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥४॥

इहलोगे सुचिन्ना कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति ॥१॥ इहलोगे सुचिन्ना कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति, एवं चउभंगो।

स्था० स्थान ४ उ० २ सूत्र २८२

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनयेषु ११

मित्तिं भूएहिं कप्पए····

सूत्र कृतांग० प्रथम श्रुतस्कंध अध्या० १५ गाथा ३

सुप्पडियाणंदा। औप० सू० १ प्र० २०

साणुक्कोस्सयाए। औप० भगवदुपदेश

मज्झत्थो निज्जरापेही समाहिमणुपालए।

आचारांग प्र० श्रुतस्कंध अ० ८ उ० ७ गाथा ५

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्याऽर्थम् ॥१२॥

संवेगकारणत्था ।

समवाय सू० विपाकसूत्राधिकार

भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावेत्तु अप्पयं ।

उत्तरा० अध्य० १६ गाथा० ६४

अणिच्चे जीवलोगम्मि ।

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलम् ।

उत्तरा० अध्य० १८ गाथा ११, १३

प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥

तत्थ णं जेते पमत्तसंजया ते असुहं जोगं पडुच्च आयारंभा परारंभा जाव णो अणारंभा ।

व्या० प्र० शतक १ उ० १ सूत्र ४८

असदभिधानमनृतम् ॥१४॥

अलियं ··· असच्चं ··· संधत्तणं ··· असब्भाव ···
अलियं । प्र० व्या० आस्रव० २

अदत्तादानं स्तेयम् ॥१५॥

अदत्तं ··· तेणिक्को । प्र० व्या० आस्रव० ३

मैथुनमब्रह्म ॥१६॥

अबम्भ मेहुणं । प्र० व्या० आस्रवद्वार ४

मूर्च्छा परिग्रहः ॥१७॥

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो ।
दश० अध्ययन ६ गाथा २१

निश्शल्यो व्रती ॥१८॥

पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं–मायासल्लेणं नियाण सल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ।
आवश्यक० चतु० आवश्य० सूत्र ७

आगार्यनगारश्च ॥१९॥

चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा-आगार-चरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

स्थानांग स्थान २ उ० १

अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥

आगारधम्म····अणुव्वयाइं इत्यादि ।

औपपातिक सूत्र श्रीवीरदेशना

दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिक-प्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणा-तिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥

आगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तं जहा-पंच अणुव्वयाइं तिण्णि गुणवयाइं चत्तारि सिक्खा-वयाइं ।

तिण्णि गुणव्वयाइं, तं जहा-अणत्थदंडवेरमणं दिसिव्वयं, उपभोगपरिभोगपरिमाणं । चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा-सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासे अतिहिसंविभागे ।

औपपातिक श्रीवीर देशना सूत्र ५७

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥

अपच्छिमा मारणंतिआ संलेहणा जूसणाराहणा । औपपा० सू० ५७

शङ्काकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः॥२३॥

सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-संका कंखा वितिगिच्छा,

परपासंडपसंसा, परपासंडसंथवो।

उपासकदशांग अध्याय १

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम् ॥२४॥

बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपान-निरोधाः ॥२५॥

थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा–वहबंधच्छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए।

उपा० अ० १

मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेख-क्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः २६

थूलगमुसावायस्स पंच अइयारा जाणियव्वा। न समायरियव्वा। तं जहा–सहस्साभक्खाणे रहसा-

भक्खाणे, सदारमंतभेए मोसोवएसेए कूडलेहकरणे य। उपा० अ० १

स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥

थूलगअदिण्णादाणस्स पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा–तेनाहडे, तक्करप्पउगेविरुद्धरज्जाइकम्मे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे।

परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥

सदारसंतोसिए पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अणंगकीडा, परविवाहकरणे कामभोएसु तिव्वाभिलासो। उपा० अध्या० १

क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥

इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा-धणधन्नपमाणाइक्कमे खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णपरिमाणाइक्कमे दुप्पयचउप्पयपरिमाणाइक्कमे कुवियपमाणाइक्कमे। उपा० अध्या० १

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ॥३०॥

दिसिव्वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा। न

समायरियव्वा, तं जहा-उड्ढदिसिपरिमाणाइक्कमे, अहोदिसिपरिमाणाइक्कमे, तिरियदिसिपरिमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढिस्स, सअंतरड्ढा।

उपा० अध्या० १

आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ॥३१॥

देसावगासियस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा-आणवणपयोगे पेसवणपओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, वहियापोग्गलपक्खिवे।

उपा० अध्या० १

कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥३२

अणट्ठादंडवेरमणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-कन्दप्पे

कुक्कुइए मोहरिए संजुत्ताहिगरणे उवभोगपरि-
भोगाइरित्ते । उपा० अध्या० १

योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुप-स्थानानि ॥३३॥

सामाइयस्स पंच अइयारा समणोवासएणं जाणियव्वा । न समायरियव्वा, तं जहा–मणदुप्पणि-हाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे, सामाइ-यस्स सति अकरणयाए, सामाइयस्स अणवट्ठि-यस्स करणया । उपा० अध्या० १

अप्रत्यवेक्षिताऽप्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थाना-नि ॥३४॥

पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंच अइयारा

जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा-अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहियहियदुप्पडिलेहिय उच्चार-पासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय उच्चारपास-वणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया।

उपा० अध्या० १

सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःप-काहाराः ॥३५॥

भोयणतो समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणि-यव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे उप्पउलिओसहिभक्खणया, दुप्पोलितोसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया।

उपा० अध्या० १

सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमा-त्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥

अहासंविभागस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा-सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपेहणया, कालाइक्कमदाणे परोवएसे मच्छ-रिया। उपा० अध्या० १

जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखा-नुबन्धनिदानानि ॥३७॥

अपच्छिममारणंतियसंलेहणा भूसणाराहणाए पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा-इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविया-संसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्प-ओगे। उपा० अध्या० १

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥

समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडि-लाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारएणं तमेव समाहिं पडिलभइ ।

व्या० श० ७ उ० १ सूत्र २६३

समणो वासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ? गोयमा ! जीवियं चयति उच्चयं चयति दुक्करं करेति दुल्लहं लहइ बोहिं बुज्झइ तओ पच्छा सिज्झंति जाव अंतं करेति ।

व्या० प्र० शत० ७ उ० १ सू० ३६४

विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं तवस्सिविसुद्धेण तिक-

रणसुद्धेणं पडिगाहसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं। व्या० प्र० शत० १५ सू० ५४१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
सप्तमोऽध्यायः समाप्तः।

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्यादर्शनाऽविरतिप्रमादकषाय-
योगा बन्धहेतवः ॥१॥

पंच आसवदारा पगणत्ता, तं जहा-मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा। समवा० समवाय ५

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्‌गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥

जोगबंधे कसायबंधे। समवा० समवाय ५

दोहिं ठाणेहिं पापकम्मा बंधंति, तं जहा-रागेण य दोसेण य। रागे दुविहे पगणत्ते, तं जहा-माया

य लोभे य। दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-कोहे य माणे य।

स्था० स्थान २ उ० २

प्रज्ञापना पद २३ सू० ५

प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥

चउव्विहे बन्धे पण्णत्ते, तं जहा-पगइबंधे ठिइबन्धे अणुभावबन्धे पएसबन्धे।

समवायांग समवाय ४

आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥

अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा-णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, वेदणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं।

प्रज्ञापना पद २१ उ० १ सू० २८८

पञ्चनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपञ्चभेदा यथाक्रमम् ॥५॥

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ॥६॥

पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पएणत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे सुयणाणावरणिज्जे, ओहिणाणावरणिज्जे, मणपज्जवणाणावरणिज्जे केवलणाणावरणिज्जे ।

स्थानांग स्थान ५ उ० ३ सू० ४६४

चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥

णवविधे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पराणत्ते, तं जहा–निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे, अवधिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे।

स्थानांग स्थान ६ सू० ६६८

सदसद्वेद्ये ॥८॥

सातावेदणिज्जे य असायावेदणिज्जे य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २६३

दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्री-

पुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥६॥

मोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पराणत्ते, तं जहा-दंसणमोहणिज्जे य चरित्तमोहणिज्जेय । दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पगणत्ते ? गोयमा ! तिविहे पराणत्ते, तं जहा-सम्मत्तवेदणिज्जे, मिच्छत्तवेदणिज्जे, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे ।

चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पराणत्ते, तं जहा-कसायवेदणिज्जे नोकसायवेदणिज्जे ।

कसायवेदणिज्जे णं भंते ! कतिविधे पराणत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पराणत्ते, तं जहा-अणं-

ताणुबंधीकोहे अणंताणुबंधी माणे अ० माया अ० लोभे, अपच्चक्खाणे कोहे एवं माणे माया लोभे, पच्चक्खणावरणे कोहे एवं माणे माया लोभे संजलण कोहे एवं माणे माया लोभे ।

नोकसायवेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ?

गोयमा ! णवविधे पराणत्ते, तं जहा-इत्थीवेय-वेयणिज्जे, पुरिसवे० नपुंसगवे० हासे रती अरती भए सोगे दुगुंछा ।

प्रज्ञा० कर्मबन्ध० २३ उ० २

नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥

आउएणं भंते ! कम्मे कइविहे पराणत्ते ? गोयमा ! चउविहे पराणत्ते, तं जहा-णेरइयाउए, तिरिय-आउए, मणुस्साउए, देवाउए ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयःप्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च॥ ११

णामेणं भंते ! कम्मे कतिविहे पराणत्ते ? गोयमा ! बायालीसतिविहे पराणत्ते, तं जहा–१ गतिणामे, २ आतिणामे, ३ सरीरणामे, ४ सरीरोवंगणामे, ५ सरीरबंधणणामे, ६ सरीरसंघयणणामे, ७ संघायणणामे, ८ संठाणणामे, ६ वरणणामे, १० गंधणामे, ११ रसणामे, १२ फासणामे, १३ अगुरुलघुणामे,

१४ उवघायणामे, १५ पराघायणामे, १६ आणुपुव्वी-णामे, १७ उस्सासणामे, १८ आयवणामे, १९ उज्जो-यणामे, २० विहायगतिणामे, २१ तसणामे, २२ थावरणामे, २३ सुहुमणामे, २४ बादरणामे, २५ पज्जत्तणामे, २६ अपज्जत्तणामे, २७ साहारणस-रीरणाम, २८ पत्तेयसरीरणामे, २९ थिरणामे, ३० अथिरणामे, ३१ सुभणामे, ३२ असुभणामे, ३३ सुभगणामे, ३४ दुभगणामे, ३५ सूसरणामे, ३६ दूसरणामे, ३७ आदेज्जणामे, ३८ अणादेज्जणामे, ३९ जसोकित्तिणामे, ४० अजसोकित्तिणामे, ४१ णिम्माणणामे, ४२ तित्थगरणामे ।

प्रज्ञापना उ० २ पद २३ सू० २९३

समवायांग० स्थान ४२

उच्चैर्नीचैश्च ॥१२

गोए णं भंते ! कम्मे कइविहे पराणत्ते ? गोयमा !

दुविहे पराणत्ते, तं जहा–उच्चागोए य नीयागोए य ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २६३

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥१३॥

अंतराए णं भंते ! कम्मे कतिविधे पराणत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पराणत्ते, तं जहा–दाणंतराइए, लाभंतराइए, भोगंतराइए, उवभोगंतराइए, वीरियंतराइए ।

प्रज्ञापना पद २३ उद्दे० २ सू० २६३

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥

उदहीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडीओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥

आवरणिज्जाण दुरहंपि, वेयाणिज्जे तहेव य।
अन्तराए य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३

सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥

उदहीसरिसनामाण, सत्तरिं कोडिकोडीओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्ययन ३३ गाथा २१

विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥

उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अध्य० ३३ गाथा २३

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥१७॥

तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।
ठिइ उ आउकम्मस्स, अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा २२

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥१८॥

सातावेदणिज्जस्स........जहण्णेणं बारसमुहुत्ता ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सू० २९३

नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥

नामगोयश्राणं जहण्णेणं अट्ठमुहुत्ता ।

भगवतीसूत्र शतक ६ उ० ३ सू० २३६

जसोकित्तिनामाएणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णे-अट्ठमुहुत्ता । उच्चगोयस्स पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं अट्ठमुहुत्ता ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २ सूत्र २९४

शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ॥२०॥

अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १९-२२

विपाकोऽनुभवः ॥२१॥

स यथानाम ॥२२॥

अणुभागफलविवागा । समवायांग विपाकश्रुत वर्णन
सव्वेसिं च कम्माणं ।

प्रज्ञापना पद २३ उ० २

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १७

ततश्च निर्जरा ॥२३॥

उदीरिया वेइया य निज्जिन्ना ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शत० १ उ० १ सू० ११

नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥२४॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आउयं ॥

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

उत्तराध्ययन अ० ३३ गाथा १७-१८

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥२५॥

अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

सायावेदणिज्ज.......तिरिश्राउए मणुस्साउए देवाउए, सुहणामस्सणं.......उच्चागोत्तस्स...........
असाया वेदणिज्ज इत्यादि ।

प्रज्ञापना सूत्र पद २३ उ० १

एगे पुण्णे एगे पावे । स्थानांग स्थान १ सूत्र १६

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।

नवमोऽध्यायः

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥

निरुद्धासवे (संवरो) ।

एगे * संवरे ।

स्थाना० स्था० १ उत्तराध्ययन अ० २६ सूत्र ११

स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषह-जयचारित्रैः ॥२॥

तपसा निर्जरा च ॥३॥

* संव्रियते कर्मकारणं प्राणातिपातादि निरुध्यते येन परिणामेन स संवरः आश्रवनिरोध इत्यर्थः । इति वृत्तिकारः ॥

समई गुत्ती धम्मो अणुपेह परीसहा चरित्तं च ।
सत्तावन्नं भेया पणतिगभेयाइं संवरणे ॥
स्थानांग वृत्ति स्थान १

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥
उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ६

सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥

गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ।
उत्तराध्ययन अ० २४ गाथा २६

ईर्याभाषैषणाऽऽदाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥

पंच समिईओ पण्णत्ता, तं जहा—ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तनिक्खे-

वणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठा-
वणियासमिई । समवायांग समवाय ५

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥

दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा—१ खंती, २ मुत्ती, ३ अज्जवे, ४ मद्दवे, ५ लाघवे, ६ सच्चे, ७ संजमे, ८ तवे, ९ चियाए, १० बंभचेरवासे ।

समवायांग समवाय १०

अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥७

१ अणिच्चाणुप्पेहा, २ असरणुप्पेहा, ३ एगत्ताणुप्पेहा, ४ संसाराणुप्पेहा।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

अरणत्ते [अणुप्पेहा] ५—अन्ने खलु णातिसंजोगा अन्नो अहमंसि। असुइअणुप्पेहा ६।

सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध २ अ० १ सू० १३

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं॥

उत्तराध्ययन अ० १६ गाथा १२

अन्नायाणुप्पेहा ७।

स्थानांग स्थान ४ उ० १ सू० २४७

संवरे [अणुप्पेहा] ८—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी।
जा निस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी॥

उत्तराध्ययन अध्ययन २३ गाथा ७१

णिज्जरे [अणुप्पेहा] ९। स्थानांग स्थान १ सू० १६

लोगे [अणुप्पेहा] १० ।

स्थानांग स्थान १ सू० ५

बोहिदुल्लहे [अणुप्पेहा] ११ ।

संवुज्झह किं न बुज्झह संबोही खलु पेच्च दुल्लहा ।
णो हूवणमंति राइओ नो सुलभं पुणरावि जीवियं ॥

सूत्रकृतांग प्रथम श्रुतस्कन्ध गाथा १

धम्मे [अणुप्पेहा] १२—

उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।

उत्तराध्ययन अ० १० गाथा १८

मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ॥८॥

नो विनिहन्नेज्जा ।

उत्तराध्ययन अ० २ प्रथम पाठ

सम्मं सहमाणस्स....णिज्जरा कज्जति ।

स्थानांग स्थान ५ उ० १ सू० ४०६

**क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकना-
ग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशव-
धयाचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्का-
रपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ॥६॥**

बावीस परिसहा पण्णत्ता, तं जहा—१ दिगिंछापरीसहे, २ पिवासापरीसहे, ३ सीतपरीसहे, ४ उसिणपरीसहे, ५ दंसमसगपरीसहे, ६ अचेलपरीसहे, ७ अरइपरीसहे, ८ इत्थीपरीसहे, ९ चरिआपरीसहे, १० निसीहियापरीसहे, ११ सिज्जापरीसहे, १२ अक्कोसपरीसहे, १३ वहपरीसहे, १४ जायणापरीसहे, १५ अलाभपरीसहे, १६ रोगपरीसहे, १७ तणफासपरीसहे, १८ जल्लपरीसहे, १९ सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २० पण्णापरीसहे, २१ अण्णाणपरीसहे, २२ दंसणपरीसहे ।

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयो-श्चतुर्दश ॥१०॥

एकादश जिने ॥११॥

बादरसाम्पराये सर्वे ॥१२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्या-क्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥१५॥

वेदनीये शेषाः ॥१६॥

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नै-कोनविंशतेः ॥१७॥

नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा--पन्नापरीसहे नाणपरीसहे य । वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एक्कारसपरीसहा समोयरंति, तंजहा–

पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे ।
तणफास जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जंमि ॥ १ ॥

दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ । चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? गोयमा ! सत्तपरीसहा समोयरंति, तं जहा—

अरती अचेल इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे।
सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहंमि सत्ते ते ॥१॥

अंतराइए णं भंते! कम्मे कति परीसहा समोयरंति? गोयमा! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ। सत्तविहबंधगस्स णं भंते! कति परीसहा पराणत्ता? गोयमा! बावीसं परीसहा पराणत्ता, वीसं पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेति णो तं समयं निसीहियापरीसहं वेदेति जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ।

अट्ठविहबंधगस्स णं भंते! कतिपरीसहा पराणत्ता? गोयमा! बावीसं परीसहा पराणत्ता, तं जहा-छुहापरीसहे पिवासापरीसहे सीयप० दंसप०

मसगप० जाव अलाभप० एवं अट्ठविहबंधगस्स वि सत्तविहबंधगस्स वि ।

छव्विहबंधगस्स णं भंते! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पराणत्ता ? गोयमा! चोद्दस परीसहा पराणत्ता । बारस पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ । जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ । जं समयं चरिया परिसहं वेदेइ णो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ । जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति णो त समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।

एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परिसहा पराणता ? गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विहबंधगस्स णं । एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परिस्सहा पराणता ? गोयमा ! एक्कारस परीसहा पराणता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।

अबंधगस्स णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पराणत्ता ? गोयमा ! एकारस्स परीसहा पराणत्ता, नव पुण वेदेइ। जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ। जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ। जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति। जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ।
व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ८ उ० ८ सू० ३४३

सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्परायययथाख्यातमिति चारित्रम् ॥१८॥

सामाइयत्थ पढमं, छेदोवट्ठावणं भवे बीयं।
परिहारविसुद्धीयं, सुहुम तह संपरायं च ॥ ३२ ॥

अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एवं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

उत्तराध्ययन अ० २८ गाथा ३२-३३

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥ १६ ॥

बाहिरए तवे छव्विहे पएणत्ते, तं जहा–अणसण ऊणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो पडिसंलीणया वज्झो (तवो होई) ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥

अब्भितरए तवे छव्विहे पएणत्ते, तं जहा—

पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ, झाण विउसग्गो ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥

आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः २२

णवविधे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा-आलोअणारिहे पडिक्कम्मणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउसग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे ।

स्थानांग स्थान ६ सू० ६८८

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥

विणए सत्तविहे, पण्णत्ते तं जहा-णाणविणए

दंसणविणए चरित्तविणए मणविणए वइविणए कायविणए लोगोवयारविणए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥

वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा-आयरियवेआवच्चे उवज्झायवेआवच्चे सेहवेआवच्चे गिलाणवेआवच्चे तवस्सिवे आवच्चे थेरवेआवच्चे साहम्मिअवेआवच्चे कुलवेआवच्चे गणवेआवच्चे संघवेआवच्चे ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥

सज्झए पंचविहे पराणत्ते, तं जहा—वायणा पडिपुच्छणा, परिअट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥२६॥

विउसग्गे दुविहे पराणत्ते, तं जहा-दव्वविउसग्गे य भावविउसग्गे य ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्त्तात् ॥२७॥

केवतियं काल अवट्ठियपारिणामे होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेण अन्तमुहुत्तं ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७७०

अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावत्थाणमेगवत्थुम्मि ।
छउमत्थाणं झाणं जोगनिरोहो जिणाणं तु ॥

स्थानांगवृत्ति० स्थान ४ उ० १ सू० २४७

आर्त्तरौद्रधर्मशुक्लानि ॥२८॥

चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा-अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०२

परे मोक्षहेतुः ॥२६॥

धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ।

उत्तराध्ययन अ० ३० गाथा ३५

आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-अमणुन्नसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग सति समन्नागए यावि भवइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू०८०२

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥

मणुन्नसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समरणागते यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

वेदनायाश्च ॥३२॥

आयंकसंपओगसंपउत्ते तस्स विप्पओग सति समरणागए यावि भवति ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

निदानश्च ॥३३॥

परिजुसितकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समरणागए यावि भवइ ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७सू० ८०३

तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३४

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिये।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहावए॥
उत्तराध्ययन अध्ययन ३० गाथा ३५

हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥

रोद्दज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेयाणुबंधी सारक्खणाणुबंधी।
व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम् ॥३६॥

धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए।
व्याख्याप्रज्ञप्तिश० २५ उ० ७ सू० ८०३

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥

सुहमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य,......उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसाय वीयरायचरित्तारिया य। प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

परे केवलिनः ॥३८॥

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य।

प्रज्ञापनासूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥

सुक्के झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-१ पुहुत्तवितक्के सवियारी, २ एगत्तवितक्के अवियारी,

३ सुहुमकिरिते अप्पडिवाती, ४ समुच्छिन्नकिरिए अप्पडिवाती ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ७ सू० ८०३

त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥४०॥

सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य,........उवसंतकसायवीयरायचरित्तारिया य खीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायचरित्तारिया य ।

प्रज्ञापना सूत्र पद १ चारित्रार्यविषय

एकाश्रये सवितर्कविचारे पूर्वे ॥४१॥

अविचारं द्वितीयम् ॥ ४२ ॥

वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥

विचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः॥४६

उप्पायट्ठितिभंगाई पज्जयाणं जमेगदव्वमि ।
नाणानयाणुसरणं पुव्वगयसुयाणुसारेणं ॥१॥
सवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं पढमसुक्कं ।
होति पुहुत्तवियक्कं सवियारमरागभावस्स ॥२॥
जं पुण सुनिप्पकंपं निवायसरणप्पईवमिव चित्तं ।
उप्पायट्ठिइभंगाइयाणमेगंमि पज्जाए ॥३॥
अवियारमत्थवंजणजोगंतरओ तयं बिइयसुक्कं ।
पुव्वगयसुयालंबणमेगत्तवियक्कमवियारं ॥४॥

स्थानाङ्ग सूत्र वृत्ति स्था० ४ उ० १ सू० २४७

सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽ-

संख्येयगुणनिर्जराः ॥४५ ॥

कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउदस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—....अविरयसम्मदिट्ठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टीबायरे अनिअट्टिबायरे सुहुमसंपराए उवसामए वा खवए वा उवसंतमोहे खीणमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली ।

समवायांग समवाय १४

पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ॥४६॥

पंच णियंठा पण्णत्ता, तं जहा—पुलाए बउसे कुसीले णियंठे सिणाए ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

पडिसेवणा णाणे तित्थे लिंग-खेत्ते काल गइ संजम...... लेसा ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ५ सू० ७५१

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-

संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये

नवमोऽध्यायः समाप्तः ।

दशमोऽध्यायः

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥१॥

खीणमोहस्स णं अरहओ तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति, तं जहा–नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतराइयं।

स्थानांग स्थान ३ उ० ४ सू० २२६

तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अन्तराइयं, एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २९ सू० ७१

बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्म विप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥

अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ।

उत्तराध्ययन अध्ययन २६ सू० ७२

औपशमिकादिभव्यत्वानाश्च ॥३॥

नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए ।

प्रज्ञापना पद १८

अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ॥४॥

* खीणमोहे (केवलसम्मत्तं) केवलणाणी,

---

* सिद्धा सम्मादही (सिद्धाः सम्यग्दृष्टिः) प्रज्ञापना १६ सम्यक्त्व पद ।

केवलदंसी सिद्धे ।

अनुयोगद्वारसूत्र षण्णामाधिकार सू० १२६

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥

अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडिओ खवेत्ता गगण-तलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपतिट्ठाणा भवन्ति ।

ज्ञाताधर्मकथांग अध्ययन ६ सू० ६२

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथा-गतिपरिणामाच्च ॥६॥

आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपा-लाबुवदेरण्डबीजवदग्निशिखावच्च॥७॥

अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पन्नायति ? हंता अत्थि, कहन्नं भंते! अकम्मस्स गती पन्नायति ?

गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गतिपरिणामेणं बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता । कहन्नं भंते ! निस्संगयाए निरंगणयाए गइपरिणामेणं बंधणछेयणयाए निरंधणयाए पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नायति ? से जहानामए, केई पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे २ दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ २ अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ २ उण्हे दलयति भूतिं २ सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ? हंता भवइ, अहे णं से तुंबे अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पि सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ? हंता भवइ, एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए

गइपरिणामेणं अकम्मस्स गई पन्नायति । कहन्नं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गई पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कलसिंबलियाइ वा मुग्गसिंबलियाइ वा माससिंबलियाइ वा सिंबलिसिंबलियाइ वा एरंडमिंजियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी फुडित्ताणं एगंतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्नं भंते ! निरंधणयाए अकम्मस्स गती ? गोयमा ! से जहानामए—धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं, गती पवत्तति, एवं खलु गोयमा ! ०। कहन्नं भंते ! पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए—कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वपओगेणं अकम्मस्स गति पण्णत्ता ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० ७ उ० १ सू० २६५

धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥

चउहिं ठाणेहिं जीवाय पोग्गला य णो संचातेंति बहिया लोगंता गमणताते, तं जहा—गतिअभावेणं णिरुवग्गहताते लुक्खताते लोगाणुभावेणं ।

स्थानांगस्थान ४ उ० ३ सू० ३३७

क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥६॥

खेत्तकालगईलिङ्गतित्थे चरित्ते ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा ।

नन्दिसूत्र केवलज्ञानाधिकार

नाणे खेत्त अन्तर अप्पाबहुयं ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति श० २५ उ० ६ सू० ७५१

सिद्धाणोगाहणा संख्या ।

उत्तराध्ययन अध्ययन ३६ गाथा ५३

इति श्री-जैनमुनि-उपाध्याय-श्रीमदात्माराम-महाराज-
संगृहीते तत्त्वार्थसूत्रजैनागमसमन्वये
दशमोऽध्यायः समाप्तः ।

गुरुप्पसत्थी

——:०*:०——

नायसुओ वद्धमाणो नायसुओ महामुणी ।
लोगे तित्थयरो आसी अपच्छिमो सिवंकरो ॥१॥

सतित्थे ठविओ तेण पढमो अणुसासगो ।
सुहम्मो गणहरो नाम तेअंसी समणाहिओ ॥२॥

तत्तो पवट्टिओ गच्छो सोहम्मो नाम विस्सुओ ।
परंपराए तत्थासी मुणी चामरसिंघओ ॥३॥

तस्स संतस्स दंतस्स मोतीरामाभिहो मुणी ।
होत्थ सीसो महापन्नो गणिपयविभूसिओ ॥४॥

तस्स पट्टे महाथेरो गणावच्छेअगो गुणी ।
गणपतिसन्निओ साहू सामगणगुणसोहिओ ॥५॥

तस्स सीसो गुरुभत्तो सो जयरामदासओ ।
गणावच्छेअगो अत्थि समो मुत्तो व्व सासणे ॥६॥

तस्स सीसो सब्बसंघो पवट्टगपयंकिओ।
सालिग्गामो महाभिक्खू पावयणी धुरंधरो ॥७॥
तस्संतेवासिणा भिक्खुअप्पारामेण निम्मिओ।
उवज्झायपयंकेणं नत्तत्थस्स समन्नओ ॥८॥
तत्तत्थमूलसुत्तस्स जं बीअं उवलब्भइ।
जिणागमेसु तं सव्वं संखेवेणेत्थ दंसिअं ॥९॥
इगुणवीसानवइ विक्कमवासेसु निम्मिओ एस।
दिल्लीनामयनयरे मुक्ख सन्थस्स य समन्नयो ॥१०॥

परिशिष्ट नं० १

तदिन्द्रियानिन्द्रियानिमित्तम् ॥१४॥

तत्र 'नोइंदियअत्थावग्गहो' त्ति नोइन्द्रियं मनः, तच्च द्विधा द्रव्यरूपं भावरूपं च, तत्र मनःपर्याप्तिनाम-कर्मोदयतो यत् मनःप्रायोग्यवर्ग्गणादलिकमादाय मनस्त्वेन परिणमितं तद्द्रव्यरूपं मनः, तथा चाह चूर्णिकृत्—"मणपज्जत्तिनामकम्मोदयओ तज्जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणत्तेण परिणामिया दव्वा दव्व-मणो भगणइ।" तथा द्रव्यमनोऽवष्टम्भेन जीवस्य यो मननपरिणामः स भावमनः, तथा चाह चूर्णि-कार एव—"जीवो पुण मणणपरिणामकिरियापन्नो

भावमनो, किं भणियं होइ ?—मणदव्वालंबणो जीवस्स मणणवावारो भावमणो भण्णइ" तत्रेह भावमनसा प्रयोजनं, तद्ग्रहणे ह्यवश्यं द्रव्यमनसोऽपि ग्रहणं भवति, द्रव्यमनोऽन्तरेण भावमनसोऽसम्भवात्, भावमनो विनापि च द्रव्यमनो भवति, यथा भवस्थकेवलिनः, तत उच्यते—भावमनसेह प्रयोजनं, तत्र नोइन्द्रियेण—भावमनसाऽर्थावग्रहो द्रव्येन्द्रियव्यापारनिरपेक्षो घटाद्यर्थस्वरूपपरिभावनाभिमुखः प्रथममेकसामयिको रूपाद्यर्थाकारादिविशेषचिन्ताविकलोऽनिर्देश्यसामान्यमात्रचिन्तात्मको बोधो नोइन्द्रियार्थावग्रहः।

नन्दिसूत्र वृत्ति मतिज्ञान वर्णन

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥२०॥

अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सयं च आवस्सयवइरित्तं च। से किं तं आवस्सयं? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामाइयं चउवीसत्थवो वंदणयं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणं, सेत्तं आवस्सयं। से किं तं आवस्सय-वइरित्तं? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा कालिअं च उक्कालिअं च! से किं तं उक्का-लिअं? उक्कालिअं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेआलियं कप्पिआकप्पिअं चुल्लकप्पसुअं महा-कप्पसुअं उववाइअं रायपसेणिअं जीवाभिगमो पण्णवणा महापण्णवणा पमायप्पमायं नंदी अणु-ओगदाराइं देविंदत्थओ तंदुलवेआलिअं चंदाविज्झयं सूरपण्णत्ति पोरिसिमंडलं मंडलपवेसो विज्जाचरणविणिच्छओ गणिविज्जा झाणविभत्ती मरणविभत्ती आयविसोही वीयरागसुअं संलेहणा-सुअं विहारकप्पो चरणविही आउरपच्चक्खाणं महा-

पच्चक्खाणं एवमाइ, से तं उक्कालिअं । से किं तं कालिअं ? कालिअं अणेगविहं पराणत्तं, तं जहा--उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो ववहारो निसीहं महानिसीहं इसिभासिआइं जंबूदीवपन्नती दीवसागरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती खुड्डिआ विमाणपविभत्ती महल्लिआ विमाणविभत्ती अंगचूलिआ वग्गचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरिआवणिआओ निरयावलिआओ कप्पिआओ कप्पवडिंसिआओ पुप्फिआओ पुप्फचूलिआओ वण्हीदसाओ, एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं मज्झिमगाणं जिणवराणं चोद्दसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स, अहवा जस्स जत्तिआ सीसा

उप्पत्तिआए वेणइआए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धिए उववेआ तस्स तत्तिआइं पइरणगसहस्साइं, पत्तेअबुद्धावि तत्तिआ चेव, सेत्तं कालिअं, सेत्तं आवस्सयवइरित्तं, से तं अणंगपविट्ठं ।

नन्दी सूत्र ४४

संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥

जीवा णं भंते ! किं सराणी असराणी नोसराणी-नोअसराणी ? गोयमा ! जीवा सराणीवि असराणीवि नोसराणीनोअसराणीवि । नेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! नेरइया सराणीवि असराणीवि नो नोसराणी-नोअसराणी, एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! नो सराणी असराणी, नो नोसराणी नोअसराणी । एवं बेइंदि-यतेइंदियचउरिंदियावि । मणुसा जहा जीवा,

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वाणमंतरा य जहा नेरइया. जोतिसियवेमाणिया सण्णी नो असण्णी नो नोसण्णीनोअसण्णी । सिद्धाणंपुच्छा ? गोयमा ! नो सण्णी नो असण्णी नोसण्णीनोअसण्णी । नेरइयतिरियमणुया य वणयरगसुरा इ सण्णीऽसण्णी य । विगलिंदिया असण्णी जोतिसवेमाणिया सण्णी । पण्णवणाए सण्णीपयं समत्तं ।

प्रज्ञापना ३१ संज्ञापद सूत्र ३१५

परिशिष्ट नं० १ (शेषभाग)

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ १७६ अ० ८ सूत्र २४ के साथ सम्बन्ध रखता है

कतिणं भंते कम्म पगडीओ पराणत्ताओ, गोयमा! अट्ठ कम्म पगडिओ पराणत्ताओ जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। नेरइयाणं, भंते? कइ कम्म पगडीओ पराणत्ताओ गोयमा-अट्ठ एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्म पगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं नाणावरणिज्जस्स णं भंते कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पराणत्ता गोयमा अणंता अविभागपलिच्छेदा पराणत्ता नेरइयाणं भंते नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केविनया अविभाग पलिच्छेदा पराणत्ता गोयमा अणंता अविभागपलिच्छेदा पराणत्ता एवं सव्व जीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा गोयमा

अणंता अविभागपलिच्छेदा पराणत्ता। एवं जहा नाणा वरणिज्जस्स अविभाग पलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्हवि कम्म पगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणि- याणं अंतराइयस्स एगमेगस्स णं भंते जीवस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभाग पलिच्छेदेहिं आवेढिए परिवे- ढिए सिया गोयमा सिए आवेढिय परिवेढिए सिय नो आवेढिए परिवेढिए जइ आवेढिय परिवेढिए नियमा अणंतेहिं एगमेगस्सणं भंते नेरइयस्स एग- मेगे जीवपएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइ- एहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिए परिवेढिते गोयमा नियमा अणंतेहिं जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स नवरं मणूसस्स जहा जीवस्स ! एग मेगस्स णं ! भंते जीवस्स ! एगमेगे ! जीवपएसे ! दरिसणावरणिज्जिस्स ! कम्मस्स ! केवतिएहिं ! एवं ! जहेव ! नाणावरणिज्जस्स ! तहेव दंडगो !

भाणियव्वो ! जाव ! वेमाणियस्स एवं ! जाव ! अंतराइयस्स ! भाणियव्वं नवरं वेयणिज्जस्स ! आउयस्स ! णामस्स गोयस्स ! एएसिं ! चउण्ह-वि ! कम्माणं मणुसस्स जहा ! नेरइयस्स ! तहा ! भाणियव्वं ! सेसंतं ! चेव ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ८ उद्देश १० सू० ३५६

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ २०० अध्याय ६ सूत्र ४७ के साथ सम्बन्ध रखता है ।

१ पराणवरण २ वेद ३ रागे ४ कप्प ५ चरित्त ६ पडिसेवणा ७ णाणे ८ तित्थे ६ लिंग १० सरीरे ११ खेत्ते १२ काल १३ गइ १४ संजम १५ निगासे ॥१॥ १६ जोगु १७ वयोग १८ कसाए १६ लेसा २० परिणाम २१ बंध २२ वेदेय २३ कम्मोदीरण २४ उवसंपजहण २५ सन्नाय २६ आहारे ॥२॥ २७ भव २८ आगरिसे २६ कालं ३० आहारे ३१ समुग्घाय

३२ खेत्त ३३ फुसणाय ३४ भावे ३५ परिणामे ३६ विय अप्पाबहुअं (यं) ३७ नियंठाणं ॥३॥

निम्नलिखित पाठ पृष्ठ ५६ तृतीयोऽध्याय प्रथम सूत्र के साथ सम्बन्ध रखता है।

अहोलोगेणं सत्त पुढवीओ पएणत्ताओ। सत्त-घणोदहीओ पएणत्ताओ सत्त घणवायाओ प०। सत्त तणुवाया प०। सत्त उवासंतरा। प० एए सुणं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया। एएसुणं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घण वाया पइट्ठिया, सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदही पइट्ठिया, एएसुणं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलग पिहुल संठाण संठियाओ सत्त पुढवीओ पएणत्ताओ तं-जहा पढमा जाव सत्तमा। एयासिणं सत्तएहं पुढ-वीणं सत्तणाम धेज्जा पएणत्ता तं जहा घम्मा वंसा सेला अंजणा रिट्ठा मघा माघवई। एयासिणं सत्तएहं पुढवीणं सत्त गोत्ता पएणत्ता तं जहा रयणप्पभा

सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमा तमतमा ।

ठाणांग सूत्र, ठाणा ७

निम्नलिखित पाठ पहिला अध्याय पृष्ठ २८ की अंतिम पंक्तियों के साथ सम्बन्ध रखता है ।

अविसेसिआ मइ मइ नाणंच । मइ अन्नाणं च ॥ विसेसिआ सम्मदिट्ठिस्स मई । मइ नाणं । मिच्छादिट्ठिस्स । मइ मइ अन्नाणं अविसेसिअं सुयं सुयनाणं च सुय अन्नाणं च विसेसिअं सुयं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुअनाणं मिच्छादिट्ठिस्स सुयं सुय अन्नाणं ॥

नन्दिसूत्र सूत्र २५ ॥

निम्नलिखित पाठ अध्याय २ सूत्र ५३ पृ० ५७ से सम्बन्ध रखता है ।

नेरइयाणं भंते ! कइया भागावसेसाउया परभविआउयं पकरेंति ? गोयमा ! नियमा छम्मासा-

वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? एवं असुर-कुमारावि जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! कइया भागा वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पराणत्ता ? तं जहा सोवक्कम्माउयाय निरुवक्कम्माउयाय, तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागा वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमा उया तेणं सियं तिभाग वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागावसेसाउय परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागा-वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, आउतेउवाउ वणस्सइ काइयाणं बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणवि एवं चेव ॥

पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! कइभागा वसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, ? गोयमा ! पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पराणत्ता तं जहा

संखिज्ज वासाउयाय असंखिज्जवासाउयाय ॥ तत्थणं जेते असंखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति तत्थणं जेते संखिज्ज वासाउयते दुविहा पण्णत्ता तं जहा सोवक्कमाउआय निरुवक्कमाउआय तत्थणं जेते निरुवक्कमाउअयाय ते नियमा तिभागवसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सियति भागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागासियतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ॥ एवं मणुस्साचि वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरया ॥

पन्नवणा श्वासोश्वास पद ६ सूत्र २४ ॥

तओ अहाउयं पालेंति तं जहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेव वासुदेवा ॥

ठाणांग ३ उ० १ सू० ३४

जीवाणं भंते ! किं सोवक्कमाउया णिरुवक्कमाउया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउयावि णिरुवक्कमाउयावि ॥१॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! णेरइया णो सोवक्कमाउया, णिरुवक्कमाउयावि । एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवी काइया जहा जीवा । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर जोइस वेमाणिया जहा णेरइया ॥२॥

भगवती सूत्र शतक २० उ० १०

परिशिष्ट नं० २

त० अ० ६ सूत्र ७ से इस पाठ का संबंध है।

जीवेणं भंते ! अधिगरणी अधिगरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिगरणी वि अधिगरणंपि। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवे अधिगरणीवि अधिगरणंपि ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि। णेरइएणं भंते ! किं अधिगरणी अधिगरणं ? गोयमा ! अधिगरणीवि अधिगरणंपि ! एवं जहेव जीवे तहेव णेरइएवि। एवं णिरंतरं जाव वेमाणिए। जीवेणं भंते ! किं साहिगरणी णिरहिगरणी ? गोयमा ! साहिगरणी णो णिरहिगरणी। से केणट्ठेणं पुच्छा ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव णो णिरहिगरणी। एवं जाव वेमाणिए ! जीवेणं भंते ? किं

आयाहिगरणी पराहिगरणी तदुभयाहिगरणी ? गोयमा ! आयाहिगरणी वि पराहिगरणी वि तदुभया हिगरणीवि ! से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव तदुभयाहिगरणीवि । गोयमा ! अविरतिं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिगरणीवि । एवं जाव वेमाणिए । जीवाणं भंते । अधिगरणे किं आयप्पओगणिव्वत्तिए परप्पओगणिव्वत्तिए तदुभयप्पओगणिव्वत्तिए ? गोयमा ! आयप्पओगणिव्वत्तिए वि परप्पओगणि व्वत्तिए वि तदुभयप्पओगणि व्वत्तिए वि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अविरतिं पडुच्च ! से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पओगणिव्वत्तिए वि एवं जाव वेमाणियाणं । कइणं भंते ! सरीरगा पराणत्ता ? गोयमा । पंच सरीरगा पराणत्ता—तं जहा ओरालिए जाव कम्मए । कइणं भंते ! इंदिया पराणत्ता ? गोयमा पंच इंदिया पराणत्ता—तं जहा सोइंदिय जाव

फासिंदिए। कइणं भंते। जोए पराणत्ते? गोयमा! तिविहे जोए पराणत्ते—तं जहा मणजोए वयजोए कायजोए। जीवेणं भंते! ओरालियसरीरं णिव्वत्तेमाणे किं-अधिगरणी अधिगरणं? गोयमा! अधिगरणी अधिगरणंपि। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ अधिगरणी वि अधिगरणंपि? गोयमा! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि। पुढवी काइएणं भंते! ओरलियसरीरं णिव्वत्तेमाणे किं अधिगरणी अधिगरणं? एवं चेव। एवं जाव मणुस्से। एवं वेउव्वियसरीरं पि णवरं जस्स अत्थि। जीवेणं भंते! आहारगसरीरं णिव्वत्तेमाणे किं अधिगरणी पुच्छा? गोयमा! अधिगरणीवि अधिगरणंपि। से केणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि? गोयमा! पमादं पडुच्च! से तेणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि। एवं मणुस्सेवि। तेया सरीरं जहा ओरालियं। णवरं सव्व जीवाणं भाणियव्वं। एवं

कम्मगसरीरंवि । "जीवेणं भंते" सोइंदियं णि
व्वत्तेमाणे किं—अधिगरणी अधिगरणं ? एवं
जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइंदियंपि भाणि
यव्वं ! णवरं जस्स अत्थि सोइंदियं । एवं चक्खिंदि-
दिय—घाणंदिय-जिब्भिंदिय—फासिंदिया णवि
नवरं जाणियव्वं जस्स जं अत्थि । जीवेणं भंते
मणजोगं णिव्वत्तेमाणे किं अधिगरणी अधि-
गरणं ? एवं जहेव सोइंदिय, तहेव णिरवसेसं.
वइजोगो एवं चेव । णवरं एगिंदियवज्जाणं । एवं
कायजोगो वि णवरं सव्वजीवाणं । जाव वेमा-
णिए । सेवं भंते भंतेत्ति ॥

व्याख्याप्रज्ञप्ति, शतक १६ उद्देश्य १

नि० अ० ६ सूत्र ६ मे इस पाठ का सम्बन्ध है ।

जेणं णिगंथो वा जाव पडिग्गहेत्ता गुणुप्पायण
हेऊ अण्णदव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहरेइ
एस णं गोयमा ! संजोयणा दोसदुट्ठे पाणभोयणे

एएणं गोयमा ! सइंगालस्स सधूमस्स संजोयणा दोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पगणत्ते ! अह भंते ! वीइंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणा दोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पगणत्ते ! गोयमा ! जेणं णिग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता असमुच्छिए जाव आहारेइ ! एसणं गोयमा ! वीइंगाले पाणभोयणे ! जेणं निग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता नो महया अप्पत्तियं जाव आहारेइ, एसणं गोयमा ! वीयधूमे पाणभायणे जेणं निग्गंथे वा जाव पडिग्गहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारमाहारेइ एसणं गोयमा ! संजोयण दोस विप्पमुक्के पाणभोयणे एसणं गोयमा वीइंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोस विप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पगणत्ते ॥

(व्याख्याप्रज्ञप्ति शतक ७ उद्देश्य १)

न पिता अहमेव लुप्पए लुप्पंति लोगंसि

पाणिणो एवं सहि एहि पासए अनिहे से पुट्ठ
हियासए ॥

—सूयग० अ० २ उ० १ गा० १३

त० सूत्र अ० ४ सूत्र ११ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पिसायभूया जक्खा य रक्खसा किन्नरा किं पुरिसा।
महोरगा य गंधव्वा, अट्ठ विहा वाणमंतरा ॥

उत्तराध्ययन, अध्य० ३६ । २०६

त० अ० ६ सू० ६ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

संजोयणाहिगरण किरिया य निव्वतणाहिगरण
किरिया य ।

—व्याख्या० प्र० शतक ३ उ० २

ओहोवहोवग्गहियं भंडगं दुविहं मुणी ।
गिण्हंतो निक्खिवंतो वा, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥

—उत्तराध्ययन अ० २४ सू० १३

संरम्भ समारम्भे, आरंभे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२१॥

संरम्भ—समारम्भे, आरंभे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२३॥
संरम्भ—समारम्भे, आरंभे य तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तेज्ज जयं जई ॥२५॥

—उत्तराध्ययन अध्य० २५

तत्त्वार्थसूत्र अ० ७ सूत्र १४, १५ से इन पाठों का सम्बन्ध है

बितियं च अलिय वयणं।

—प्रश्न व्या० द्वितीय अधर्मद्वार

तइयं च अदत्ता दाणं।

—प्रश्न व्या० तृतीय अधर्मद्वार

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ७ सूत्र १४-१५-१६ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

तस्स य णामाणि गोएणाणि होंति तीसं तं जहा—अलियं १ सढं २ अणज्जं ३ मायामोसो ४ असंतकं ५ कूड कवडमवत्थुगं च ६ निरत्थयम-वत्थयं च ७ विद्देस गरहणिज्जं ८ अणुज्जुकं ९

कक्कणाय १० वंचणाय ११ मिच्छा पच्छा कडं च १२ सातीउ १३ उच्छुन्नं १४ उक्कूलं च १५ अट्टं १६ अब्भक्खाणं च १७ किब्बिसं १८ वलयं १९ गहणं च २० मम्मणं च २१ नूमं २२ नियटी २३ अप्पच्च ओ २४ असमओ २५ असच्च संधत्तणं २६ विवक्खो २७ अवहीयं २८ उवहि असुद्धं २९ अवलोवोत्ति ३० अवियतस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वइ जोगस्स अणेगाइं ॥ प्रश्न व्याकरण सूत्र अ० २ सू० ६ ।

तस्स य णामाणि गोन्नाणि होंति तीसं तं जहा चोरिक्कं १ परहडं २ अदत्तं ३ कूरि कडं ४ पर लाभो ५ असंजमो ६ परधणंमि गेही ७ लोलिक्कं ८ तक्करत्तणंति य ९ अवहारो १० हत्थलहुत्तणं ११ पावकम्मकरणं १२ तेणिक्कं १३ हरणविप्पणासो १४ आदियणा १५ लुंपणा धणाणं १६ अप्पच्चयो १७ अवीलो १८ अक्खेवो १९ खेवो २०

विक्खेवो २१ कूडया २२ कुलमसी २३ य कंखा २४ लालप्पणपत्थाण य २५ आससणाय वसणं २६ इच्छामुच्छा य २७ तण्हागेहि २८ नियडिकम्मं २९ अपरच्छंति विय ३० तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं अदिन्नादाणस्स पाव कलिकलुसकम्मबहुलस्स अणेगाइं ॥ प्रश्न० अ० ३ सू० १० ॥ तस्स य णामाणि गोन्नाणि इमाणि होंति तीसं तं जहा अबंभं १ मेहुणं २ चरंतं ३ संसग्गि ४ सेवणाधिकारो ५ संकप्पो ६ बाहणा पदाणं ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसंखेवो १० अणिग्गहो ११ वुग्गहो १२ विघाओ १३ विभंगो १४ विब्भमो १५ अधम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतित्ती १८ रती १९ रागचिंता २० कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्सं २३ गुज्झं २४ बहुमाणो २५ बंभचेरविग्घो २६ वावत्ति २७ विराहणा २८ पसंगो २९ कामगुणो ३० त्ति विय तस्स एयाणि एवमादीणि नाम

घेज्जाणि होंति तीसं ।

—प्रश्न व्याकरण सूत्र अ० ४ सू० १४

त० अ० ३ सू० २७–२८ से इस पाठ का सम्बन्ध है

कइणं भंते । कम्म भूमीओ पएणत्ताओ ? गोयमा ! पएणरस कम्मभूमिओ पएणत्ताओ, तं जहा—पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पंच महाविदेहाइं । कइणं भंते ! अकम्म भूमिओ पएणत्ताओ गोयमा ! तीसं अकम्म भूमिओ पएणत्ताओ ! तं जहा—पंच हेमवयाइं, पंच हेरणवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंचरम्मग वासाइं, पंच देवकुराइं, पंच उत्तरकुराइं । एयासु णं भंते ? तीसासु अकम्म भूमिसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा ? णो इणट्ठे समट्ठे । एएसु णं भंते ! पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु अत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा हंता अत्थि । एएसुणं पंचसु महाविदेहेसु णेवत्थि उस्सप्पिणीति वा ओसप्पि-

णीति वा अवट्ठिएणं तत्थ काले पराणत्ते समणा-उसो !

—व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र शतक २० उद्देश्य ८

त० अ०७ सूत्र १३ से इस पाठ का सम्बन्ध है—

जीवाणं भंते । किं आयारंभा, परारंभा, तदुभयारंभा, अणारंभा ? गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभावि, परारंभावि, तदुभयारंभावि, णो अणारंभा, अत्थे गइया जीवा णो आयारंभा, णो परारंभा, णो तदुभया रंभा, अणारंभा। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्च० ? अत्थेगइआ जीवा आयारंभावि, एवं पडिउच्चारेयव्वं । गोयमा ! जीवा दुविहा पराणत्ता तं जहा—संसार समावराणगाय, असंसार समा पराणगाय । तत्थणं जे ते असंसारसमावराणगाय तेणं सिद्धा। सिद्धा णं णो आयारंभा जाव अणारंभा। तत्थणं जे ते संसार समावराणगा ते दुविहा पराणत्ता तं जहा—संजयाय असंजयाय

तत्थणं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता तं जहा—पमत्त संजया य अपमत्तसंजयाय। तत्थणं जे ते अपमत्तसंजया तेणं णो आयारंभा, णो परारंभा जाव अणारंभा। तत्थणं जे ते पमत्तसंजया ते सुहं जोगं पडुच्च णो आयारंभा, णो परारंभा, जाव अणारंभा। असुहं जोग पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा। तत्थणं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ अत्थेगइया जीवा जाव अणारंभा।

ठा० अ० ६ सू० ५ से इस पाठ का सम्बन्ध है—

दो किरियाओ पन्नताओ तं जहा—जीव किरिया चेव अजीवकिरिया चेव! जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता तं जहा—सम्मत्तकिरिया चेव मिच्छत्त किरिया चेव २, अजीव किरिया दुविहा पन्नत्ता तं०—इरियवहिया चेव संपराइगा चेव ३,

दो किरियाओ पं० तं० काइया चेव अहिगरणिया चेव ४, काइया किरिया दुविहा पन्नत्ता तं० अणुवरय कायकिरिया चेव दुप्पउत्तकाय किरिया चेव ५, अहिकरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तं० संयोजणाधिकरणिया चेव निव्वत्तणाधिकरणिया चेव ६, दो किरिया ओ पं० तं० पाउसिया चेव पारियावणिया चेव ७, पाउसिया किरिया दुविहा पं० तं० जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया चेव ८, पारियावणिया किरिआ दुविहा पं० तं० सहत्थ पारियावणिया चेव परहत्थ पारियावणिया चेव ९, दो किरियाओ पं० तं० पाणातिवाय किरिया चेव अपच्चक्खाण किरिया चेव १०, पाणातिवाय किरिया दुविहा पं० तं० सहत्थ पाणातिवाय किरिया चेव परहत्थ पाणातिवाय किरिया चेव ११, अपच्चक्खाण किरिया दुविहा पं० तं० जीव अपच्चक्खाण

किरिया चेव अजीवअपच्चक्खाण किरियाचेव १२, दो किरियाओ पं० तं० आरंभिया चेव परिग्गहिया चेव १३, आरंभिया किरिया दुविहा पं० तं० जीव आरंभिया चेव अजीवआरंभिया चेव १४, एवं परिग्गहियावि १५, दो किरियाओ पं० तं० माया वत्तिआ चेव मिच्छादंसणवत्तिया चेव १६, मायावत्तिया किरिया दुविहा पं० तं० आय भाववंकणता चेव परभाववंकणता चेव १७, मिच्छा दंसणवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं० ऊणाइरित्त मिच्छादंसणवत्तिया चेव, तव्वइरित्तमिच्छा दंसण वत्तिया चेव १८, दो किरिया ओ पं० तं० दिट्ठिया चेव पुट्ठिया चेव १६, दिट्ठिया किरिया दुविहा पं० तं० जीवदिट्ठिया चेव अजीवदिट्ठिया चेव २०, एवं पुट्ठियावि २१, दो किरियाओ पं० तं० पाडुच्चिया चेव सामंतोवणीवाइया चेव २२, पाडुच्चिया किरिया दुविहा पं० तं० जीवपाडुच्चिया

चेव अजीवपाडुच्चिया चेव २३, एवं सामंतोवणि वाइयावि २४, दो किरियाओ पं० तं० साहत्थिया चेव णेसत्थिया चेव २५, साहत्थिया किरिया दुविहा पं० तं० जीवसाहत्थिया चेव अजीवसाहत्थिया चेव २६, एवं णेसत्थियावि २७, दो किरिया ओ पं० तं० आणवणिया चेव वेयारणिया चेव २८, जहेव णेसत्थियाओ २९-३०, दो किरिया ओ पं० तं० अणाभोगवत्तिया चेव अणवकंखवत्तिया चेव ३१, अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं० अणा उत्तआइयणता चेव अणाउत्तपमज्जणता चेव ३२, अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं० आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीर अणवकंखवत्तिया चेव ३३, दो किरियाओ पं० तं० पिज्जवत्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ३४, पेज्ज वत्तिया किरिया दुविहा पं० तं० मायावत्तिया चेव लोभवत्तिया चेव ३५, दोसवत्तिया किरिया

दुविहा पं० तं० कोहे चेव माणे चेव ३६ (सू० ६०)
स्थानांग सूत्र स्थान २ उद्देश्य १।

त० अ० १० सू० २-५ से इस पाठ का सम्बन्ध है

सव्वकामविरया, सव्वरागविरया, सव्वसंगातीता, सव्वसिणेहाइकंता, अकोहा, निक्कोहा, खीणकोहा, एवं माणमायालोहा अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता, उप्पिं लोयग्गपइट्ठाणा हवंति--औपपातिक सूत्र प्रश्न २१ ॥ सू० १३ ॥

त० अ० १० सू० १-२ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पिज्ज दोस मिच्छादंसणविजएणं भंते जीवे किं जणइ ? पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ। अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठविसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दंसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतरायं, एए तिन्नि वि कम्मं से जुगवं खवेइ। तओ

पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं विति मिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावं केवलवरनाण दंसणं समुप्पादेइ। जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ सुहफरिसं दुसमय-ठिइयं । तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं तइय समयेनिज्जिण्णं तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयालेय अकम्मंचावि भवइ। उत्तराध्ययन सू० अ० २६ सू० ७१ अह आउयं पालइत्ता अंतो मुहुत्त-द्धावसेसाए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ, वयजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ, आणपाणुनिरोहं करेइ, ईसिपंचरहस्स-क्खरुच्चारणट्ठाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवंखवेइ उत्तराध्ययन सू० अ० २६ प्र० ७२ तओ ओरालिय

तेय कम्माइं सव्वाहिं विप्पजहइणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अ फुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झई बुज्झइ जाव अंतं करेइ । उत्तराध्ययन अ० २६ प्र० ७३ ।

त० सू० अ० ७ सू० १० ।

दुख मेव वा एसोसो पाणवहस्स फल विवागो इहलोइयो पारलोइयो अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, नय अवेदयित्ता-अत्थिहु मोक्खोत्ति । प्रश्न व्याकरण सू० अ० १-२-३-४-५

एसोसो अलियवयणस्स फलविवागो........

एसोसो अदिण्णादाणस्स फलविवागो........

एसोसो अबंभस्स फलविवागो........

एसोसो परिग्गहस्स फलविवागो........

तत्वार्थसूत्र अ० ३ सू० ५ मे इस पाठ का सम्बन्ध है

पन्नरस परमाहम्मिया पगणत्ता—तं जहा-
अंबे १ अंबरिसि २ चेव सामे ३ सबलेत्ति आवरे ४
रुद्दो ५ वरुद्द ६ काले अ ७ महा कालेत्ति ८ आवरे
॥ १ ॥ असिपत्ते ९ धणु १० कुंभे ११ वालुए १२
वेयरणित्ति अ १३ खरसरे १४ महा घोसे १५
एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥ समवायंग सू० समवाय
१५ वां नरयवाला । व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ३ उद्देश ६ ।
आवश्यक सूत्र० श्रमण सूत्र० । ठाणांग सूत्र० स्थान ६ ।
उत्तराध्ययन सू० अ० ३१ । प्रश्न व्याकरण अ० १० ॥

तत्वार्थसूत्र अ० १ सूत्र १ मे इस पाठ का सम्बन्ध है ।

दंसण नाण-चरित्ते, तव विणए सच्च समिइ गुत्तीसु ।
जो किरिया भावरुइ, सो खलु किरिया रुई नाम ॥

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० २५ ।

तत्वार्थ सू० अ० ३ सू० २० मे इस पाठ का सम्बन्ध है

जंबुद्दीवेणं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण
लवणसमुद्दं समुप्पेंति-तं जहा-गंगा सिंधु रोहिआ

रोहिअंसा हरी हरीकंता सीआ सीओदा नरओ-कंता नारिकांता सुवएणकुला रूप्पकुला रत्ता रत्तवइ ॥

समवायाग सूत्र, समवाय १४ वाँ

तत्त्वार्थ सू० अ० ३ सू० १५ से इस पाठ का सम्बन्ध है

पउमद्दहपुंडरीयद्दहाय दस दस जोयणसयाइं आयामेणं पएणत्ता ॥

समवायाग सूत्र, सू० ११३ ।

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ३ सू० १८ मे इस पाठ का सम्बन्ध है ।

महापउममहापुंडरीयदहाणं दो दो जोयण सह-स्साइं आया मेणं पएणत्ता—समवायांग सूत्र-सू० ११५ । तिगिच्छि केसरी दहाणं चत्तारि चत्तारि जोयण सहस्साइं आयामेणं पएणत्ताइं ॥ समवायांग सूत्र० सू० ११७ ॥

तत्त्वार्थ सूत्र अ० ३ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है

तस्स उणं पउमद्दहस्स पुरत्थिमिल्लेणं तोर-

णेणं गंगा महा नई पवूढा समाणी पुरत्थाभिमुही पंच जोयण सयाइं पव्वएणं गंता गंगा वत्तण कूडे आवत्ता समाणी पंच ते वीसे जोयण सए तिण्णि अप्पगूण वीसइ भाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुह पवत्तएणं मुत्तावलिहार-संठिएणं साइरेग जोयण सइएणं पवाएणं पवडइ..................एवं सिधू एवि णेयव्वं जाव तस्स णं पउमद्दहस्स पच्चत्थिमिल्लेणं तोरणेणं सिंधू आवत्तण कूडे दाहिणाभि मुही सिंधुप्पवाय कुंडं सिंधुद्दीवो अट्ठो सो चेव ॥...........तस्सणं पउमद्द-हस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं रोहिअंसा महानई पवूढा समाणी दोण्णि छावत्तरे जोयण सए छच्च एगूण वीसइ भाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुह पवत्तिएणं मुत्तावलिहार संठि-एणं साइरेग जोअण सइएणं पवाएणं पवडइ ॥ जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र ४ वक्षस्कार सूत्र ७४ तस्सणं महा

पउमद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणं रोहिआ महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयण सए पंच य एगूण वीसइ भाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्व- एणंगंता महया घडमुहपवित्तिएणं मुत्ता वलिहार संठिएणं साइरेग दो जोयण सइएणं पवाएणं पवडइ ....तस्सणं महा पउमद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणे णं हरिकंता महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एगूण वीसइ भाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुह पव- त्तिएणं मुत्तावलिहार संठिएणं साइरेग दुजोयण सइएणं पवाएणं पवडइ ॥ जंबू द्वीप० ४ वक्षस्कार सू० ८०

तस्सणं तिगिंछिद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं हरि महाणई पवूढा समाणी सत्त जोअण सहस्साइं चत्तारि अ एकवीसे जो अणसए एगं च एगूण वीसइ भागं जो अणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घड मुह पवित्तिएणं जाव साइरेग चउ

जोअण सइएण पवाएणं पवडइ ॥............तस्सणं तिगिंछिद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओआ महाणई पवूढा समाणी सत्तजोअणसहस्साइं चत्तारि अ एगवीसे जोअणसए एगं च एगूण वीसइ भागं जोअणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता, महया घडमुहपवित्तिएणं जाव साइरेग चउजोअण सइएणं पवाएणं पवडइ..........जंबू द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र, ४ वक्षस्कार (सू० ८४) जंबूद्दीवे २ णीलवंते नामं वासहर पव्वए पएणत्ते. पाईण पडीणायए उदीण-दाहिण विच्छिएणे णिसह वत्तव्वया, णीलवंतस्स भाणियव्वा, णवरं जीवा दाहिणेणं, धणु उत्तरेणं, एत्थणं केसरिद्दहो, दाहिणेणं सीआ महाणई पवूढा...........अवसिट्टं तं चेवत्ति। एवं णारिकंताचि उत्तराभिमुही णेयव्वा। जंबूद्वी० ४ वक्षस्कार (सू० ११०) जंबूद्दीवे दीवे रुप्पीणामं वासहर पव्वए पएणत्ते। पाईणपडीणायए उदीण दाहिण

विच्छिएणे एवं जा चेव महाहिमवंतवत्तव्वया सा चेव रुप्पिस्सवि, णवरं दाहिणेणं जीवा, उत्तरेणं धणु, अवसेसं तं चेव। महापुण्डरीए दहे णरकं तारणदी दक्खिणेणं णेयव्वा जहा रोहिआ पुरत्थि-मेणं गच्छइ—रुप्पकूला उत्तरेणं णेयव्वा जहा हरिकंता पच्चत्थिमेणं अवसेसं तं चेवत्ति .... जंबूद्दीवे दीवे सिहरी णामं वासहर पव्वए पएणत्ते ? .... अवसिट्ठं तं चेव। पुण्डरीए दहे सुवएण कूला महाणई दाहिणेणं णेयव्वा जहा रोहिअंसा पुरत्थिमेणं गच्छइ, एवं जह चेव गंगा सिंधूओ तह चेव रत्ता रत्तावईओ णेयव्वाओ, पुरत्थिमेणं रत्ता पच्चत्थिमेणं रत्तवइ अवसिट्ठं तं चेव (अव-सेसं भाणियव्वंति), जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र, वक्षस्कार ४ सू० १११

त० अ० ४ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है।

कइविहेणं भंते ! वेउव्वियसरीरे प० ? गोयमा

दुविहे प० त० एगिंदिय वेउव्विय सरीरे, पंचिंदिय-वेउव्वियसरीरे अ एवं जाव सणं कुमारे आढत्तं, जाव अणुत्तराणं, भवधारणिज्जा, जाव तेसिं रयणी रयणी परिहायइ ॥ समवायांग सूत्र शरीर द्वार (सू० १५२)

तत्त्वार्थसूत्र अ० ३ सूत्र ६ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

कहिणं भंते ! जंबूद्दीवे ? के महालएणं भंते ! जंबूद्दीवे ? २ किं संठिए णं भंते ! जंबूद्दीवे ३ ? किमायार भावपडोयारेण भंते ! जंबूद्दीवे ४ पएणत्ते गोयमा ? अयएणं जंबूद्दीवे २ सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भंतराए १ सव्वखुड्डाए २ वट्टे तेल्लापूयसंठाण संठिए वट्टेरह चक्कवाल संठाण संठिए वट्टे पुक्खर कणिणया संठाण संठिए वट्टे पडिपुएणचन्द संठाण संठिए ४ एगं जोयण सय सहस्सं आयाम विक्खंभेणं तिणिण जोयण सयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दुणिण य सत्तावीसे जोयण सए तिणिण य कोसे

अट्ठावीसं च धणु सयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पराणत्ते ।

जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति वक्षस्कार १ सूत्र (सू० ३)

तत्त्वार्थसूत्र अ० ३ सू० २० से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

जंबू मंदर—उत्तर दाहिणेणं चुल्लहिमवंत सिहरीसु वास हरपव्वयेसु दो महद्दहा पं० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अराणमराणं णातिवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणा-हेणं तं०--पउमद्दहे चेव पुंडरीयद्दहे चेव ! तत्थणं दो देवयाओ महड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठि तीयाओ परिवसंति-तं०-सिरी चेव लच्छी चेव । एवं महाहिमवंत रूप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पं० तं० बहु सम० जाव तं० महा पउमद्दहे चेव महा पोंडरीयद्दहे चेव देवताओ हिरिच्चेव बुद्धिच्चेव एवं निसढ नीलवंतेसु तिगिछिद्दहे चेव केसरिद्दहे चेव देवताओ धिती चेव किति

च्चेव जंबू मंदर० दाहिणेणं महा हिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दहाओ दो महा णइओ पवहंति तं० रोहियच्चेव हरिकंता चेव । एवं निसढाओ वासहर पव्वताओ तिगिच्छिद्दहाओ दो म० तं० हरिच्चेव सीओअच्चेव जंबू मंदर०उत्तरेणं नीलवंताओ वासहर पव्वताओ केसरि दहाओ दो महानईओ पवहंति तं० सीता चेव नारिकंता चेव एवं रूप्पीओ वासहर पव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति तं० णरकंता चेव रुप्पकुला चेव जंबूमंदर दाहिणेणं भरहे वासो दो पवायद्दहा पं० तं० बहुसम तं० गंगप्पवातद्दहे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव एवं हिमवएवासे दो पवायद्दहा पं० तं०-बहु० तं० रोहियप्पवायद्दहे चेव रोहियंसपवातद्दहे चेव जंबूमंदर दाहिणेणं हरिवासे वासे दो पवाय दहा पं० बहु० सम० तं० हरिपवातद्दहे चेव हरि-

कंत पवातद्दहे चेव जंबू मंदर उत्तर दाहिणेणं महा विदेहवासे दो पवायद्दहा पं०बहु सम०जाव सीअप्प वातद्दहे चेव सीतोदप्पवायद्दहे चेव जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रम्मपवासे दो पवायद्दहा—पं०तं०बहु०जाव-नरकंतप्पवायद्दहे चेव णारीकंतप्पवायद्दहे चेव एवं हेरण्णवते वासे दो पवायद्दहा पं०तं०बहु०सुवण्ण कुलप्पवायद्दहे चेव रूप्पकूल प्पवायद्दहे चेव जंबूमंदर उत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा पं० बहु० जाव रत्तप्पवायद्दहे चेव रत्तावइ प्पवायद्दहे चेव जंबूमंदर दाहिणेणं भरहे वासे दो महानई-ओ पं० बहु० जाव गंगा चेव सिंधू चेव एवं जधा पवात द्दहा एवं णईओ भाणियव्वाओ जाव ए-रवए वासे दो महानईओ पं० बहु सम तुल्लाओ जाव रत्ता चेव रत्तवती चेव ॥ ठाणांग सूत्र, स्थान २ उ० ३ सू० ८८ ।

त० अ० ४ सूत्र ११ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

पिसाय भूय जक्ख रक्खस किंनर किंपुरिसमहोरग गंधव्वा ॥ प्रश्न व्याकरण अ० ५ सूत्र १६ ॥
अट्ठ विधा वाणमंतरा देवा पं० तं० पिसाया भूता जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा ॥ ठाणांग सूत्र स्थान ८ उद्देश ३ (सू० ६५४)
पिसायभूया जक्खा य रक्खसा किन्नराय किंपुरिसा महोरगा य गंधव्वा अट्ठविहा वाणमंतरिया—देविंद थ० गा० ६७।

त० अ० ८ सू० १ से इस पाठ का सम्बन्ध है

अज्झत्थहेउं नियस्स बंधो संसारहेउं च वयंति बंधो—उत्तराध्ययन सू० अ० १४ काव्य १६ ॥

त० अ० ५ सू० ४ से इस पाठ का सम्बन्ध है

कतिविहेणं भंते बंधे पएणत्ते ? गोयमा ! दुविहे बंधे पएणत्ते, तं जहा— इरियावहियबंधे य । सम्पराइय बंधेय ॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ८ उ० ८ ॥

तत्त्वार्थ अ० ६ सू० ३४ व ३५ से सम्बन्ध है

आर्तं रौद्रं भवेदत्र, मन्दं धर्म्यं तु मध्यमम् ।
षट् कर्म प्रतिमा-श्राद्ध-व्रत-पालनसंभवम् ॥ २५ ॥
अस्तित्वात् नो कषायाणामत्रार्तस्यैव मुख्यता ।
आज्ञाद्यालंबनोपेत--धर्मध्यानस्य गौणता ॥
--गुण स्थान क्रमारोहण

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ३६ से इस पाठ का सम्बन्ध है

से किं तं बंधणपच्चइए २ जण्णं परमाणु-पोग्गला दुपएसिया तिपएसिया जावदस पएसिया संखेज्ज पएसिया असंखेज्जपएसिया अणंत पए-सियाणं खंधाणं वेमाय निद्धयाए वेमाय लुक्ख-याए वेमाय निद्ध लुक्खयाए एवं बंधण पच्चइ-एणं बंधे समुप्पज्जइ जहण्णेणं एकंसमयं उक्को-सेणं असंखेज्जं कालं सेत्तं बंधण पच्चइए ॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति श० ८ उ० ६

त० सूत्र अ० ३ सू० १०-११ से इस पाठ का सम्बन्ध है

इहेव जंबूद्दीवे दीवे सत्त वासहर पव्वया पं०

तं० चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, निसढे, नील-वंते, रुप्पि, सिहरी, मंदरे।" जंबूद्वीवे दीवे सत्त वासा पं० तं० भरहे, हेमवंते, हरिवासे, महा विदेहे, रम्मए, एरएणवए, एरवए। समवायांग सूत्र समवाय ७॥

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ११ ततो अच्छेज्जा पं० तं० समयं, पदेसं, परमाणु १ एवमभेज्जा २ अडज्झा ३ अगिज्झा ४ अणद्धा ५ अमज्झा ६ अपएसा ७। ततो अविभागिमा पं० समते, पएसे, परमाणु। स्थानांग सूत्र स्थान ३ उद्देशा २ सू० (१६५)

तत्त्वा० अ० २ सू०२२ में इस पाठ का सम्बन्ध है—

इंदिय-परिवुड्ढि-कायव्वा।

—प्रज्ञापना, पद १५ उ०२

त० सूत्र अ० ५ सूत्र ३६ में इस पाठ का सम्बन्ध है

कालश्च अद्धा समए-प्रज्ञापन सूत्र पद १ (सू० ३)

त० सू० अ० ५ सूत्र २०-२१।

जीवेणं भंते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार परक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेई ति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! जीवेणं सउट्ठाणे जाव उवदंसेईति वत्तव्वंसिया से केणट्ठेणं जाव वत्तव्वंसिया जीवेणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, एवं सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणनाणपज्जवाणं केवल-नाणपज्जवाणं, मइअन्नाण पज्जवाणं, सुयअन्नाण-पज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाणं, चक्खुदंसणपज्ज-वाणं, अचक्खुदंसण पज्जवाणं, ओहिदंसण पज्जवाणं, केवलदंसणपज्जवाणं, उवओगं गच्छइ उवओग-लक्खणेणं जीवे से, एणट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयम ! जीवे सउट्ठाणे जाव वत्तव्वंसिया । व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक २ उद्देश्य ॥१०॥

त० सू० अ० ३ सू० ३६ से इस पाठ का सम्बन्ध है ।

तिरिक्खजोणियाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को-

सेणं तिन्नि पलिओवमाइं। जीवाभिगम सू० प्रतिपत्ति ३ उ० २ सू० २२२।

तत्वा० अ० ५ सू० १५ से इस पाठ का सम्बन्ध है।

दव्वओणं एगे जीवे सअंते, खेत्तओणं जीवे असंखेज्ज पएसिए, असंखेज्ज पएसोगाढे।

—व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक २ उ० १ सू० ९१

त० सू० अ० ३ सू० १

एगमेगाणं पुढवीहिं तिवलएहिं सव्वओस-मंता संपरिक्खित्ता तं० घणोदधि वलएणं घणवात वलएणं तणुवाय वलएणं। स्थानांग सू० स्थान ३ उ० ४ सू०

त० सू० अ० ५ सूत्र ८

केवतियाणं भंते! लोयागासपएसा पन्नत्ता? गोयमा! असंखेज्जा लोयागासपएसा पन्नत्ता। एगमेगस्सणं भंते! जीवस्स केवइया जीवपएसा पन्नत्ता? गोयमा! जावतियालोगागासपएसा

एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपएसापन्नत्ता ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति शतक ८ उद्देश्य १० सू० ३५८

त० सू० अ० २ सूत्र ११

जे इमे असन्निणो पाणा तं जहा-पुढविकाइया वणस्सइ काइया छट्ठावेगइया तसा पाणा जेसिं नो तक्काइवा सन्नाइवा पन्नाइवा मणाइवा वइवा ।

सूयगडांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कंध अ० ४ सूत्र ४

त० सू० अ० ४ सूत्र १३

अत्थं पव्वय एयं पव्वइन्दे पदाहिणावत्तं मंडलायर मेरुं अणु परियट्टंति ॥ २८ ॥

जीवाभिगम सू० तृतीय प्रतिपत्ति-मनुष्य क्षेत्र वर्णन ॥

त० सूत्र अ० ७ सूत्र ८

तत्थिमा पढमा भावणाः—सोतत्तेण जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ, मणुण्णामणुण्णेहिं-सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा णो मुज्झेज्जा णो अज्झोवज्जेज्जा णो विणिग्घायमाव-

ज्जेज्जा केवली बूया णिग्गंथेणं मणुण्णामणुण्णेहिं-सद्देहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे संति भेया संति विभंगा संति केवलि पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा (१०६४)

ण सक्का ण सोउं सद्दा सोयविसयमागता।
रागदोसाउ जे तत्थ, तं भिक्खू परिवज्जए (१०६५)

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेति० पढमा। (१०६६)

अहावरा दोच्चा भावणा, चक्खूओ जीवो मणण्णाण्णामणुणुइं रूवाइं पासइ मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा जावणो विणिग्घाय मावज्जेज्जा। केवली बूया मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे संति भेया संति विभंगा जाव भंसेज्जा (१०६७)

ण सक्का रूवमदट्ठुं चक्खुविसयमागयं।

राग दोसाउ जे तत्थ तं भिक्खू परिवज्जए (१०६८)

चक्खूओ जीवो मणुण्णा मणुण्णाइं रूवाइं पासति० दोच्चा भावणा (१०६६)

अहावरा तच्चा भावणा घाणतो जीवो मणुण्णा मणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा जाव णो विणि-ग्घायमावज्जेज्जा केवली बूया मणुण्णमणुण्णेहिं गंधेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय-मावज्जमाणे संति भेदा संति विभंगा जाव भंसेज्जा (१०७०)

णो सक्का गंधमग्घाउं णासाविसयमागयं ।
रागदोसाउ जे तत्थ तं भिक्खू परिवज्जए (१०७१)

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति० तच्चा भावणा (१०७२) अहावरा चउत्था भावणा जिब्भाओ जीवो मणुण्णा मणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति मणुण्णामणुण्णेहिं

रसेहिं णो रज्जेज्जा जावणो विणिग्घायमाव ज्जेज्जा केवली बूया णिग्गंथेणं मणुराणामणुरणेहिं रसेहिं सज्जमाणे जाव विणिघायमावज्जमाणे संति भेदा जाव भंसेज्जा (१०७३)

णो सक्कं रसमणासातुं जीहाविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ तंभिक्खू परिवज्जए (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुरणामणुरणाइं रसाइं अस्सा देति च उत्था भावणा (१०७५)

अहावरा पंचमा भावणा मणुरणामणुरणाइं फासाइं पडिसंवेदेति मणुरणामणुरणेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा णो गिज्झेज्जा णो मुज्झेज्जा णो अज्झोवज्जेज्जा णो विणिग्घायमाव-ज्झेजा केवली बूया णिग्गंथेणं मणुरणामणुरणेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घायमावज्जमाणे संति भेदा संति विभंगा संति केवली पराणत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा (१०७६)

णो सक्का फासं ण वेदेतुं फासं विसयमागयं
राग दोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए (१०७७)
फासश्रो जीवो मणुएणामणुएणाइं फासाइं पडिसं-
वेदेति० पंचमा भावणा (१०७८) एसा वयाव मह-
व्वते सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए
श्रहिट्ठिते श्राणाए आराहिये यावि भवति । पंचमं
भंते महव्वयं (१०७९) इच्चे तेसिं महव्वतेसिं पण-
वीसाहिं य भावणाहिं संपण्णे श्रणगारे श्रहासुयं
श्रहाकप्पं श्रहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता
पालित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहियावि
भवति (१०८०)

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थ सूत्र श्र० २ सूत्र ४२ के साथ सम्बन्ध रखता है ।

तेया सरीरं जहा ओरालियं णवरं ।
सव्व जीवाणं भाणियव्वं एवं कम्मग सरीरंपि ॥
व्या० श० १६ उ० १०

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थसू० अ० ६ सू० ११ वें से सम्बन्ध रखता है।

पाद्दोसियाणं भंते ! किरिया कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प० तं०-जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुभं मणं संपधारेति, सेत्तं पाद्दोसिया किरिया, पारियावणियाणं भंते ! किरिया कतिविहा प०? गोयमा ! तिविहा प०तं०-जेणंअप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा अस्सायं वेदणं उदीरेति सेत्तं पारियावणिया किरिया, पाणातिवाय किरियाणं भंते ! कतिविहा प० गोयमा ! तिविहा प० तं०--जेणं अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा जीवियाओ ववरोवेइ सेतं पाणाइवाय किरिया।

प्रज्ञापना सू० पद २२ सू० २७९

निम्नलिखित पाठ तत्त्वार्थ सू० अ० सू० १० से सम्बन्ध रखता है।

बहु दुक्खाहु जंतवो—

आचाराङ्ग सू० प्रथम श्रुतस्कन्ध अ० ६ उद्देश्य १ सू० २४३

अहो असुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ।

उत्तराध्ययन सू० अ० २१ गा० ६

निम्नलिखित पाठ—त० अ० १—सू० २ से सम्बन्ध रखता है ।

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ तवेण परिसुज्झई ॥

उत्त० अ० २८ गा० ३५

परिशिष्ट नं० ३

दिगम्बर श्वेताम्बराम्नायसूत्रपाठभेदः ।

प्रथमोऽध्यायः

सूत्राङ्काः	दिगम्बराम्नायी सूत्रपाठः	सूत्राङ्काः	श्वेताम्बराम्नायी सूत्रपाठः
१५	अवग्रहेहावायधारणाः	१५	अवग्रहेहापायधारणाः
×	× ×	२१	द्विविधोऽवधिः
२१	भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणाम्	२२	भवप्रत्ययो नारकदेवानाम
२२	क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्	२३	यथोक्तनिमित्त........
२३	ऋजुविपुलमती मनः पर्ययः	२४	... . *पर्यायः

* भाष्य के सूत्रों में सर्वत्र मनः पर्यय के बदले मनः पर्याय पाठ है ।

२५ विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः	२६ .... पर्याययोः
२८ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य	२६ .... पर्यायस्य
३३ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवम्भूता नयाः	३४ .... सूत्रशब्दा नयाः
× × ×	३५ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ

द्वितीयोऽध्यायः

५ ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च	५ ....दर्शनदानादिलब्धयः ....
७ जीवभव्याभव्यत्वानि च	७ भव्यत्वादीनि च
१३ पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः	१३ पृथिव्यब्वनस्पतयः स्थावराः

१४ द्वीन्द्रियादयस्त्रसा.	१४ तेजोवायूद्वीन्द्रियादयश्च त्रमा:
× × ×	१६ उपयोग: स्पर्शादिषु
२० स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्था:	२१ ....शब्दास्तेषामर्था:
२२ वनस्पत्यन्तानामेकम्	२३ वाय्वन्तानामेकम्
२६ एकसमयाऽविग्रहा	३० एकसमयोऽविग्रह:
३० एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारक:	३१ एकं द्वौ वानाहारक:
३१ सम्मूर्च्छनगर्भोपपादा जन्म	३२ सम्मूर्च्छनगर्भोपपाता जन्म
३३ जरायुजाण्डजपोतानां गर्भ:	३४ जराय्वण्डपोतजानां गर्भ:
३४ देवनारकाणामुपपाद:	३५ नारकदेवानामुपपात:
३७ परं परं सूक्ष्मम्	३८ तेषां परं परं सूक्ष्मम्
४० अप्रतीघाते	४१ अप्रतिघाते
४३ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्य:	४४ .... कस्याऽऽचतुर्भ्य:

४६ औपपादिकं वैक्रियिकम्	४७ वैक्रियमौपपातिकम
४८ तैजसमपि	× × ×
४६ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव	४६ .... चतुर्दश-पूर्वधरस्यैव
५२ शेषास्त्रिवेदाः	× × ×
५३ औपपादिकचरमोत्तमदेहाः संख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः	५२ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषा-संख्य....

तृतीयोऽध्यायः

१ रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः	१ ......सप्ताधोऽधः पृथुतराः
२ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपञ्चोनैकनरकशतसहस्रा-	२ तासु नरकाः

णि पञ्च चैव यथाक्रमम्		
३ नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः	२ नित्याशुभतरलेश्याः	...
७ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः	७ जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः	
१० भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि	१० तत्र भरत	....
१२ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः	×	×
१३ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः	×	×
१४ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषा-		

मुपरि	×	×
१५ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्ध-विष्कम्भो ह्रदः	×	×
१६ दशयोजनावगाहः	×	×
१७ तन्मध्ये योजनं पुष्करम्	×	×
१८ तद्द्विगुणद्विगुणाह्रदाः पुष्कराणि च	×	×
१९ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः	×	×
२० गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तो-	×	×

द्राः सरितस्तन्मध्यगाः	×	×
२१ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः	×	×
२२ शेषास्त्वपरगाः	×	×
२३ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृत्ता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः	×	×
२४ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट् चैकोनविंशतिभागा योजनस्य	×	×
२५ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः	×	×
२६ उत्तरा दक्षिणतुल्याः	×	×
२७ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्	×	×

२८ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः	×		×
२९ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः	×		×
३० तथोत्तराः	×		×
३१ विदेहेषु संख्येयकालाः	×		×
३२ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः	×		×
३८ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते	१७	परापरे	....
३९ तिर्यग्योनिजानाञ्च	१८ तिर्यग्योनीनाञ्च		

चतुर्थोऽध्यायः

२ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः	३ तृतीयः पीतलेश्यः
... .	७ पीतान्तलेश्याः

८ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवी-चाराः	९ ....प्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः
१२ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च	१३ ....सूर्याश्चन्द्रमसो........ प्रकीर्णतारकाश्च
१९ सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्र-महाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्ता-पराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च	२० सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-ब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारे .... सर्वार्थसिद्धे च
२२ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु	२३ .... लेश्या हि विशेषेषु
२४ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः	२५ .... लोकान्तिकाः
२५ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोय-	२६ ....

तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च	व्याबाधमरुतः (अरिष्टाश्च) ४
२८ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीन-मिताः	२९ स्थितिः
	३० भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम्
× ×	
× ×	३१ शेषाणां पादोने
× ×	३२ असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च
२९ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके	३३ सौधर्मादिषु यथाक्रमम्
	३४ सागरोपमे
	३५ अधिके च
३० सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त	३६ सप्त सानत्कुमारे
३१ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु	३७ विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि च

३३ अपरा पल्योपममधिकम्

३९ परा पल्योपममधिकम्
४० ज्योतिष्काणां च

४१ तदष्टभागोऽपरा

× ×

४२ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोप-
माणि सर्वेषाम्

३९ अपरा पल्योपममधिकं च
४० सागरोपमे
४१ अधिके च
४७ परा पल्योपमम्
४८ ज्योतिष्काणामधिकम्
४९ ग्रहाणामेकम्
५० नक्षत्राणामर्द्धम्
५१ तारकाणां चतुर्भाग:
५२ जघन्या त्वष्टभाग:
५३ चतुर्भाग: शेषाणाम्

× ×

पञ्चमोऽध्यायः

२ द्रव्याणि	२ द्रव्याणि जीवाश्च
३ जीवाश्च	× ×
८ असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम्	७ असङ्ख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मयोः
× ×	८ जीवस्य च
१६ प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत्	१६ .... विसर्गाभ्यां
२६ भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते	२६ संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते
२६ सद्द्रव्यलक्षणम्	× ×
३७ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च	३६ बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ
३६ कालश्च	३८ कालश्चेत्येके
× ×	४२ अनादिरादिमांश्च
× ×	४३ रूपिष्वादिमान्
× ×	४४ योगोपयोगौ जीवेषु

३ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य	३ शुभः पुण्यस्य
	४ अशुभः पापस्य
५ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसंख्या पूर्वस्य भेदाः	६ अव्रतकषायेन्द्रियक्रियाः × ×
६ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः	७ × भाववीर्याधिकरणविशेषे—
१७ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य	१८ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवं च मानुषस्य
१८ स्वभावमार्दवं च	× ×
२१ सम्यक्त्वं च	× ×
२३ तद्विपरीतं शुभस्य	२२ विपरीतं शुभस्य
२४ दर्शनविशुद्धिविनयसम्पन्नता शी-	....

लब्धतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोप-		ऽभीक्ष्णं....
योगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी	सङ्घसाधुसमाधिर्वैयावृत्यकरण	
साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदा-	....	....
चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यका-	....	....
परिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचन-	....	....
वत्सलत्वमितितीर्थकरत्वस्य	....	.... तीर्थकृत्यस्य

सप्तमोऽध्यायः

४ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमि-	×	×
त्यालोकितपानभोजनानि पञ्च		
५ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्याना-	×	×
न्यनुवीचिभाषणं च पञ्च		
६ शून्यागारविमोचितावासपरोपरो-	×	×
धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्म्माविसं-		

वादाः पञ्च		
७ स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्ग-	×	×
निरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टर-		
सस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पञ्च	×	×
८ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेष-		
वर्जनानि पञ्च		
९ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम्	४ हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शन	
१२ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम्	७ जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम्	
२८ परिविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीता	२३ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीता	
परिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकाम-	....	....
तीव्राभिनिवेशाः	....	....
३२ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्या-	२७ कन्दर्पकौकुच्य	....

षिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि	णोपभोगाधिकत्वानि
३४ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि	२६ .... संस्तारो .... नुपस्थापनानि
३७ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि	३२ .... निदानकारणानि

अष्टमोऽध्यायः

२ सकषायत्वाज्जीवः कर्म्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः	२ .... पुद्गलानादत्ते
× ×	३ स बन्धः
४ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः	५ .... मोहनीयायुष्कनाम

६ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवला-
नाम्

७ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा-
निद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचला-
स्त्यानगृद्धयश्च

६ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायाकषा-
यवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः
सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्याऽक-
षायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभ-
यजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अन-
न्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान
संज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमा-
नमायालोभाः

७ मत्यादिनाम्

८ ....
....
.... स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च

१० .... मोहनीयकषायनोकषाय....
.... द्विषोडशनव ....
तदुभयानि कषायनोकषायाव-
नन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्या-
नावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः
क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्य-
रतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसक-
वेदाः

१३ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम्	१४ दानादीनाम्
१६ विंशतिर्नामगोत्रयोः	१७ नामगोत्रयोर्विंशतिः
१७ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः	१८ .... युष्कस्य
१९ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता	२१ .... मुहूर्तम्
२४ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशा	२५ .... क्षेत्रावगाहस्थिताः ....
२५ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणिपुण्यम्	२६ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायु
२६ अतोऽन्यत्पापम्	× ×

नवमोऽध्यायः

६ उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्या-	६ उत्तमः क्षमा ....

रिग्रहः धर्मः	
१७ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकान्नविंशति	१७ .... विंशतेः
१८ सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्परायथाख्यातमिति चारित्रम्	१८ .... छेदोपस्थाप्य .... यथाख्यातानि चारित्रम्
२२ आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापना	२२ .... स्थापनानि
२७ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात्	२७ .... निरोधो ध्यानम्
× ×	२८ आमुहूर्तात्
३० आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे	३१ आर्तममनोज्ञानां

द्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः	....
३१ विपरीतं मनोज्ञस्य	३३ विपरीतं मनोज्ञानाम्
३६ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यम्	३७ .... धर्ममप्रमत्तसंयतस्य
× ×	३८ उपशान्तक्षीणकषाययोश्च
३७ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः	३९ शुक्ले चाद्ये
४० त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम्	४२ तत्त्र्येककाययोगायोगानाम्
४१ एकाश्रये सवितर्कविचारे पूर्वे	४३ .... सवितर्के पूर्वे

दशमोऽध्यायः

२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः	२ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां
× ×	३ कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः
३ औपशमिकादिभव्यत्वानां च	४ औपशमकादिभव्यत्वाभावाच्चा-

		न्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः	
४	अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन सिद्धत्वेभ्यः	×	×
६	पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदा-तथागतिपरिणामाच्च	६ .... परिणामाच्च तद्गतिः	....
७	आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगत-लेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशि-खावच्च	×	×
८	धर्मास्तिकायाभावात्	×	×

—*—

तत्त्वार्थसूत्र जैनागमसमन्वय
हिन्दी भाषानुवाद सहित

यह जो पुस्तक आपके हाथों में है इसका एक अलग संस्करण हिन्दी अनुवाद सहित भी छपा हुआ है। अनुवादक हैं—जैन संसार के धुरन्धर विद्वान्, साहित्यरत्न, जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज। भाषानुवाद बड़ा सरल और विस्तृत है। प्राकृत के साथ संस्कृत छाया भी दे दी गई है। टीका के सम्बन्ध में विशेष प्रशंसा की आवश्यकता नहीं। टीकाकार मुनिजी का नाम-मात्र ही पर्याप्त है। मूल्य २) डाकव्यय अलग छपाई बढ़िया बड़े मोटे टाइप में हुई है।